सेन्ट्रलाइट CENTRALITE

खंड / Vol. 48 - 2025 • अंक - 1 • जून / June 2025

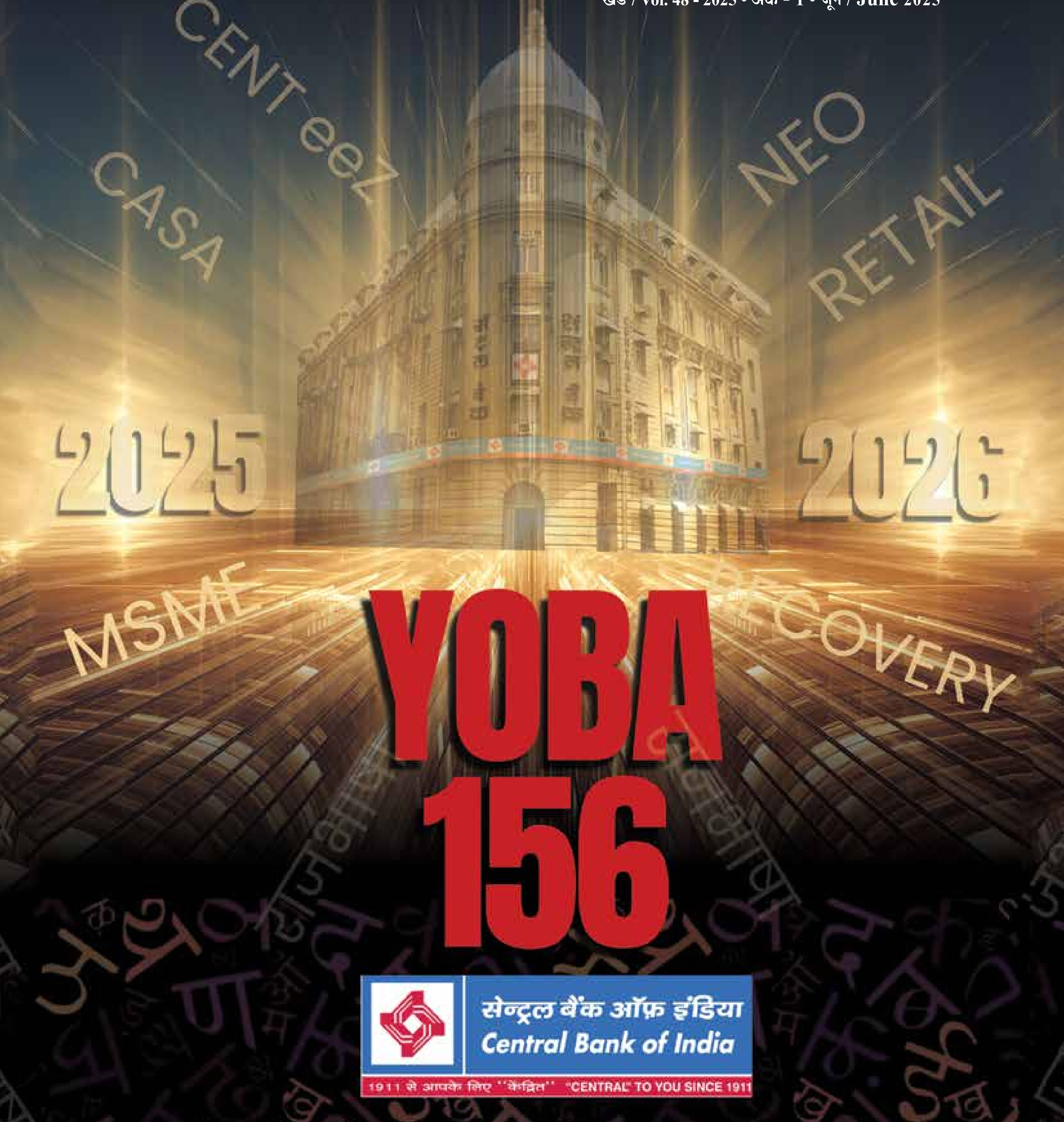

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए ''सेन्ट्रल'' "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया की गृह पत्रिका, खंड 48, अंक 1, जून 2025

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने ईज 7.0 सुधारों के तहत डेटा गुणवत्ता मान्यता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया. हमारे लिए यह एक गर्व का क्षण है जो डेटा उत्कृष्टता और नवाचार के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है.

केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई में योग दिवस का आयोजन

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही गृह-पत्रिका
A Quarterly House - Journal of Central Bank of India

प्रकाशन तिथि - 01.08.2025 • खंड / Vol. 48 - 2025 • अंक - 1 • जून / June 2025

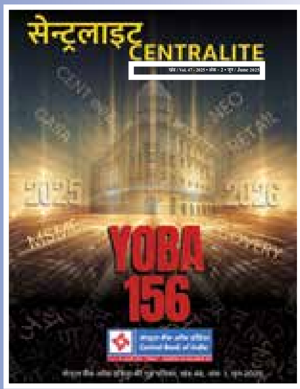

कवर पेज डिज़ाइन - श्री हेमंत कुमार, क्षे. का. मुजफ्फरपुर

संपादक
पॉपी शर्मा

संपादक मंडल
वास्ती वेंकटेश
डी.पी. खुराना
के.के. काला
हितेन्द्र धूमाल

संपादकीय सहायक
अमित कुमार झा
सुनील कुमार साव
संदीप यादव
शुभी ताम्रकर

Editor
Poppy Sharma

Editorial Board
Vasti Venktesh
D. P. Khurana
K. K. Kala
Hitendra Dhumal

Editorial Assistant
Amit Kumar Jha
Sunil Kumar Shaw
Sandeep Yadav
Shubhi Tamrakar

ई-मेल / E-mail
centralite1982@gmail.com

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं से बैंक का सहमत होना आवश्यक नहीं है.

Articles Published in this magazine does not necessarily contain views of the Bank.

विषय-सूची / CONTENTS

माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश 4-5

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री विवेक वाही का संदेश 6

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री एम. वी. मुरली कृष्णा का संदेश 7

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री महेंद्र दोहरे का संदेश 8

संपादकीय 9

YOBA-156: व्यवसाय उत्कर्ष की ओर एक सामूहिक यात्रा 10

स्वस्थ कार्यालयीन वातावरण संस्था के लिए उत्पादक है 12

बैंकों में लेखापरीक्षा का महत्व 16

वित्तीय समावेशन 18

The Nexus of Data, Biology, and Technology in Yuval Noah Harari's Thought........ 21

आत्मनिर्भर भारत में: युवाओं की भूमिका 24

कविता - गुरु 25

श्री करणी माता मंदिर, देशनोक, बीकानेर: चूहों का दिव्य धाम 26

बैंकिंग और वित्तीय क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: 2025 में परिवर्तन की नई लहर 29

बैंकिंग में धोखाधड़ी और उससे सुरक्षा 31

पदोन्नति 33

सेवानिवृत्ति 34

यात्रा-वृत्तांत: नवीनता तथा पुरातनता का संगम - ''वाराणसी (काशी/बनारस)'' 35

कासा अभियान : जोड़ो. बढ़ाओ , कमाओ 36

बैंकिंग क्षेत्र: अवसर और चुनौतियां 40

गणतन्त्र दिवस : 2050 43

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग से बदलती भारतीय बैंकिंग 44

Path Benders: The Mission, the Leader, and Altruism 50

बिहार की लोक-आस्था का महापर्व: छठ पूजा 53

Right to Information (RTI) Act: A Pillar of Transparency in the Banking Industry.. 56

कविता - बादल भी, बारिश, बारिश तुम बरसना, पिछले हफ्ते 58

डिज़ाइन, संपादन तथा प्रकाशन : सुश्री पॉपी शर्मा, सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, चन्दरमुखी, नरीमन पॉईंट, मुंबई - 400 001 के लिए तथा उनके द्वारा उचीथ ग्राफिक प्रिंटर्स प्राईवेट लिमिटेड. आइडियल इंडस्ट्रीयल इस्टेट, मथुरादास मिल्स कंपाऊंड, सेनापती बापट मार्ग, लोअर परेल, मुंबई - 400 013.

Designed, Edited and Published by Ms. Poppy Sharma for Central Bank of India, Chandermukhi, Narimanpoint, Mumbai - 400 001 Designed and Printed by him at Uchitha Graphic Printers Pvt. Ltd. 65, Ideal Industrial Estate, Mathuradas Mills Compound, Senapati Bapat Marg, Lower Parel, Mumbai - 400 013.

माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

30 जून, 2025 को समाप्त तिमाही हमारे बैंक के लिए उपलब्धियों से परिपूर्ण एक स्वर्णिम अध्याय रही है. यह तिमाही हमारी संगठित प्रतिबद्धता, उत्कृष्ट रणनीति, और सतत परिश्रम का प्रत्यक्ष परिणाम है.

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि बैंक का कुल व्यवसाय ₹7.04 लाख करोड़ के महत्वपूर्ण पड़ाव को पार कर गया है, जिसमें 10.84% की सशक्त वार्षिक वृद्धि दर्ज की गई है. इसी प्रकार कुल जमा में 11.41% और सकल अग्रिम में 9.97% की प्रभावशाली वृद्धि हमारे निरंतर प्रगतिशील दृष्टिकोण की पुष्टि करती है.

रिटेल, कृषि और एमएसएमई क्षेत्रों में 15.71% की उल्लेखनीय वृद्धि, हमारे बैंक की सामाजिक एवं आर्थिक प्रतिबद्धता को दर्शाती है. इस तिमाही में ₹1169 करोड़ का शुद्ध लाभ, 32.84% की वार्षिक वृद्धि के साथ, हमारी वित्तीय मजबूती को रेखांकित करता है. सकल एवं शुद्ध एनपीए में निरंतर सुधार और प्रावधान कवरेज अनुपात में वृद्धि हमारी विवेकपूर्ण ऋण नीति का प्रमाण है.

साथ ही, बैंक का पूंजी पर्याप्तता अनुपात बढ़कर 17.66% हो गया है, जिसमें से टियर-I अनुपात 15.48% है, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि के 15.68% की तुलना में 198 आधार अंकों का सराहनीय सुधार दर्शाता है. यह हमारे संतुलित परिसंपत्ति विस्तार और मजबूत पूंजी प्रबंधन की दिशा में एक महत्वपूर्ण संकेत है.

वित्तीय वर्ष 2025-26 में बैंक ने कुछ रणनीतिक मुख्य फोकस क्षेत्र निर्धारित किए हैं, जिन पर आप सभी के समन्वित प्रयास अपेक्षित हैं:

- **YOBA 156** के अंतर्गत प्रत्येक शाखा द्वारा औसतन ₹12 करोड़ की जमा वृद्धि सुनिश्चित करना, जिसमें ₹1 करोड़ चालू जमा, ₹5 करोड़ बचत जमा एवं ₹6 करोड़ सावधि जमा शामिल हैं.
- **वेतन व्यय की पूर्ति हेतु आय में वृद्धि** - जो गुणवत्तापूर्ण ऋण वितरण, तकनीकी रूप से बट्टे खाते में डाले गए खातों की वसूली, और गैर-ब्याज आय से ही संभव है.
- **उत्कृष्ट आस्ति गुणवत्ता** बनाए रखते हुए आय और लाभप्रदता में निरंतरता.
- **ग्राहक सेवा में उत्कृष्टता,** जिससे ग्राहक शिकायतों का पूर्ण समाधान हो सके और संसाधन संग्रहण एवं व्यवसाय वृद्धि में गतिशीलता आए.

''यह संदेश मेरे लिए व्यक्तिगत रूप से अत्यंत विशेष है, चूंकि यह मेरी बैंकिंग सेवा-यात्रा की पूर्णता का अवसर है. सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया के साथ मेरा यह दीर्घकालिक जुड़ाव केवल एक व्यावसायिक दायित्व नहीं, अपितु एक आत्मिक अनुभव रहा है - जिसमें अनगिनत स्मृतियाँ, उल्लेखनीय उपलब्धियाँ और अनमोल शिक्षाएँ समाहित हैं. इस महान संस्था के सतत विकास और सामाजिक उत्तरदायित्व की यात्रा में सहभागी बनना मेरे जीवन का गौरव और सौभाग्य रहा है.

अब जब मैं यह उत्तरदायित्व सौंप रहा हूँ, तो यह दृढ़ विश्वास व्यक्त करता हूँ कि बैंक की बागडोर आप जैसे समर्पित, दूरदर्शी और मूल्यों-से-बंधे साथियों के हाथों में है - जो इसे और अधिक ऊँचाइयों तक अवश्य ले जाएँगे.

आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं.

(एम.वी. राव)
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

Message from the Managing Director & CEO

Dear Centralites,

The quarter ending on June 30, 2025, has been significant for our Bank in many respects. It reflects our collective efforts, resolute commitment, and exemplary performance.

It is a matter of great pride that the Bank has crossed the significant milestone of ₹7.04 lakh crore in total business, recording a strong annual growth of 10.84%. Similarly, the impressive growth of 11.41% in total deposits and 9.97% in gross advances reaffirms our continuously progressive outlook.

The remarkable 15.71% growth in the Retail, Agriculture, and MSME sectors reflects our Bank's deep social and economic commitment. A net profit of ₹1169 crore for the quarter, representing a 32.84% year-on-year increase, underscores our financial strength. Continuous improvement in gross and net NPAs and an enhanced Provision Coverage Ratio stand as testimony to our prudent lending practices.

Additionally, the Bank's Capital to Risk-Weighted Assets Ratio (CRAR) has improved to 17.66%, with Tier-I capital at 15.48%, representing a significant improvement of 198 basis points (bps) over 15.68% in the same period last year. This indicates our strong capital management and balanced asset growth.

The Bank has identified certain strategic key focus areas In FY 2025–26, which will require coordinated efforts from all of you.

- Deposit Mobilization of at least ₹12 crore per branch under YOBA 156, with specific targets of ₹1 crore growth in Current Deposits, ₹5 crore in Savings Bank Deposits, and ₹6 crore in Term Deposits.
- Ensuring that incremental income meets or exceeds salary expenses, through growth in good-quality advances, recovery in technically written-off accounts, and enhanced canvassing of non-interest income.
- Maintaining excellent asset quality to support sustained growth and profitability.
- Eliminating customer grievances by delivering the highest standard of customer service. This will not only enhance customer satisfaction but will also catalyse resource mobilization and business expansion.

``This message holds deep personal significance for me, as it marks the completion of my banking service journey. My long-standing association with Central Bank of India has been far more than a professional engagement — it has been a deeply enriching experience filled with countless memories, remarkable achievements, and invaluable lessons. Being a part of this great institution's journey of growth and nation-building has been both a privilege and a source of immense pride.

As I pass on this responsibility, I do so with absolute confidence that the future of the Bank rests in the capable hands of committed, visionary, and value-driven colleagues like you — who will undoubtedly carry it to even greater heights.

My best wishes to each one of you.

M. V. Rao
Managing Director & Chief Executive Officer

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री विवेक वाही जी का संदेश

Message from Shri Vivek Wahi, Executive Director

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

किसी भी संस्था की प्रगति का मार्ग उसके प्रत्येक स्टाफ सदस्य की समेकित ऊर्जा, स्पष्ट उद्देश्य और समर्पण से प्रशस्त होता है. 30 जून 2025 को समाप्त तिमाही में हमारे बैंक ने जिन महत्वपूर्ण उपलब्धियों को पार किया है, वे न केवल हमारी रणनीतिक दिशा की पुष्टि करते हैं, बल्कि इस संस्था की अंतर्निहित शक्ति और सुदृढ़ता को भी दर्शाते हैं.

₹7.04 लाख करोड़ का कुल व्यवसाय, ₹1169 करोड़ का शुद्ध लाभ, और रिटेल, एग्री एवं एमएसएमई क्षेत्रों में दहाई अंकों में वृद्धि - ये आँकड़े महज़ आर्थिक संकेतक नहीं हैं, बल्कि आपके परिश्रम, नवाचार और उत्तरदायित्व की प्रतिध्वनि हैं.

परंतु हमारे लिए विकास का तात्पर्य केवल आंकड़ों की उपलब्धि नहीं है, बल्कि एक समावेशी, उत्तरदायी और सतत संस्थागत संस्कृति का निर्माण है. आने वाले समय में हमें निम्नलिखित बिंदुओं पर विशेष ध्यानाकर्षण की आवश्यकता है:

- **डिजिटल परिवर्तन को व्यवहार में लाना:** केवल तकनीक अपनाना पर्याप्त नहीं, हमें ग्राहकों को उस तकनीक से जोड़ना और उनका अनुभव बेहतर बनाना होगा.
- **जोखिम-प्रबंधन में उत्कृष्टता:** आस्ति गुणवत्ता में सुधार एवं विवेकपूर्ण निर्णय ही हमारी दीर्घकालिक स्थिरता की नींव हैं.
- **सशक्त नेतृत्व विकास:** शाखा स्तर से लेकर प्रबंधकीय स्तर तक नेतृत्व कौशल का विकास हमें आत्मनिर्भर और निर्णायक बनाएगा.
- **सांस्कृतिक एवं सामाजिक प्रतिबद्धता:** बैंक केवल वित्तीय इकाई नहीं, समाज के उत्थान की प्रेरक शक्ति भी है - यह भावना हमारी कार्यशैली में प्रतिबिंबित होनी चाहिए.

इस अवसर पर मैं हमारे बैंक के प्रबुद्ध नेतृत्वकर्ता, **माननीय एमडी एवं सीईओ श्री एम. वी. राव जी** को विशेष रूप से स्मरण करना चाहूंगा, जो इस माह सेवानिवृत्त हो रहे हैं. श्री राव के गतिशील, दूरदर्शी और परिवर्तनशील नेतृत्व में बैंक ने न केवल लाभप्रदता की दिशा में ऐतिहासिक प्रगति की, बल्कि एक डिजिटल एवं समावेशी बैंकिंग संस्थान के रूप में खुद को पुन: परिभाषित किया. उनके द्वारा किए गए रणनीतिक निर्णयों और मानव-केंद्रित दृष्टिकोण ने बैंक की नींव को और अधिक सशक्त बनाया. हम उनके योगदान के प्रति आभार व्यक्त करते हैं और उनके आगामी जीवन के लिए शुभकामनाएँ देते हैं.

मैं आप सभी से यह अपेक्षा करता हूँ कि आप अपने भीतर के नेतृत्व को पहचानें, परिवर्तन को अपनाएं और हर दिन को एक नए अवसर की तरह लें. बैंक की वास्तविक पूंजी उसकी मानव संपदा है - और आप सभी इस पूंजी के श्रेष्ठ प्रतीक हैं.

आप सभी को आगामी तिमाही के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ एवं मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम मिलकर न केवल लक्ष्यों को प्राप्त करेंगे, बल्कि नई ऊँचाइयों की ओर अग्रसर होंगे.

आप सभी को आगामी तिमाही के लिए शुभकामनाएँ

Dear Centralites,

The path to progress for any institution is paved by the collective energy, clarity of purpose, and dedication of each of its staff members. The significant milestones our Bank has achieved in the quarter ended June 30, 2025, not only affirm our strategic direction but also reflect the underlying strength and resilience of this institution.

A total business of ₹7.04 lakh crore, net profit of ₹1169 crore, and double-digit growth in the retail, agriculture, and MSME sectors — these figures are not merely financial indicators, but echoes of your hard work, innovation, and accountability.

However, for us, growth is not just about achieving numbers; it is about nurturing an inclusive, responsible, and sustainable institutional culture. In the times ahead, we need to focus especially on the following areas:

- **Translating digital transformation into practice:** Merely adopting technology is not enough; we must connect our customers to it and enhance their experience.
- **Excellence in risk management:** Improved asset quality and prudent decisions are the foundation of our long-term stability.
- **Empowered leadership development:** Building leadership capabilities at both branch and managerial levels will make us more self-reliant and decisive.
- **Cultural and social responsibility:** A bank is not just a financial entity — it is also a driving force for societal upliftment. This spirit must be reflected in our way of working.

At this juncture, I would especially like to acknowledge the invaluable contribution of our esteemed MD & CEO, Shri M.V. Rao, who is retiring this month. Under his dynamic, visionary, and transformational leadership, the Bank not only made historic strides toward profitability but also redefined itself as a digital and inclusive banking institution. His strategic decisions and people-centric approach have significantly strengthened the foundation of the Bank. We express our sincere gratitude for his service and extend our best wishes for his future journey.

I urge each one of you to recognize the leader within, embrace change, and treat each day as a new opportunity. The true capital of the Bank lies in its human resources — and you are all its finest symbols.

Wishing you all the very best for the upcoming quarter, with full confidence that together we will not only achieve our goals but also move towards even greater heights.

Wishing you all the very best for the upcoming quarter!

(विवेक वाही Vivek Wahi)
कार्यपालक निदेशक Executive Director

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री एम. वी. मुरली कृष्णा जी का संदेश

Message from Shri M.V. Murli Krishna, Executive Director

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

मुझे आप सभी को यह बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि 30 जून, 2025 को समाप्त तिमाही में हमारे बैंक ने शानदार परिणाम दर्ज किए हैं. यह तिमाही न केवल हमारी वित्तीय स्थिरता और आस्ति गुणवत्ता का प्रमाण है, बल्कि लाभप्रदता के क्षेत्र में हमारी रणनीतिक दिशा की सफलता का भी सूचक है.

हमारा कुल व्यवसाय ₹7 लाख करोड़ के आंकड़े को पार कर गया है, जो हमारी बढ़ती पहुंच और ग्राहकों के विश्वास को दर्शाता है. इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि गत वर्ष की इसी अवधि की तुलना में हमारे लाभ में 32.84% की उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है. ये आंकड़े केवल संख्याएं नहीं हैं, बल्कि यह आप सभी की कड़ी मेहनत, समर्पण और अटूट प्रतिबद्धता का सीधा परिणाम है.

हालांकि, हमें इस गति को बनाए रखना है और भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार रहना है. हमारी आगे की दिशा स्पष्ट है और हम निम्नलिखित प्रमुख क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करेंगे:

- **डिजिटल ग्राहकों का जुड़ाव बढ़ाना:** हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हमारी तकनीक ग्राहकों के अनुभव को बेहतर बनाए और उन्हें अधिक सशक्त करे. डिजिटल नवाचार को अपनाने और ग्राहकों के लिए इसे सहज बनाने पर हमारा विशेष ध्यान रहेगा.
- **RAM क्षेत्रों पर फोकस** : रिटेल, कृषि और एमएसएमई (रैम) जैसे उच्च-विकास क्षेत्रों में हमें मजबूत पकड़ रखनी है, विशेष रूप से ग्रामीण और अर्ध-शहरी शाखाओं में, जहां विकास की अपार संभावनाएं हैं.
- **एनपीए पर सख्त नियंत्रण:** आस्ति गुणवत्ता हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता बनी रहेगी. अग्रिम स्वीकृति और निगरानी प्रणाली को और अधिक सुदृढ़ करके हम एनपीए को नियंत्रित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं.
- **मानव संसाधन और नेतृत्व विकास:** हम अपने कर्मचारियों में निवेश करना जारी रखेंगे. शाखा और क्षेत्र स्तर पर नेतृत्व कौशल को बढ़ावा देना आवश्यक है ताकि निर्णय लेने की प्रक्रिया में तेजी और दक्षता आए.
- **सतत लाभप्रदता:** लागत नियंत्रण, गैर-ब्याज आय वृद्धि और ग्राहक-केंद्रित रणनीतियों के माध्यम से हम बैंक की लाभप्रदता को बनाए रखने का प्रयास करेंगे.
- **सामाजिक और वित्तीय समावेशन:** बैंक के रूप में, हमारा एक बड़ा सामाजिक दायित्व भी है. हमें ग्रामीण भारत के अंतिम व्यक्ति तक पहुँच सुनिश्चित करते हुए वित्तीय समावेशन के अपने लक्ष्य को पूर्ण करना है.

इस तिमाही की उपलब्धियां बैंक के रणनीतिक मार्गदर्शन और हमारे प्रत्येक कर्मचारी की समर्पित मेहनत का प्रतिफल है. अब इस गति को बनाए रखने, नवाचार अपनाने और समावेशी विकास की दिशा में और अधिक सक्रिय कदम उठाने की आवश्यकता है. मुझे विश्वास है कि हम मिलकर न केवल अपने लक्ष्यों को प्राप्त करेंगे, बल्कि नई ऊँचाइयों की ओर अग्रसर होंगे और एक ऐसे बैंक का निर्माण करेंगे जो देश के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता रहेगा.

आप सभी को आगामी तिमाही के लिए शुभकामनाएँ!

Dear Centralites,

It gives me immense pleasure to share that our Bank has delivered excellent results for the quarter ended June 30, 2025. This quarter not only stands as a testament to our financial stability and asset quality, but also marks the success of our strategic direction in the area of profitability.

Our total business has crossed the ₹7 lakh crore mark, reflecting our expanding outreach and the growing trust of our customers. Even more noteworthy is the impressive 32.84% growth in profit compared to the same period last year. These figures are not just numbers — they are the direct outcome of your hard work, dedication, and unwavering commitment.

However, we must continue this momentum and be prepared for future challenges. Our way forward is clear, and we will focus on the following key areas:

- **Enhancing digital customer engagement:** We must ensure that our technology enhances the customer experience and empowers them further. We will lay special emphasis on adopting digital innovation and making it seamless for our customers.
- **Focus on RAM sectors:** We must maintain a strong presence in high-growth sectors like Retail, Agriculture, and MSME (RAM), especially in rural and semi-urban branches where immense growth potential lies.
- **Strict control over NPAs:** Asset quality will remain our top priority. We are committed to controlling NPAs by further strengthening our credit approval and monitoring systems.
- **Human resource and leadership development:** We will continue to invest in our people. Promoting leadership skills at branch and regional levels is essential for faster and more efficient decision-making.
- **Sustainable profitability:** Through cost control, growth in non-interest income, and customer-centric strategies, we will strive to sustain the Bank's profitability.
- **Social and financial inclusion:** As a bank, we have a larger social responsibility. We must ensure financial inclusion by reaching the last mile in rural India and fulfilling our inclusive growth objectives.

The achievements of this quarter are a result of our strategic direction and the dedicated efforts of every employee. Now, we must sustain this momentum, embrace innovation, and take more proactive steps toward inclusive growth. I am confident that together we will not only achieve our goals but reach greater heights and build a Bank that continues to make a significant contribution to the nation's development.

Wishing you all the very best for the upcoming quarter!

(एम. वी. मुरली कृष्णा M. V. Murali Krishna)
कार्यपालक निदेशक Executive Director

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री महेन्द्र दोहरे जी का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

वित्त वर्ष 2025-26 की शुरुआत के साथ हम एक नए संकल्प, नई ऊर्जा और स्पष्ट दिशा के साथ आगे बढ़ रहे हैं. इस वर्ष को हमने ''व्यवसाय उत्कृष्टता का वर्ष'' घोषित किया है - एक ऐसा वर्ष जो हमें केवल निर्धारित लक्ष्यों तक पहुँचने तक सीमित नहीं रखेगा, बल्कि सेवा की उत्कृष्टता, नवाचार, स्थायी मूल्य सृजन और संगठनात्मक दक्षता को गहराई से आत्मसात करने का मार्ग प्रशस्त करेगा.

हमारी प्राथमिकताएं स्पष्ट, उद्देश्यपरक और भविष्यगामी हैं-

- गुणवत्तापूर्ण एवं विवेकपूर्ण ऋण संवितरण,
- प्रत्येक शाखा द्वारा औसतन ₹12 करोड़ की जमा में वृद्धि,
- बचत एवं सावधि जमा में संतुलित वृद्धि के साथ सीडी अनुपात को संतुलित बनाए रखना,
- तकनीकी दृष्टि से बट्टाकृत खातों की प्रभावी वसूली, तथा
- गैर-ब्याज आय के स्रोतों को विविधतापूर्ण रूप से विकसित करना.

इन सभी प्रयासों का मूल उद्देश्य है - उत्कृष्ट परिसंपत्ति गुणवत्ता और सर्वोत्तम ग्राहक सेवा.

हमारे लिए ग्राहक संतुष्टि केवल एक उद्देश्य नहीं, बल्कि हमारे संगठनात्मक मूल्यों की जीवंत अभिव्यक्ति है. यह हमें व्यवसाय वृद्धि और संसाधन संवर्धन की दिशा में सबसे प्रभावी शक्ति प्रदान करती है.

यह वर्ष हमारे लिए एक भावनात्मक पड़ाव भी है, क्योंकि हमारे माननीय एमडी एवं सीईओ श्री एम. वी. राव जी अपने सेवाकाल को पूर्ण कर रहे हैं. उनके नेतृत्व में हमारा बैंक न केवल पुनरुत्थान की राह पर लौटा, बल्कि डिजिटलीकरण, परिचालन दक्षता, लाभप्रदता और ब्रांड प्रतिष्ठा के प्रत्येक आयाम में अभूतपूर्व प्रगति की है. उनका अनुभव, उनकी दूरदृष्टि और उनकी विनम्रता सदैव हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत रहेंगे.

प्रिय साथियों, आपके समर्पण, परिश्रम और प्रतिबद्धता की बदौलत हमारा बैंक निरंतर प्रगति कर रहा है. अमृतकाल के इस स्वर्णिम अवसर पर, आइए हम सब मिलकर अपने बैंक को व्यवसाय उत्कृष्टता, नवाचार और ग्राहक-सेवा की नई ऊँचाइयों तक पहुँचाएँ.

स्नेहपूर्ण शुभकामनाएं.

Message from Shri Mahendra Dohare, Executive Director

Dear Centralites,

With the onset of the financial year 2025-26, we are moving forward with renewed resolve, fresh energy, and a clear direction. We have declared this year as the "Year of Business Acceleration (YOBA) " — a year that goes beyond merely achieving set targets. It is a year dedicated to embracing service excellence, innovation, sustainable value creation, and organizational efficiency at every level.

Our priorities are clear, purposeful, and future-oriented:

- Quality and prudent credit disbursement,
- Average deposit growth of ₹12 crore per branch,
- Balanced growth in savings and term deposits while maintaining a healthy CD ratio,
- Effective recovery in technically written-off accounts, and
- Diversification of income streams through non-interest income.

The core objective behind all these efforts is — superior asset quality and best-in-class customer service.

For us, customer satisfaction is not merely a goal — it is a living reflection of our organizational values. It remains our greatest strength in enhancing resources and driving business growth.

This year is also an emotional milestone, as our respected MD & CEO, Shri M. V. Rao, approaches the concluding phase of his service. Under his leadership, the Bank has not only made a remarkable turnaround but has also achieved exceptional progress across all dimensions — from digitization and operational efficiency to profitability and brand reputation. His experience, foresight, and humility will continue to inspire us all.

Dear colleagues, it is your dedication, hard work, and commitment that continue to fuel our Bank's progress. In this golden phase of Amrit Kaal, let us unite to elevate our Bank to new heights of business excellence, innovation, and customer service.

Warm greetings to all of you.

(महेंद्र दोहरे Mahendra Dohare)
कार्यपालक निदेशक Executive Director

संपादकीय/ Editorial

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो

यह ''सेन्ट्रलाइट'' का नवीन अंक एक ऐसे विशेष समय में आपके समक्ष प्रस्तुत हो रहा है, जब हमारा बैंक अपने ऐतिहासिक ''टर्नअराउंड'' की नई ऊँचाइयों को छू रहा है. 30 जून 2025 को समाप्त तिमाही में प्राप्त शानदार परिणाम इस बात के जीवंत प्रमाण हैं कि दृढ़ नेतृत्व, सही रणनीति और हमारी मानव संपदा की सामूहिक प्रतिबद्धता किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने में सक्षम है.

इस तिमाही में हमारा कुल व्यवसाय ₹7 लाख करोड़ के ऐतिहासिक आँकड़े को पार कर गया है, जिसमें लाभप्रदता, परिसंपत्ति गुणवत्ता और परिचालन क्षमता - तीनों क्षेत्रों में संतुलित एवं प्रभावशाली प्रगति हुई है. यह उपलब्धि सिर्फ आँकड़ों तक सीमित नहीं, बल्कि हमारे प्रत्येक सेन्ट्रलाइट के समर्पण, कौशल और संगठन के प्रति निष्ठा की परिलक्षित अभिव्यक्ति है.

इस अवसर पर मैं मानव संपदा प्रबंधन विभाग की ओर से यह विशेष रूप से रेखांकित करना चाहती हूँ कि किसी भी संस्थान की मूल शक्ति उसकी मानव संपदा में होती है. हमारे कर्मचारियों की ऊर्जा, उनका कौशल, सीखने की निरंतर ललक और परिवर्तन को अपनाने की तत्परता ही हमारे संगठन के सतत विकास की नींव है.

हमारे लिए भावनात्मक क्षण है कि हमारे आदरणीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री एम. वी. राव सर इस माह में सेवा निवृत्त हो रहे हैं. श्री राव सर का कार्यकाल हमारे बैंक के इतिहास में सुनहरे अध्याय के रूप में स्मरणीय रहेगा. उनके नेतृत्व में बैंक ने न केवल निरंतर घाटे की स्थिति से बाहर निकलकर लाभप्रदता हासिल की, बल्कि डिजिटल बैंकिंग, ग्राहक सेवा, परिचालन दक्षता और संगठनात्मक संस्कृति के हर पहलू में अभूतपूर्व बदलाव को आत्मसात किया.

उनकी दूरदृष्टि, सादगीपूर्ण व्यवहार और प्रेरणादायी नेतृत्व से हम सभी ने बहुत कुछ सीखा है. यह हमारा सौभाग्य है कि हमें उनके साथ काम करने का अवसर मिला, और उनके विचार सदैव हमारे मार्गदर्शक बने रहेंगे.

प्रिय साथियों, ''सेन्ट्रलाइट'' केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि हमारे संगठन की आत्मा की अभिव्यक्ति है - ''विचारों, अनुभवों और उपलब्धियों का दर्पण''. मैं आप सभी से आग्रह करती हूँ कि आप इसमें सक्रिय सहभागिता निभाएँ और अपनी रचनात्मकता से इसे और समृद्ध करें.

आइए, इस व्यवसाय उत्कृष्टता के वर्ष में हम सभी मिलकर मानव संपदा के सामूहिक बल से अपने बैंक को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने हेतु कटिबद्ध हों.

Dear Centralites,

This latest edition of Centralite reaches you at a momentous time when our Bank is scaling new heights through a remarkable turnaround journey. The outstanding results achieved in the quarter ended 30th June 2025 are living testimony to the fact that strong leadership, the right strategy, and the collective commitment of our human capital can help us achieve any goal.

During this quarter, our total business has crossed the historic milestone of ₹7 lakh crore, with well-balanced and impressive progress across profitability, asset quality, and operational efficiency. These achievements are not just about numbers — they reflect the unwavering dedication, competence, and organizational loyalty of each and every Centralite.

On this occasion, I would like to especially emphasize, on behalf of the Human capital Management Department, that the true strength of any institution lies in its human capital. The energy, skills, continuous learning spirit, and adaptability of our employees are the foundation upon which the Bank's sustainable growth stands.

This is also an emotional moment for all of us, as our esteemed Managing Director & CEO, Shri M. V. Rao, will be superannuating this month. Shri Rao's tenure will forever be remembered as a Golden Chapter in the history of our Bank. Under his visionary leadership, the Bank not only overcame a prolonged phase of losses to return to profitability, but also embraced transformational changes across digital banking, customer service, operational efficiency, and organizational culture.

His foresight, humility, and inspirational leadership have been a source of learning for all of us. We are privileged to have had the opportunity to work under his guidance, and his values will continue to inspire us in the future.

Dear colleagues, Centralite is not just a magazine — it is the soul of our organization, a reflection of our thoughts, experiences, and achievements. I urge all of you to actively contribute to this platform and enrich it with your creativity.

Let us, in this Year of Business Excellence, remain committed to elevating our Bank to greater heights through the collective strength of our human capital.

(पॉपी शर्मा Poppy Sharma)
मुख्य महाप्रबंधक - मानव संपदा प्रबंधन Chief General Manager – HCM

YOBA-156: व्यवसाय उत्कर्ष की ओर एक सामूहिक यात्रा

वित्त वर्ष 2025-26 को सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया द्वारा "Year of Business Acceleration" घोषित किया गया है. यह एक साधारण घोषणा मात्र नहीं है, बल्कि बैंक के भविष्य के लिए एक ठोस, स्पष्ट और सामूहिक दृष्टिकोण की शुरुआत है. इस यात्रा का उद्देश्य न केवल व्यवसाय को बढ़ाना है, बल्कि हर शाखा और प्रत्येक कर्मचारी को इस अभियान में सक्रिय सहभागी बनाना है.

बैंक का संकल्प है: कुल व्यवसाय को 8.25 लाख करोड़ रुपये तक पहुँचाना. इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए YOBA-156 नामक अभियान शुरू किया गया है, जो शाखा स्तर पर स्पष्ट और व्यावहारिक लक्ष्यों को परिभाषित करता है.

YOBA-156 क्या है?

YOBA-156 का आशय है:

- 1 करोड़ रुपये की वृद्धि चालू खाता (Current Account) व्यवसाय में
- 5 करोड़ रुपये की वृद्धि बचत खाता (Savings Account) जमाओं में
- 6 करोड़ रुपये की वृद्धि सावधि जमा (Term Deposit) में

अर्थात्, कुल मिलाकर प्रत्येक शाखा को 12 करोड़ रुपये का व्यवसाय बढ़ाना है. यह अभियान न केवल आंकड़ों की बात करता है, बल्कि यह हमारी सोच, कार्यशैली और ग्राहक सेवा के प्रति प्रतिबद्धता को पुनर्परिभाषित करने का एक अवसर है.

क्यों आवश्यक है यह अभियान?

वर्तमान बैंकिंग परिदृश्य में प्रतिस्पर्धा बहुत तीव्र है. डिजिटलीकरण, फिनटेक स्टार्टअप्स और निजी बैंकों की आक्रामक रणनीतियाँ हमें निरंतर सजग रहने की चुनौती देती हैं. ऐसे में YOBA-156 का महत्व और भी बढ़ जाता है. यह अभियान हमें केवल व्यवसायिक आंकड़े नहीं देता, बल्कि यह हमें ''ग्राहक केंद्रित बैंकिंग'' की ओर ले जाता है.

इस लक्ष्य को कैसे देखा जाए?

हर लक्ष्य को अगर केवल एक ''संख्या'' के रूप में देखा जाए, तो वह बोझ लग सकता है. लेकिन यदि उसे एक संभावना, एक विकास यात्रा, और एक सेवा भाव के रूप में देखा जाए, तो वह प्रेरणा बन जाती है.

YOBA-156 भी ऐसा ही एक लक्ष्य है- जो हमें ग्राहकों के और निकट लाने, उनकी ज़रूरतों को समझने, और उन्हें बेहतर समाधान देने के लिए प्रेरित करता है. इसका वास्तविक सार है ''संवाद'', ''समर्पण'' और ''साझेदारी''.

प्रत्येक कर्मचारी की भूमिका

इस यात्रा में शाखा प्रबंधक से लेकर कनिष्ठ सहायक तक, हर एक की भूमिका विशेष है.

- शाखा प्रबंधक केवल नेतृत्वकर्ता नहीं, बल्कि टीम के प्रेरक हैं. उन्हें यह सुनिश्चित करना होगा कि अभियान की भावना हर सदस्य तक पहुँचे और हर ग्राहक तक पहुंचे.
- मार्केटिंग अधिकारी को अपने क्षेत्र के सामाजिक और आर्थिक परिदृश्य को समझकर रणनीति बनानी होगी- कहाँ नए खाते खोले जा सकते हैं, किस व्यवसाय को बैंक से जोड़ा जा सकता है, किस ग्राहक को सावधि जमा की सलाह दी जा सकती है.
- ग्राहक सेवा अधिकारी व सहायक कर्मी, जो हर दिन ग्राहकों से संवाद करते हैं, उन्हें यह समझना होगा कि छोटी-छोटी बातचीतें भी बड़े विश्वास और व्यवसाय में बदल सकती हैं.

अभियान का असली बल तभी प्रकट होगा जब प्रत्येक कर्मचारी इसे ''मेरी शाखा, मेरा लक्ष्य'' की भावना से अपनाएगा.

लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में कुछ विचार

1. **ग्राहक के दृष्टिकोण से सोचें**

   आज का ग्राहक सुविधा, पारदर्शिता और व्यक्तिगत ध्यान चाहता है. उसे केवल ब्याज दर से नहीं, विश्वास से जोड़ा जा सकता है. हमें बैंकिंग को ''सेवा'' के रूप में पुन: परिभाषित करना होगा.

2. **स्थानीय संबंधों को मज़बूत करें**

   हर शाखा का क्षेत्र विशिष्ट होता है - वहाँ के व्यापार, संस्थान, किसान, दुकानदार, शिक्षक, सबकी ज़रूरतें अलग होती हैं. स्थानीय समाज से जुड़ना और उनकी भाषा में संवाद करना, विश्वास अर्जित करने का प्रथम कदम है.

3. **छोटी उपलब्धियों को भी मनाएँ**

   जब कोई कर्मचारी एक नया चालू खाता खोलता है, एक बड़ी

सावधि जमा बुक कराता है, या एक ग्राहक को डेबिट कार्ड से जोड़ता है, तो वह केवल एक लेन - देन नहीं करता - वह YOBA-156 की ईंट रखता है. ऐसे क्षणों को टीम के साथ साझा करें, सराहें.

यह केवल अभियान नहीं, संस्कृति है

YOBA-156 एक बार का लक्ष्य नहीं, बल्कि बैंकिंग की एक नई कार्यसंस्कृति का आरंभ है. यह हमें अपने दायित्वों को नए दृष्टिकोण से देखने के लिए प्रेरित करता है- जहाँ हम केवल ''लक्ष्य'' नहीं, ''संबंध'' बनाते हैं.

इस प्रक्रिया में कठिनाइयाँ आएँगी, पर जब हम सहयोग की भावना से आगे बढ़ते हैं, तो हर चुनौती अवसर बन जाती है.

अंत में...

आइए, YOBA-156 को केवल एक अभियान के रूप में नहीं, बल्कि एक आत्म-चिंतन और परिवर्तन की प्रक्रिया के रूप में देखें. यह व्यवसाय बढ़ाने की बात करता है, पर साथ ही यह हमें बैंक और ग्राहक के बीच भरोसे की नई नींव रखने का भी अवसर देता है.

जब हर शाखा 12 करोड़ रुपये की वृद्धि को आत्मसात करेगी, तब बैंक अपने लक्ष्य - 8.25 लाख करोड़ रुपये व्यवसाय - की ओर सशक्त रूप से अग्रसर होगा.

और तब हम सब कह पाएँगे -

''हमने न केवल लक्ष्य पाया, बल्कि खुद को भी नए रूप में गढ़ा''

संजय कुमार
मुख्य प्रबंधक - आरपीसी
क्षेत्रीय कार्यालय, छिन्दवाड़ा

दिनांक 10.04.2025 को पणजी क्षेत्र में टाउन हॉल बैठक में सभी स्टाफ सदस्यों को संबोधित करते हुए माननीय एमडी एवं सीईओ श्री एम. वी. राव

''स्वस्थ कार्यालयीन वातावरण संस्था के लिए उत्पादक है''

किसी भी संस्था की सफलता का मूल आधार उसका मानव संसाधन होता है. कर्मचारी जितना अधिक मानसिक, शारीरिक और सामाजिक रूप से स्वस्थ और संतुष्ट होगा, वह उतना ही अधिक योगदान संस्था को दे सकेगा. कर्मचारियों के प्रयासों की सार्थक प्रशंसा उन्हें अधिक कार्य करने के लिए प्रेरित करती है. स्वस्थ कार्यालयीन वातावरण का सीधा संबंध कर्मचारियों की कार्यक्षमता, मनोबल और समर्पण से होता है. एक सकारात्मक और सहयोगी वातावरण में कार्यरत कर्मचारी संस्थागत लक्ष्यों की प्राप्ति में अधिक उत्साह और प्रतिबद्धता दिखाते हैं.

स्वस्थ कार्यालयीन वातावरण क्या है?

स्वस्थ कार्यालयीन वातावरण का आशय उस वातावरण से है जिसमें कार्य करने वाले सभी कर्मचारी स्वयं को सुरक्षित, सम्मानित, प्रेरित और सहयोगयुक्त अनुभव करें. इसमें शामिल हैं:

- **शारीरिक रूप से सुरक्षित और स्वच्छ कार्यस्थल**

  कार्यस्थल का सुरक्षित और स्वच्छ होना कार्यालय की प्रगति में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. हम सावर्जनिक क्षेत्र के महान बैंक बनने की दिशा में कार्यरत हैं. हमें हमारे ग्राहकों को एक स्वच्छ वातावरण प्रदान करना है. जिससे न केवल शाखा में आ रहे लोगों को प्रसन्नता का अनुभव होगा, अपितु शाखा में कार्य करने वालों को भी एक बेहतर कार्यालय में कार्य करने का सुखद अनुभव प्राप्त होगा.

- **मानसिक तनाव से मुक्त और सकारात्मक संवाद वाला वातावरण**

  मानव मस्तिष्क सामान्यत: तनाव में अपनी सर्वोच्च क्षमता के साथ कार्य नहीं कर पाता है. कार्यालय में अपनी अभिव्यक्ति सभी को प्रिय होती है. ऐसे में सकरात्मक कार्यालय संवाद कई बार नये विचारों को जन्म देता है. इससे कर्मचारियों में रचानात्कता का सृजन होता है.

- **समान अवसर और न्यायपूर्ण व्यवहार**

  एक वर्ग के सभी आधिकारियों को समान अवसर प्रदान करना अतिआवश्यक है, समान व्यवहार का अधिकार हमारा संवैधानिक अधिकार है. किसी के साथ भी जाति, रंग, रूप या लिंग के आधार पर भेदभाव नहीं किया जा सकता है. ऐसा करना विधिक तथा नैतिक रूप से गलत है. इससे कर्मचारियों के मन में आपसी मतभेद पैदा होते हैं.

- **टीम वर्क और पारदर्शिता**

  सभी संस्थाएं एक वृहद टीम के साथ एक जुट होकर कार्यान्वयन कर रहीं हैं. टीम वर्क कार्य को सहज तथा सुगम बनाता है. टीम के बीच में पारदर्शिता होना न केवल आपसी विश्वास को पुष्ट करता है, अपितु किसी भी प्रकार के कदाचार अथवा भ्रष्टाचार की भी रोकथाम करता है. जब कार्यालय में प्रतिस्पर्धा की जगह सहयोग और सामूहिक प्रयास को बढ़ावा मिलता है, तो संस्था का विकास और कर्मचारी दोनों साथ-साथ आगे बढ़ते हैं.

- **कार्य और जीवन की संतुलन विधा**

  हम सभी अपने जीवन में कार्यालयीन तथा व्यैक्तिक जीवन में संतुलन बनाना चाहते हैं. कार्यालयीन जीवन तथा व्यैक्तिक जीवन दो अलग अलग हिस्से न होकर एक दूसरे के संपूरक हैं. एक के बिना दूसरा अधूरा है. हमें अपने जीवन का आनंद भी लेना है तथा उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन भी करना है. इसीलिए कार्यालयीन जीवन शैली का भी आनंद उठाएं.

स्वस्थ वातावरण के घटक

1. **स्वच्छता और भौतिक सुविधाएं**

   एक स्वच्छ, सुव्यवस्थित और आरामदायक कार्यालय न केवल स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है, बल्कि कर्मचारियों की मानसिक शांति के लिए भी उपयोगी है. पर्याप्त प्रकाश, वेंटिलेशन, साफ

शौचालय, बैठने की उचित व्यवस्था जैसे बुनियादी सुविधाएं एक स्वस्थ वातावरण का प्रथम चरण हैं जो किसी भी कर्मचारी के लिए एक अच्छे कार्यस्थल का स्वरूप होता है.

2. सकारात्मक संप्रेषण

कर्मचारियों के विचारों, चिंताओं और सुझावों को सुनने और समझने की संस्कृति, संस्था को अधिक मानव-केंद्रित बनाती है. इससे कर्मचारियों को यह अनुभव होता है कि वे केवल कार्यबल नहीं, बल्कि संगठन का अभिन्न हिस्सा हैं. तथा ऐसे कार्यस्थल पर वे अपनी मनोभावनाएं अभिव्यक्त करने के लिए स्वयं को स्वतंत्र महसूस करते हैं. जिससे उनमें आत्मविश्वास के साथ साथ रचनात्मकता के निखरने के पूर्ण अवसर प्राप्त होते हैं.

3. मानसिक स्वास्थ्य का संरक्षण

वर्तमान समय में कार्यस्थलों पर मानसिक स्वास्थ्य एक गंभीर मुद्दा है. तनाव, डेडलाइन का दबाव, बॉस का व्यवहार - ये सभी मानसिक थकान के कारण बनते हैं. योग, ध्यान, काउंसलिंग जैसी पहल कर्मचारियों के मानसिक संतुलन को बनाए रखने में सहायक होती हैं. हमारा बैंक लगातार इस महत्वपूर्ण पहलू पर कार्यरत है. बैंक ने योगा के लिए हाबिल्ड तथा मानसिक स्वास्थ्य के लिए 1 टू 1 हेल्पलाइन प्रारंभ किया है, यह दोनों प्लेटफॉर्म मानसिक तनाव तथा मानसिक बीमारियों से स्वतंत्रता की दिशा में कार्यरत हैं.

4. प्रशंसा और प्रेरणा

कर्मचारी की मेहनत को समय पर पहचानना और उसकी सराहना करना, उसे अधिक समर्पित बनाता है. जब व्यक्ति को यह विश्वास होता है कि उसकी मेहनत को महत्व दिया जा रहा है, तब वह और बेहतर कार्य करने के लिए प्रेरित होता है. तथा पूर्ण निष्ठा के साथ वह संस्था की प्रगति में स्वयं की प्रगति देखता है. इससे कर्मचारी लंबे समय तक संस्थान से जुड़े रहते हैं. वर्तमान दौर में अच्छे कर्मचारियों को कंपनी में रखना भी अपने आप में एक चुनौतीपूर्ण कार्य है.

स्वस्थ कार्यालयीन वातावरण के लाभ

1. उत्पादकता में वृद्धि

जब कर्मचारियों को बिना किसी तनाव और डर के कार्य करने का अवसर मिलता है, तो उनका ध्यान पूरी तरह से कार्य पर केंद्रित होता है, जिससे कार्य की गुणवत्ता और गति दोनों में सुधार होता है. फलस्वरूप कार्यालयीन कार्य में उत्पादकता में वृद्धि होती है, जिससे संस्था की लाभप्रदत्ता पर एक सकारात्मक असर पड़ता है.

2. कर्मचारी संतुष्टि और स्थायित्व

एक अच्छा वातावरण कर्मचारियों को संस्था के साथ लंबे समय तक जोड़कर रखता है. इससे संस्थान को नए लोगों की भर्ती और प्रशिक्षण में लगने वाली लागत से भी बचाव होता है. तथा पूर्व कर्मचारियों के समर्पण से नए लोगों को कार्य के प्रति एक नया परिदृश्य समझ आता है. संस्था में स्थायित्व बना रहता है. कर्मचारियों में संतुष्टि का भाव समाहित होता है.

3. कम अनुपस्थिति

स्वस्थ वातावरण बीमारियों और मानसिक थकावट को कम करता है, जिससे कर्मचारियों की उपस्थिति बेहतर रहती है. जो कार्यालय की उत्पादकता में वृद्धि करती है. कर्मचारियों की निर्भरता को उचित ढंग से समायोजित करती है.

4. सकारात्मक संगठनात्मक संस्कृति का निर्माण

एक प्रेरणादायक और सहयोगी वातावरण ऐसी संस्कृति तैयार करता है जो नवाचार, रचनात्मकता और टीम भावना को बढ़ावा देता है. यह केवल हमारी संस्था के लिए लाभदायक नहीं हैं अपितु उद्योग में अन्य सभी संस्थानों के लिए लाभदायक है, क्योंकि हमारे अच्छे कार्यालयीन वातावरण से अन्य संस्थान प्रेरित होते हैं. अन्य संस्थान भी एक अच्छे कार्यलयीन वातावरण निर्मित करने के लिए कार्यान्वयन करेंगें. जिससे एक बेहतर समाज का निर्माण होगा. जो देश की उन्नति में लाभदायक होगा.

चुनौतियाँ और समाधान

विविधता और समावेशन

विभिन्न पृष्ठभूमियों से आने वाले कर्मचारियों के लिए समान अवसर और सम्मान सुनिश्चित करना कठिन हो सकता है. इसके लिए विविधता नीति और प्रशिक्षण कार्यक्रम लागू किए जा सकते हैं. जो हमारे भारत की मूल संस्कृति 'विविधता में एकता' के लिए अतिआवश्यक है. हमारी यही विशेषताएं हमारे लिए वरदान का कार्य करती हैं.

स्वस्थ कार्यालयीन वातावरण कोई विलासिता नहीं, बल्कि एक आवश्यकता है. यह संस्था के दीर्घकालिक विकास और स्थायित्व के लिए उतना ही आवश्यक है जितना कि पूंजी या तकनीक आवश्यक है. यदि संस्थाएं अपने कर्मचारियों को एक ऐसा वातावरण दें जहाँ वे सहज, सम्मानित और प्रेरित महसूस करें, तो संस्था न केवल आर्थिक रूप से समृद्ध होगी बल्कि समाज में भी एक प्रेरणादायक उदाहरण बनेगी. जिसके कार्यालयीन वातावरण का उदाहरण अन्य संस्थाओं के लिए अनुकरणीय होगा. कर्मचारियों में संतुष्टि तथा संस्था के प्रति निष्ठा की वृद्धि होगी. अर्थात् उत्पादकता के माध्यम से हम हमारी संस्था की समग्र लाभप्रदता में वृद्धि कर सकते हैं. जो हम सभी के लिए सुखदायक है. अत: हम सभी को अपने-अपने स्तर पर स्वस्थ कार्यालयीन वातावरण निर्मित करने के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए जिससे हम अपने साथियों के लिए एक अच्छा वातावरण निर्मित कर सकें.

अमित दहलान
मुख्य प्रबंधक
केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई

हैदराबाद अंचलाधीन क्षेत्रीय कार्यालय वरंगल में माननीय प्रबंधक निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम.वी.राव द्वारा एआई आधारित स्वचलित स्वर्ण ऋण मशीन का उद्घाटन किया गया. इस अवसर पर केंद्रीय कार्यालय के महाप्रबंधक श्री विवेक कुमार, अंचल प्रमुख श्री धारासिंग नायक, वरंगल क्षेत्रीय प्रमुख श्री वी.कृष्णमोहन, हैदराबाद क्षेत्रीय प्रमुख श्री डी.के. बरनवाल एवं स्टाफ सदस्य तथा विशिष्ट ग्राहक उपस्थित थे.

दिनांक 28.05.2025 को माननीय प्रबंधक निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम.वी.राव द्वारा आंचलिक कार्यालय में बैंक के संस्थापक सर सरोबाजी पोचखानावाला जी की प्रतिमा का अनावरण किया गया.

माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी महोदय की अध्यक्षता में त्रिची क्षेत्र में टाउन हॉल मीटिंग का आयोजन किया गया.

माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी महोदय के कर-कमलों से मदुरै क्षेत्र के अंतर्गत स्थित परमाकुडी शाखा में एआई आधारित स्वर्ण ऋण एटीएम मशीन का उद्घाटन किया गया. मदुरै प्रवास के दौरान टाउन हॉल मीटिंग का आयोजन किया गया

बैंकों में लेखापरीक्षा का महत्व

भारत की अर्थव्यवस्था में बैंकिंग क्षेत्र एक महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में कार्य करता है. यह न केवल आम जनता की बचत को सुरक्षित रखने का कार्य करता है, बल्कि उद्योगों, व्यवसायों, कृषि और व्यक्तिगत जरूरतों के लिए ऋण भी प्रदान करता है. जब किसी संस्था की गतिविधियाँ इतनी विशाल और बहुपरतीय हों, तो उनके संचालन में पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और वित्तीय अनुशासन सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है. यही उद्देश्य लेखापरीक्षा (Audit) की प्रक्रिया से पूरा किया जाता है.

बैंकों में लेखापरीक्षा का मुख्य उद्देश्य उनके वित्तीय लेन-देन, बैलेंस शीट, ऋणों की स्थिति, निवेश और नियामक अनुपालनों की समीक्षा करना होता है. यह लेख बैंकों में लेखापरीक्षा के महत्व, उसके प्रकारों, प्रक्रियाओं, चुनौतियों और भारतीय परिप्रेक्ष्य में उसके प्रभाव की विस्तृत चर्चा करता है.

लेखापरीक्षा की परिभाषा और उद्देश्य

लेखापरीक्षा एक स्वतंत्र जांच प्रक्रिया है, जिसमें किसी संस्था की वित्तीय रिपोर्टों, खातों और कार्यप्रणाली की निष्पक्ष जांच की जाती है. इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना होता है कि संस्था द्वारा प्रस्तुत की गई जानकारी सही, विश्वसनीय और नियामकीय मानदंडों के अनुरूप है या नहीं.

बैंकों में लेखापरीक्षा के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

खातों की सत्यता और विश्वसनीयता की पुष्टि करना

धोखाधड़ी और अनियमितताओं की पहचान करना

संचालन में पारदर्शिता सुनिश्चित करना

भारतीय रिज़र्व बैंक और अन्य नियामक संस्थाओं द्वारा निर्धारित मानकों की पूर्ति

आंतरिक नियंत्रण प्रणाली की जांच

जोखिम प्रबंधन की समीक्षा

बैंकों में लेखापरीक्षा के प्रकार

बैंकों में विभिन्न प्रकार के लेखापरीक्षण किए जाते हैं, जो उनके उद्देश्यों और प्रक्रियाओं के आधार पर भिन्न होते हैं:

वैधानिक लेखापरीक्षा (Statutory Audit):

यह भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) और कंपनी अधिनियम के तहत अनिवार्य लेखापरीक्षा है, जिसमें बैंक के वार्षिक वित्तीय विवरणों की समीक्षा की जाती है. यह लेखापरीक्षा स्वतंत्र बाहरी लेखापरीक्षकों द्वारा की जाती है.

आंतरिक लेखापरीक्षा (Internal Audit):

यह बैंक के भीतर की नियंत्रण प्रक्रिया है, जो नियमित अंतराल पर खातों, लेन-देन, ऋण स्वीकृति, निवेश आदि की जांच करती है. इसका उद्देश्य बैंक की कार्यप्रणाली में सुधार लाना होता है.

सूचना प्रौद्योगिकी लेखापरीक्षा (IT Audit):

आज के डिजिटल युग में बैंक अधिकांश कार्यप्रणालियों को सूचना प्रौद्योगिकी पर आधारित कर चुके हैं. इसलिए आईटी लेखापरीक्षा यह सुनिश्चित करती है कि बैंक की तकनीकी प्रणाली सुरक्षित, कुशल और विश्वसनीय है.

शाखा लेखापरीक्षा (Branch Audit):

विशेष रूप से बड़े बैंकों में, शाखाओं का लेखापरीक्षण आवश्यक होता है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सभी शाखाएँ नियामकीय मानकों और आंतरिक नीतियों का पालन कर रही हैं.

सर्प्राइज़ लेखापरीक्षा (Surprise Audit):

यह अचानक और बिना पूर्व सूचना के किया जाने वाला लेखापरीक्षण है, जिसका उद्देश्य अनियमितताओं को पकड़ना होता है.

बैंकों में लेखापरीक्षा की प्रक्रिया

बैंकों का लेखापरीक्षण चरणबद्ध तरीके से किया जाता है:

1. **पूर्व योजना और समझ**

   लेखा परीक्षक बैंक की गतिविधियों, प्रक्रियाओं और जोखिम क्षेत्रों को समझता है.

2. **नियंत्रण प्रणाली का मूल्यांकन**

बैंक की आंतरिक नियंत्रण प्रणाली की मजबूती की जांच की जाती है.

3. **डेटा संग्रहण और परीक्षण**

लेखा परीक्षक विभिन्न खातों, ऋण फाइलों, निवेश विवरण, नकदी प्रवाह आदि का निरीक्षण करता है.

4. **वित्तीय विवरणों की समीक्षा**

बैंक की बैलेंस शीट, लाभ-हानि विवरण, नकदी प्रवाह आदि की सटीकता और सत्यता की जांच की जाती है.

5. **रिपोर्टिंग**

अंत में, लेखा परीक्षक एक रिपोर्ट तैयार करता है जिसमें बैंक के वित्तीय स्वास्थ्य, संभावित जोखिम और सुधार के सुझाव होते हैं.

4. बैंकों में लेखापरीक्षा का महत्व

i. **धोखाधड़ी की रोकथाम और पहचान**

बैंकों में बड़ी मात्रा में नकदी और डिजिटल लेन-देन होते हैं, जिससे धोखाधड़ी की संभावना बढ़ जाती है.लेखापरीक्षा ऐसी अनियमितताओं की समय पर पहचान करती है.

ii. **वित्तीय रिपोर्टों की विश्वसनीयता**

लेखापरीक्षण यह सुनिश्चित करता है कि बैंक की वित्तीय रिपोर्टें सच्ची और निष्पक्ष हैं, जिससे निवेशकों और जमाकर्ताओं को भरोसा होता है.

iii. **नियामकीय अनुपालन**

भारतीय रिज़र्व बैंक, सेबी, कंपनी अधिनियम आदि द्वारा निर्धारित मानकों का पालन सुनिश्चित करने में लेखापरीक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है.

iv. **आंतरिक नियंत्रण प्रणाली की सुदृढ़ता**

लेखापरीक्षा के माध्यम से बैंक की नियंत्रण प्रणाली की कमजोरियों को उजागर किया जा सकता है, जिससे उसमें सुधार संभव होता है.

v. **निर्णय लेने में सहायता**

प्रबंधकीय निर्णयों में सटीक और सही आंकड़ों की आवश्यकता होती है. लेखापरीक्षा से प्राप्त जानकारी इन निर्णयों के लिए आधार बनती है.

5. चुनौतियाँ और समस्याएँ

i. **शाखाओं की अधिक संख्या**

विशाल बैंकों की हजारों शाखाएँ होती हैं, जिनका समय पर और गहन लेखापरीक्षण करना कठिन होता है.

ii. **जटिल वित्तीय उत्पाद**

बैंकों द्वारा आज अनेक प्रकार के जटिल वित्तीय उत्पाद पेश किए जाते हैं, जिनका मूल्यांकन और लेखापरीक्षण विशेषज्ञता की मांग करता है.

iii. **सूचना प्रौद्योगिकी का व्यापक उपयोग**

आईटी सिस्टम की जटिलता, साइबर सुरक्षा जोखिमों और डेटा प्रबंधन की चुनौतियाँ आईटी लेखापरीक्षा को कठिन बना देती हैं.

iv. **स्वतंत्रता और निष्पक्षता की कमी**

कुछ मामलों में लेखापरीक्षक बैंक प्रबंधन के दबाव में कार्य करते हैं, जिससे निष्पक्ष रिपोर्टिंग प्रभावित होती है.

6. सुधार के उपाय

तकनीकी लेखापरीक्षा क्षमताओं को बढ़ाना

आईटी और डेटा एनालिटिक्स का उपयोग कर लेखापरीक्षा को अधिक सटीक और तेज बनाया जा सकता है.

स्वतंत्रता सुनिश्चित करना

अंकेक्षकों को पूरी स्वतंत्रता और संरक्षण मिलना चाहिए ताकि वे निष्पक्ष रूप से कार्य कर सकें.

कर्मचारियों का प्रशिक्षण

बैंक कर्मचारियों और आंतरिक लेखापरीक्षकों को समय-समय पर प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए.

नियामकीय निगरानी में सुधार

भारतीय रिज़र्व बैंक और अन्य एजेंसियों को निगरानी की प्रक्रिया को और अधिक सख्त और प्रभावी बनाना चाहिए.

निष्कर्ष

बैंकों में लेखापरीक्षा एक सुरक्षा कवच की तरह कार्य करता है, जो वित्तीय प्रणाली को पारदर्शी, विश्वसनीय और उत्तरदायी बनाता है. यह न केवल धोखाधड़ी और जोखिमों को रोकने में सहायक है, बल्कि इससे आम जनता का भरोसा भी बैंकों पर बना रहता है. भारतीय बैंकिंग प्रणाली की सुदृढ़ता के लिए आवश्यक है कि लेखापरीक्षा प्रणाली को और अधिक सशक्त, तकनीकी रूप से उन्नत और निष्पक्ष बनाया जाए, तभी एक स्थिर, पारदर्शी और उत्तरदायी बैंकिंग व्यवस्था की स्थापना संभव हो सकेगी.

एस. के. सिन्हा
उप महाप्रबंधक
आंतरिक लेखा परीक्षक कार्यालय,
अहमदाबाद

वित्तीय समावेशन

विकास के पिरामिड में सबसे निचले स्तर को वित्तीय समावेशन के माध्यम से मजबूत करने की जरूरत है. जिससे गरीबों की क्रय शक्ति बढ़े.

- नरेंद्र मोदी

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य :

भारतीय रिजर्व बैंक ने अगस्त 2021 में सरकारी एवं विभिन्न नियामकों के साथ परामर्श के बाद एक समग्र सूचकांक की संकल्पना पेश की थी. इसमें बैंकिंग, निवेश, बीमा, डाक सेवा और पेंशन क्षेत्र से जुड़े ब्यौरे शामिल होते हैं.

भारतीय रिजर्व बैंक ने 31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए समग्र वित्तीय समावेशन सूचकांक (एफआई- इंडेक्स) जारी किया है.

- मार्च 2024 के लिए सूचकांक का मूल्य 64.2 है, जबकि मार्च 2023 में यह 60.1 था, जिसमें सभी उप-सूचकांकों (पहुंच, उपयोग और गुणवत्ता) में वृद्धि देखी गई है.
- इसके सभी उप-सूचकांकों (पहुंच, उपयोग और समानता) में सुधार देखा गया है.

वित्तीय समावेशन सूचकांक क्या है?

- यह एक व्यापक सूचकांक है जिसमें सरकार और संबंधित क्षेत्रीय नियामकों के परामर्श से बैंकिंग, निवेश, बीमा, डाक के साथ-साथ पेंशन क्षेत्र का विवरण शामिल है.
- इसे भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा 2021 में बिना किसी 'आधार वर्ष' के विकसित किया गया था और हर साल जुलाई में प्रकाशित किया जाता है.

उद्देश्य:

- देश भर में वित्तीय समावेशन की सीमा को जानने के लिए.
- एफआई-इंडेक्स सेवाओं की पहुंच, उपलब्धता और उपयोग में आसानी और सेवाओं की गुणवत्ता के लिए उत्तरदायी है, जिसमें 97 संकेतक शामिल हैं.

पैरामीटर:

- यह 0 और 100 के बीच एक ही मान में वित्तीय समावेशन के विभिन्न पहलुओं पर जानकारी एकत्र करता है, जहां 0 पूर्ण वित्तीय बहिष्करण को दर्शाता है और 100 पूर्ण वित्तीय समावेशन को इंगित करता है.
- इसमें तीन व्यापक पैरामीटर (कोष्ठक में दर्शाए गए प्रतिशत) शामिल हैं, जैसे, पहुंच (35%), उपयोग (45%), और गुणवत्ता (20%), इनमें से प्रत्येक में विभिन्न आयाम शामिल हैं, जिनकी गणना कई संकेतकों के आधार पर की जाती है.
- सूचकांक सभी 97 संकेतकों के लिए सेवाओं की पहुँच, उपलब्धता और उपयोग में आसानी और सेवाओं की गुणवत्ता के प्रति उत्तरदायी है.

एफ आई (FI) सूचकांक का महत्व क्या है?

➢ **समावेशन का माप स्तर:**

- यह वित्तीय समावेशन के स्तर पर जानकारी प्रदान करता है और आंतरिक नीति निर्माण में उपयोग के लिए वित्तीय सेवाओं को मापता है.

➢ **विकास संकेतक :**

- इसे सीधे विकास संकेतकों में एक समग्र माप के रूप में उपयोग किया जा सकता है.

➢ **जी20 संकेतकों को पूरा करें :**

- यह जी20 वित्तीय समावेशन संकेतक आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम बनाता है.
- जी20 संकेतक राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर वित्तीय समावेशन और डिजिटल वित्तीय सेवाओं की स्थिति का आकलन करते हैं.

➢ **शोधकर्ताओं को सुविधा प्रदान करें:**

- यह शोधकर्ताओं को वित्तीय समावेशन और अन्य व्यापक आर्थिक चर के प्रभाव का अध्ययन करने की सुविधा भी देता है.

वित्तीय समावेशन को किफायती लागत पर कमजोर वर्गों और निम्न आय समूहों जैसे कमजोर समूहों द्वारा वित्तीय सेवाओं और समय पर

और पर्याप्त ऋण तक पहुंच सुनिश्चित करने की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है.

भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में, वित्तीय समावेशन विकास प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है. आजादी के बाद से, क्रमिक सरकारों, नियामक संस्थानों और नागरिक समाज के संयुक्त प्रयासों ने देश में वित्तीय-समावेश जाल को बढ़ाने में मदद की है.

समय के साथ वित्तीय समावेशन की स्थिति में काफी सुधार हुआ है. हालाँकि, वित्तीय समावेशन सबसे गरीब लोगों तक नहीं पहुँच पाया है और इसमें कई बाधाएँ और चुनौतियाँ मौजूद हैं जिन पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है.

इस प्रकार, बैंक रहित आबादी का लाभ उठाने और उन्हें वित्तीय दायरे में लाने की बहुत बड़ी आवश्यकता और संभावना दोनों मौजूद है.

वित्तीय समावेशन पहल

जन धन-आधार-मोबाइल (JAM) त्रिमूर्ति

- आधार, पीएमजेडीवाई के संयोजन और मोबाइल संचार में वृद्धि ने नागरिकों के सरकारी सेवाओं तक पहुंचने के तरीके को नया आकार दिया है.
- मार्च 2020 में अनुमान के मुताबिक, जन धन योजना के तहत लाभार्थियों की कुल संख्या 38 करोड़ से अधिक हो गई है.
- व्यक्तिगत पहचान की अवधारणा को महत्वपूर्ण रूप से बदलकर, आधार ने न केवल एक सुरक्षित और आसानी से सत्यापन योग्य प्रणाली ला दी है, बल्कि इसे प्राप्त करना भी आसान है और साथ ही वित्तीय समावेशन प्रक्रिया में भी मदद मिली है.
- सरकार ने वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने और देश में गरीबों और बैंक रहित लोगों को सशक्त बनाने के लिए वित्तीय सुरक्षा प्रदान करने के लिए कई प्रमुख योजनाएं भी शुरू की हैं.
- इनमें प्रधानमंत्री मुद्रा योजना , स्टैंड-अप इंडिया योजना , प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना , प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना और अटल पेंशन योजना शामिल हैं.

ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में वित्तीय सेवाओं का विस्तार

- भारतीय रिजर्व बैंक और राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) ने ग्रामीण क्षेत्रों में वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने के लिए पहल की है.
  - ☐ इनमें सुदूर इलाकों में बैंक शाखाएं खोलना भी शामिल है.
  - ☐ किसान क्रेडिट कार्ड (KCC) जारी करना
  - ☐ स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) को बैंकों से जोड़ना.
  - ☐ स्वचलित टेलर मशीनों (एटीएम) की संख्या बढ़ाना.
  - ☐ बैंकिंग का व्यवसाय संवाददाता मॉडल, आदि.

डिजिटल भुगतान को बढ़ावा

- एनपीसीआई द्वारा यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस (यूपीआई) को मजबूत करने से डिजिटल भुगतान पहले की तुलना में सुरक्षित हो गया है.
- आधार-सक्षम भुगतान प्रणाली (एईपीएस) आधार सक्षम बैंक खाते (एईबीए) को माइक्रो एटीएम का उपयोग करके किसी भी स्थान पर और किसी भी समय उपयोग करने में सक्षम बनाती है.
- अनस्ट्रक्चर्ड सप्लीमेंट्री सर्विस डेटा (यूएसएसडी) जैसे ऑफ़लाइन लेनदेन-सक्षम प्लेटफार्मों के कारण भुगतान प्रणाली को और अधिक सुलभ बना दिया गया है , जो बुनियादी मोबाइल हैंडसेट पर भी इंटरनेट के बिना मोबाइल बैंकिंग सेवाओं का उपयोग करना संभव बनाता है.

वित्तीय साक्षरता बढ़ाना

- भारतीय रिज़र्व बैंक ने ''परियोजना वित्तीय साक्षरता'' नामक एक परियोजना शुरू की है.
- परियोजना का उद्देश्य स्कूल और कॉलेज जाने वाले बच्चों, महिलाओं, ग्रामीण और शहरी गरीबों, रक्षा कर्मियों और वरिष्ठ नागरिकों सहित विभिन्न लक्षित समूहों तक केंद्रीय बैंक और सामान्य बैंकिंग अवधारणाओं के बारे में जानकारी प्रसारित करना है.
- पॉकेट मनी भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (SEBI) और नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ सिक्योरिटीज मार्केट्स (NISM) का प्रमुख कार्यक्रम है जिसका उद्देश्य विद्यालय के छात्रों के बीच वित्तीय साक्षरता बढ़ाना है.
- इसका उद्देश्य विद्यालय के छात्रों को पैसे के मूल्य और बचत, निवेश और वित्तीय योजना के महत्व को समझने में मदद करना है.

वित्तीय समावेशन: सफलता की कहानी

बैंकों तक पहुंच बढ़ी

- विश्व बैंक के वैश्विक वित्तीय समावेशन डेटाबेस या ग्लोबल फाइंडेक्स रिपोर्ट (2017) के अनुसार, 2014 में अनुमानित 53% के मुकाबले 80% भारतीय वयस्कों के पास बैंक खाता है.
- फाइंडेक्स 2017 की रिपोर्ट का यह भी अनुमान है कि 77% भारतीय महिलाओं के पास बैंक खाते हैं, जबकि 2014 में यह आंकड़ा 43% था.

गुणक प्रभाव

- इन पहलों ने लोगों तक वित्तीय सेवाओं की अंतिम-मील कनेक्टिविटी बढ़ाने के लिए बड़े बदलाव लाए हैं.
- समाज के वंचित और हाशिए पर रहने वाले वर्गों को वित्तीय संसाधनों तक पहुंच प्रदान करके, वित्तीय समावेशन में गरीबी को कम करने, रोजगार पैदा करने आदि की क्षमता है.

नागरिकों की सक्रिय भागीदारी बढ़ाना

- पहले, निजी संस्थान गरीबों के साथ महत्वपूर्ण पैमाने पर ग्राहक के रूप में नहीं जुड़ते थे.
- यह अब बदल गया है, और निजी खिलाड़ियों (पेटीएम, एयरटेल मनी और जियो मनी जैसे भुगतान बैंक) की सक्रिय भागीदारी रही है, क्योंकि उन्हें यह भी एहसास हुआ है कि गरीबों को वित्तीय दायरे में लाना उनके बिजनेस मॉडल के लिए भी फायदेमंद है. .

वित्तीय सेवाओं का एकीकरण

- प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (डीबीटी) योजना के साथ जेएएम ट्रिनिटी का अभिसरण काफी हद तक सफल रहा है.
- इससे लक्षित और सटीक भुगतान के मामले में उल्लेखनीय सुधार हुआ है.
- इसने प्रविष्टियों के दोहराव को कम करने और भुगतान के नकद मोड पर निर्भरता को कम करने में भी मदद की है.

संबद्ध चुनौतियाँ

✓ **बैंक खातों तक गैर-सार्वभौमिक पहुंच**

- बैंक खाते सभी वित्तीय सेवाओं का प्रवेश द्वार हैं. लेकिन, विश्व बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में लगभग 190 मिलियन वयस्कों के पास कोई बैंक खाता नहीं है, जिससे भारत चीन के बाद बैंक रहित आबादी के मामले में दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा देश बन गया है.

✓ **डिजिटल डिवाइड**

- डिजिटल प्रौद्योगिकी को अपनाने में सबसे आम बाधाएँ जो वित्तीय समावेशन पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती हैं:
- उपयुक्त वित्तीय उत्पादों की अनुपलब्धता
- डिजिटल सेवाओं का उपयोग करने के लिए हितधारकों के बीच कौशल की कमी
- बुनियादी ढांचे के मुद्दे
- कम आय वाले उपभोक्ता जो डिजिटल सेवाओं तक पहुंचने के लिए आवश्यक तकनीक का खर्च उठाने में सक्षम नहीं हैं.

✓ **घाटा लागू करें**

- उदाहरण के लिए, जन धन योजना के परिणामस्वरूप कई निष्क्रिय खाते खुले हैं जिनमें कभी वास्तविक बैंकिंग लेनदेन नहीं हुआ था.
- ऐसी सभी गतिविधियों से संस्थानों पर लागत आती है, और इस प्रकार, बड़ी परिचालन लागत केवल वास्तविक उद्देश्य के लिए हानिकारक साबित होती है.
- इन प्रतिकूल परिणामों से बचने के लिए, यह महत्वपूर्ण है कि सभी हितधारक ऐसे कार्यक्रमों में उचित इरादे से भाग लें, न कि केवल इसके लिए की सहभागिता करना आवश्यक है.

✓ **अनौपचारिक और नकदी-प्रधान अर्थव्यवस्था**

- भारत में भारी नकदी वाली अर्थव्यवस्था है, यह डिजिटल भुगतान अपनाने के लिए एक चुनौती है.
- इसके अलावा, अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) के अनुसार, भारत में लगभग 81% नियोजित व्यक्ति अनौपचारिक क्षेत्र में काम करते हैं.
- लेनदेन के नकद मोड पर उच्च निर्भरता के साथ-साथ एक विशाल अनौपचारिक क्षेत्र का संयोजन डिजिटल वित्तीय समावेशन में बाधा उत्पन्न करता है.

✓ **वित्तीय समावेशन में लिंग अंतर**

- 2017 ग्लोबल फाइंडेक्स डेटाबेस के अनुसार, 2017 में भारत में 15 वर्ष से अधिक उम्र के 83% पुरुषों के पास 77% महिलाओं की तुलना में एक वित्तीय संस्थान में खाते थे.
- इसका कारण सामाजिक-आर्थिक कारक हैं, जिनमें मोबाइल हैंडसेट और इंटरनेट डेटा सुविधा की उपलब्धता महिलाओं की तुलना में पुरुषों में अधिक है.

✓ **ऋण प्रवेश का अभाव**

- कम आय वाले परिवारों और अनौपचारिक व्यवसायों को ऋण प्रदान करने में मुख्य बाधाओं में से एक उनकी ऋण पात्रता निर्धारित करने के लिए औपचारिक ऋणदाताओं के पास उपलब्ध जानकारी की कमी है. इसके परिणामस्वरूप ऋण की लागत अधिक हो जाती है.
- इसके चलते 2016 में भारत में प्रति 1,000 वयस्कों पर ऋण खातों की संख्या 154 थी. ब्रिक्स देशों जैसी समान स्थिति वाली अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में यह काफी कम है.

उठाए जाने वाले कदम

- **बैंकिंग संवाददाता मॉडल को पुनर्जीवित करना**
  - देश के हर कोने में शाखाएँ खोजने की अव्यवहार्यता को देखते हुए, संभावित ग्राहकों तक पहुँचने के लिए बैंक संवाददाताओं का उपयोग किया जाता है. हालाँकि, अपर्याप्त मुआवजा संरचना संवाददाता बैंकिंग को अनाकर्षक बनाती है.
  - इस प्रकार, बैंकिंग संवाददाताओं के लिए बेहतर मौद्रिक प्रोत्साहन बनाने के साथ-साथ उन्हें बेहतर प्रशिक्षण प्रदान करने की आवश्यकता है.
- **जेएएम ट्रिनिटी का लाभ उठाना**
  - परिवारों और अनौपचारिक व्यवसायों के लिए ऋण-योग्यता के मूल्यांकन में सुधार के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जाना चाहिए.
  - उचित प्रौद्योगिकी को अपनाने के साथ एक नया डेटा-शेयरिंग ढांचा (जन धन और आधार प्लेटफार्मों का उपयोग करके), डेटा गोपनीयता बनाए रखने के लिए पर्याप्त सुरक्षा उपायों के साथ, ऋण तक आसान पहुंच सक्षम करने के लिए.
- **डेटा सुरक्षा व्यवस्था की आवश्यकता**
  - अधिक डिजिटलीकरण के अलावा, देश में साइबर सुरक्षा और डेटा सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करने की भी आवश्यकता है.
- **विभेदित बैंकों का लाभ उठाना**
  - भुगतान बैंकों और छोटे वित्त बैंकों जैसे विभेदित बैंकों का लाभ वंचित क्षेत्रों में भुगतान प्रणालियों को बढ़ाने के लिए उठाया जा सकता है.
- **ग्रामीण क्षेत्रों के लिए यूएसएसडी को बढ़ावा देना**
  - यूएसएसडी चैनल के माध्यम से भुगतान को बढ़ावा दिया जाना चाहिए (यूएसएसडी प्रक्रिया में किए गए शुल्क की प्रतिपूर्ति करके), क्योंकि इंटरनेट पर उनका लाभ यह है कि यह गैर-स्मार्टफोन उपयोगकर्ताओं के एक बड़े हिस्से को भी कवर कर सकता है.
  - भारत में, यूएसएसडी ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष रूप से उपयोगी हो सकता है जहां कुछ क्षेत्रों में अभी भी इंटरनेट तक विश्वसनीय पहुंच नहीं है

निष्कर्ष

भारत में वित्तीय समावेशन की सफलता के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण होना चाहिए जिसके माध्यम से मौजूदा डिजिटल प्लेटफॉर्म, बुनियादी ढांचे, मानव संसाधन और नीति ढांचे को मजबूत किया जाए और नए तकनीकी नवाचारों को बढ़ावा दिया जाए.

यदि मौजूदा समस्याओं से निपटने के लिए पर्याप्त उपाय किए जाते हैं, तो वित्तीय समावेशन में गरीबों के आर्थिक विकास के लाभों को बढ़ाने की क्षमता है.

संजय राज
मुख्य प्रबंधक (संकाय)
सर एसपीबीटी महाविद्यालय

The Nexus of Data, Biology, and Technology in Yuval Noah Harari's Thought

Yuval Noah Harari, in books like Homo Deus and 21 Lessons for the 21st Century, introduces a powerful conceptual framework: the nexus of data, biology, and technology. This convergence, he argues, is reshaping the future of humanity more profoundly than any past revolution. The fusion of artificial intelligence, biotechnology, and big data is creating tools that can not only process the external world but also penetrate and manipulate human consciousness itself.

At the heart of this nexus is the idea that organisms are algorithms, and life can be broken down into data flows. This allows AI systems to analyze biometric and behavioral data to predict — and even influence — human decisions. As technology begins to "hack humans," the boundary between organic life and digital systems blurs, raising existential questions about autonomy and identity.

Harari warns that this nexus can lead to digital dictatorships, where governments or corporations wield unprecedented control over individuals through surveillance technologies and behavior-predicting algorithms. As AI grows in capability, it risks creating a new class divide — not just economic, but biological — between those who can afford cognitive and genetic enhancements and those who cannot, giving rise to a so-called "useless class."

Another consequence is the rise of Dataism, a worldview that sees the universe as a flow of data and values information processing above human feelings or free will. This challenges liberal humanism, which places individual rights and choices at the center.

Harari calls for ethical reflection and global cooperation to regulate these forces. Without it, the nexus may lead to a future where freedom, equality, and even consciousness are redefined or lost entirely.

Anand Charandas Ingale
Manager IT
Central Office, Mumbai

GENERALI Central
INSURANCE

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने फ्यूचर जनरली इंडिया इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड में 24.91% और फ्यूचर जनरली इंडिया लाइफ इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड में 25.18% हिस्सेदारी हासिल की है. यह अधिग्रहण बैंक के बीमा क्षेत्र में प्रवेश को चिह्नित करता है.

अध्ययन दौरे पर पुणे में पधारी माननीय संसदीय समिति के माननीय सदस्यों का अभिवादन करते हुए श्री एम वी मुरली कृष्णा, कार्यपालक निदेशक महोदय. इस दौरान माननीय कार्यपालक निदेशक की अध्यक्षता में टाउन हॉल मीटिंग तथा कॉर्पोरेट कस्टमर मीट का आयोजन किया गया.

PROJECT

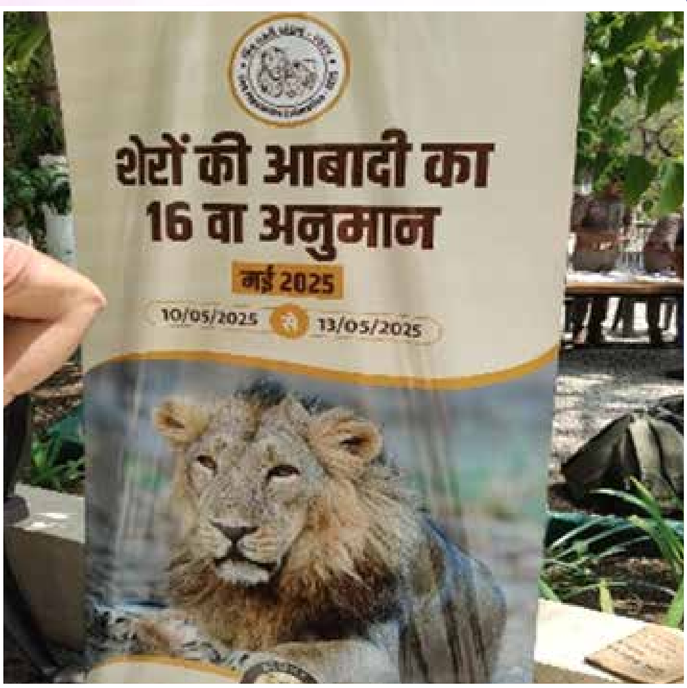

हमें आपको अवगत कराते हुए प्रसन्नता हो रही है कि गुजरात के सासन गिर और आसपास के क्षेत्रों में एशियाई शेरों की गणना हेतु गिनती के अभियान में हमारे सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय, अहमदाबाद के स्टाफ सदस्य श्री रवि, मुख्य प्रबंधक, एवं श्री भाविन ओझा, सहायक प्रबंधक को नामित किया गया था. इस गिनती अभियान में न्यायपालिका के जज, राष्ट्रीय और राज्य वन्य प्राणी बोर्ड के सदस्य, विश्वविद्यालयों के कुलपति ने भी सहभागिता की. इसे भविष्य में प्रोजेक्ट लायन और वैज्ञानिक प्रबंधन की दिशा में अहम सफलता के रूप में देखा जा रहा है.

आत्मनिर्भर भारत में: युवाओं की भूमिका

प्रस्तावना:

''आत्मनिर्भर भारत'' आज का एक शक्तिशाली अभियान है, जिसका उद्देश्य भारत को हर क्षेत्र में स्वावलंबी बनाना है - आर्थिक, तकनीकी, सामाजिक और सांस्कृतिक. इस अभियान की नींव 2020 में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने रखी थी, जब उन्होंने कोरोना महामारी के दौरान देश को आत्मनिर्भर बनने का आह्वान किया. आत्मनिर्भरता का अर्थ केवल उत्पादन और व्यापार तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानसिक, बौद्धिक और सामाजिक स्तर पर भी स्वतंत्रता और विश्वास को दर्शाता है.

इस अभियान की सफलता का सबसे मजबूत स्तंभ हैं - भारत के युवा. आज का युवा केवल सपने देखने वाला नहीं, उन्हें साकार करने वाला बन चुका है. उसके विचार, संकल्प और नवाचार ही आत्मनिर्भर भारत की दिशा तय कर रहे हैं.

भारत के युवाओं की विशेषता:

भारत विश्व का सबसे युवा राष्ट्र है. लगभग 65% जनसंख्या 35 वर्ष से कम आयु की है. यह आंकड़ा सिर्फ संख्या नहीं, बल्कि एक विशाल ऊर्जा स्रोत है. युवा वर्ग में अद्भुत जोश, सीखने की ललक, तकनीकी समझ और रचनात्मकता है. ये गुण भारत को न केवल आत्मनिर्भर बना सकते हैं, बल्कि वैश्विक नेतृत्व की ओर भी अग्रसर कर सकते हैं.

युवाओं की भूमिका

1. **स्वरोजगार और स्टार्टअप्स के माध्यम से:**

   सरकार के स्टार्टअप इंडिया, मेक इन इंडिया जैसे अभियानों से प्रेरित होकर आज युवा अपनी कंपनियाँ शुरू कर रहे हैं. तकनीक, कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यटन, रक्षा, पर्यावरण जैसे क्षेत्रों में कई स्टार्टअप देश के लिए रोजगार के नए अवसर ला रहे हैं. ये युवा आत्मनिर्भरता की असली मिसाल हैं.

2. **कौशल और नवाचार में अग्रणी:**

   आज के युवा केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं है. वे मशीन लर्निंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डेटा साइंस, रोबोटिक्स, ऐप डेवलपमेंट जैसे नए क्षेत्रों में महारत हासिल कर रहे हैं. ऐसे तकनीकी कौशल आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिए अत्यंत आवश्यक हैं.

3. **स्वदेशी उत्पादों को अपनाकर:**

   युवा वर्ग अब विदेशी ब्रांड्स की अंधी दौड़ से हटकर देशी उत्पादों और सेवाओं को प्राथमिकता दे रहा है. ''वोकल फॉर लोकल'' के मंत्र को अपनाकर युवा देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत कर रहे हैं.

4. **डिजिटल इंडिया के चालक:**

   डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर युवा बेहद सक्रिय हैं. चाहे वह शिक्षा का डिजिटलीकरण हो, ई-कॉमर्स हो या डिजिटल सेवाएँ - युवा वर्ग ने डिजिटल भारत को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है.

5. **समाजसेवा और जागरूकता अभियान:**

   कोविड-19 के समय में युवाओं ने जिस तरह से समाज की सेवा की, मास्क वितरण, जागरूकता अभियान, रक्तदान शिविर आदि में भागीदारी दिखाई - वह सराहनीय थी. इसी तरह वे स्वच्छ भारत, पर्यावरण संरक्षण, महिला सुरक्षा जैसे अभियानों में भी सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं.

6. **सोशल मीडिया पर जागरूकता:**

   युवा सोशल मीडिया के माध्यम से समाज में जागरूकता फैला रहे हैं- स्वदेशी अपनाने, स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण जैसे मुद्दों पर.

चुनौतियाँ और समाधान:

- **रोजगार की कमी:**

  आज भी बड़ी संख्या में शिक्षित युवा बेरोजगार हैं. इसका समाधान केवल सरकारी नौकरियाँ नहीं हैं, बल्कि उन्हें स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना और स्टार्टअप्स को बढ़ावा देना होगा.

- **कौशल में असमानता:**

  हर युवा को गुणवत्तापूर्ण तकनीकी शिक्षा और प्रशिक्षण उपलब्ध नहीं है. इसके लिए सरकार और निजी क्षेत्र को साथ मिलकर कार्य करना होगा.

- **प्रवास और ब्रेन ड्रेन:**

  प्रतिभाशाली युवा विदेशों की ओर आकर्षित हो जाते हैं. यदि भारत में नवाचार, अनुसंधान और बेहतर अवसर उपलब्ध हों, तो वे अपने देश में ही योगदान देंगे.

सरकार की पहलें जो युवाओं को सशक्त बना रही हैं:

- प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY)
- स्टार्टअप इंडिया योजना
- अटल इनोवेशन मिशन
- डिजिटल इंडिया कार्यक्रम
- मुद्रा योजना और स्टैंडअप इंडिया योजना

इन सभी योजनाओं का लाभ लेकर युवा अपनी योग्यता को एक दिशा दे सकते हैं.

निष्कर्ष:

युवा किसी भी देश का भविष्य ही नहीं, बल्कि उसका वर्तमान भी होते हैं. आत्मनिर्भर भारत का सपना तभी साकार होगा, जब युवा अपने अंदर आत्मविश्वास, नेतृत्व और देशभक्ति की भावना लेकर आगे बढ़ेंगे. वे केवल अपने लिए नहीं, बल्कि समाज और देश के लिए सोचेंगे. जब एक-एक युवा 'मेक इन इंडिया', 'स्टार्टअप इंडिया' और 'वोकल फॉर लोकल' जैसे अभियानों से जुड़ेगा, तब भारत न केवल आत्मनिर्भर बनेगा, बल्कि विश्वगुरु बनने की राह पर अग्रसर होगा.

''युवा परिवर्तन के वाहक हैं, और आत्मनिर्भर भारत उनके सपनों से ही आकार लेता है.''

रुपाली देव बर्मण
प्रबंधक (मुशलपुर शाखा)
क्षेत्रीय कार्यालय, बरपेटा रोड

गुरु

गुरु की रजक धूल हो साथ,
ज्ञान का है भंडार,
नित अमृत कराते जो वाणी से,
सुकोमल को कराते ज्ञान का पान
दे अपना अमूल्य समय, जो करें
विज्ञान का प्रसार,
ममता मय जिनका हृदय है,
विश्व अवलोकित कराते हमें,
ज्ञान चक्षु खोलते हैं जो सबके,
जिनके चेहरे पर अदम्य धैर्य,
जो संयम संतोष की हैं मूर्तिकार
सब त्याग कर, करते हैं अपने शिष्य का श्रृंगार
जिनकी छाया में होता है निज नव नूतन
अनंत ज्ञान है जिनका ,

आओ करे ऐसे गुरु की उपासना .....
जो जलाते हैं ज्ञान की लौ
करते हैं जीवन को उजागर
फैली है लालिमा जिनकी
सूर्य प्रकाश से प्रखर
प्रकाश पुंज की तरह है,
अवलोकित जो शिखर पर
आओ करें ऐसे गुरु की उपासना ....
जड़ चेतन में जो करते,

है नव जीवन की ललक
बालक को बनाते ईश्वर
बिरल धारा बहती है जिनमें
समुद्र सी गहराई है जिनमें,
हवा के स्पंदन से शीतल करते
आओ करे ऐसे गुरु की उपासना .....
नित प्रति दिन फैले ज्ञान जिनका
जो हैं प्रकृति के उपासक
हिमालय जैसा प्रखर मस्तक
गंगा जैसी फैली ज्ञान पताका
गाँव गाँव , शहर - शहर में
फैले जिनका ज्ञान,
जो करते सबका उपकार
आओ करे ऐसे गुरु की उपासना ..... !!!!!!

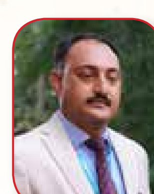

अमित कुमार गुप्ता
वरिष्ठ प्रबंधक (सू.प्रौ)
सर एसपीबीटी महाविद्यालय

श्री करणी माता मंदिर, देशनोक, बीकानेर: चूहों का दिव्य धाम

बीकानेर, राजस्थान का एक प्रमुख ऐतिहासिक और सांस्कृतिक शहर है. यह अपनी धरोहर, स्थापत्य कला और परंपराओं के लिए प्रसिद्ध है. इस शहर से लगभग 30 किलोमीटर की दूरी पर एक प्रमुख गाँव है देशनोक. यहाँ का मुख्य आकर्षण है श्री करणी माता मंदिर, जिसे चूहों का मंदिर भी कहा जाता है. यह मंदिर अपनी अनोखी विशेषताओं और धार्मिक मान्यताओं के कारण पर्यटकों और भक्तों को अपनी ओर आकर्षित करता है.

श्री करणी माता मंदिर का इतिहास 15वीं शताब्दी से है. वर्तमान मंदिर का निर्माण 20वीं शताब्दी में बीकानेर के महाराजा गंगा सिंह ने करवाया था. करणी माता को दुर्गा का अवतार माना जाता है और वे चारण जाति की एक संत महिला थीं. करणी माता ने अपने जीवनकाल में कई चमत्कार किये और उनकी महिमा को सुनकर लोग उनकी आराधना करने लगे. कहा जाता है कि उन्होंने कई राजाओं को आशीर्वाद देकर युद्धों में विजय दिलाई और अपनी शक्तियों से लोगों की समस्याओं का समाधान किया.

महाराणा कुम्भा और बीकानेर के संस्थापक राव बीका उनके प्रमुख अनुयायियों में से थे. करणी माता की मृत्यु के बाद, उनके भक्तों ने इस मंदिर का निर्माण किया, जो समय के साथ एक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल बन गया.

मंदिर का वास्तुशिल्प बेहद सुंदर और आकर्षक है. सफेद संगमरमर से निर्मित इस मंदिर की दीवारों पर बारीक नक्काशी की गयी है. मुख्य द्वार चाँदी का बना है और इसमें देवी करणी माता की विभिन्न मुद्राओं की मूर्तियाँ उकेरी गयी हैं. मंदिर के अंदर देवी करणी माता की प्रतिमा सफेद संगमरमर की बनी है और उनके चारों ओर सैकड़ों चूहे घूमते रहते हैं. मंदिर का आँगन खुला और विशाल है, जहाँ भक्तजन दर्शन के लिए एकत्र होते हैं. मंदिर की छत पर भी सुंदर नक्काशी और चित्रांकन किया गया है जो राजस्थानी स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण है.

करणी माता मंदिर की ख्याति चूहों वाले मंदिर के रूप में भी है. मंदिर में हजारों काले और कुछ सफेद चूहे हैं. सफ़ेद चूहे बहुत कम समय दिखायी देते हैं. इन चूहों को ''कावा'' कहा जाता है. मान्यता है कि ये चूहे करणी माता के वंशज हैं और उनकी आत्माओं का वास इन चूहों में है. मंदिर के अंदर चूहों के लिए विशेष सुरंगें और मार्ग बनाये गये हैं, जिससे वे बिना किसी बाधा के मंदिर के विभिन्न हिस्सों में घूम सकते हैं. मंदिर में चूहों को भोजन कराना शुभ माना जाता है. भक्तजन दूध, लड्डू और अन्य प्रसाद चूहों को अर्पित करते हैं. मान्यता है कि यदि कोई भक्त सफेद चूहे के दर्शन कर ले, तो उसकी मनोकामना पूरी होती है. सफेद चूहों को करणी माता का अवतार माना जाता है और इन्हें देखना अत्यंत शुभ माना जाता है.

करणी माता के भक्तों का विश्वास है कि मंदिर के चूहे उन्हें आशीर्वाद देने के लिए आते हैं और उनकी हर मनोकामना पूर्ण करते हैं. कभी कभी चूहों की संख्या ज्यादा होती है और श्रद्धालु मंदिर में चलते समय पैर नीचे रखकर रेंगते हुए चलते हैं कि कोई चूहा पैर से दब नहीं जाये. मंदिर में चूहों को किसी प्रकार की हानि पहुँचाना अत्यंत अशुभ माना जाता है और भक्तजन इनकी सुरक्षा का विशेष ध्यान रखते हैं. मान्यता है कि अगर किसी चूहे की पैर से दबकर मृत्यु हो जाये तो उस व्यक्ति को सोने या चाँदी का चूहा दान करना चाहिए.

इतने चूहों के रहते हुए भी वहाँ कभी बिल्ली या इन्हें नुकसान पहुँचाने वाले अन्य जीव वहाँ दिखायी नहीं देते.

करणी माता मंदिर में प्रतिवर्ष नवरात्रि के दौरान विशेष आयोजन होते हैं. इस दौरान हजारों भक्तजन यहाँ दर्शन करने आते हैं और देवी करणी माता की आराधना करते हैं. इसके अलावा, हर वर्ष करणी माता की जयंती और महापूजा का आयोजन भी धूमधाम से किया जाता है. विदेशी पर्यटक भी इस मंदिर की विशिष्टता को देखने के लिए यहाँ आते हैं.

मंदिर के निकट ही रेल और बस सेवाएं उपलब्ध हैं, जिससे यहाँ पहुँचना आसान है. बीकानेर से देशनोक तक के सफर में अरावली की सुंदर पहाड़ियों और राजस्थान की पारंपरिक ग्रामीण जीवनशैली का आनंद लिया जा सकता है.

करणी माता मंदिर, बीकानेर एक ऐसा धार्मिक स्थल है जहाँ आस्था और अनोखी परंपराओं का संगम देखने को मिलता है. यहाँ के चूहों के प्रति लोगों की श्रद्धा और उनकी सुरक्षा के लिए किए गए प्रयास इस मंदिर को अद्वितीय बनाते हैं. करणी माता के भक्तों के लिए यह मंदिर एक पवित्र तीर्थस्थल है और पर्यटकों के लिए एक रोचक पर्यटन स्थल. इस मंदिर में लगभग 25000 से ज्यादा चूहे वर्षों से रह रहे लेकिन इनके कारण कभी कोई विकट बीमारी की बात नहीं सुनी गयी.

करणी माता मंदिर न केवल धार्मिक महत्व रखता है बल्कि यह राजस्थान की समृद्ध संस्कृति और परंपराओं का भी प्रतीक है. यहाँ की यात्रा न केवल आध्यात्मिक अनुभव प्रदान करती है बल्कि हमारे इतिहास और लोककथाओं की गहराइयों में भी ले जाती है. इस मंदिर की विशेषता और धार्मिक महत्ता इसे राजस्थान के महत्वपूर्ण और अद्वितीय धार्मिक स्थलों में से एक बनाती है.

विभूति बी. झा,
क्षेत्रीय प्रमुख, जोधपुर

आंचलिक कार्यालय हैदराबाद में पदस्थ मुख्य प्रबंधक श्री अनुपम पाण्डेय के सुपुत्र कक्षा - आठवीं के छात्र अर्नव पाण्डेय को Brainobrain International Abacus प्रतियोगिता में चेम्पियंस ट्रॉफी, WIZ National Spell Bee प्रतियोगिता में ट्रॉफी तथा बॉब वण्डर किड नेशनल इंटर स्कूल प्रतियोगिता में गोल्ड मेडल प्राप्त हुआ. सेन्ट्रलाइट परिवार आपके उज्जवल भविष्य की कामना करता है.

दिनांक 02.05.2025 को आदरणीय कार्यपालक निदेशक श्री विवेक वाही सर की अध्यक्षता में तथा कोलकाता अंचल के अंचल प्रमुख श्री पी.सी. खुराना, सिलीगुड़ी क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रमुख श्री कुमार प्रभार राजू, कूचबिहार क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रमुख श्री कृष्णा माधव, जलपाईगुड़ी क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रमुख श्री रणधीर कुमार सिंह, गंगटोक शाखा के सहायक महाप्रबंधक श्री नीरज कुमार रंजन एवं सिलीगुड़ी की उपस्थिति में टाउन हॉल बैठक का आयोजन किया गया. इस अवसर पर आदरणीय कार्यपालक निदेशक महोदय के कर-कमलों से सिलीगुड़ी क्षेत्र के अंतर्गत डी.पी.एस. पंचनई शाखा के नये परिसर का शुभारम्भ किया गया.

बैंकिंग और वित्तीय क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: 2025 में परिवर्तन की नई लहर

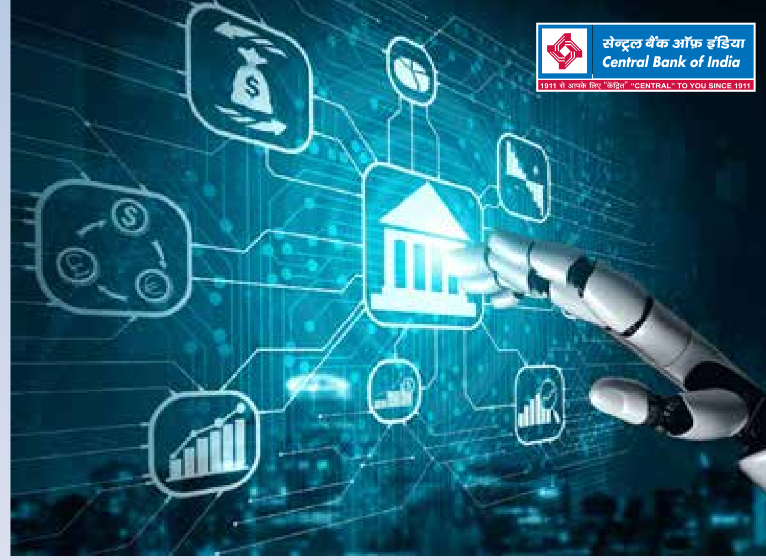

परिचय

वर्तमान डिजिटल युग में, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस केवल एक तकनीकी नवाचार नहीं रह गया है, बल्कि यह बैंकिंग और वित्तीय संस्थानों (FIs) के लिए प्रतिस्पर्धात्मक लाभ का प्रमुख आधार बन गया है. 2025 में प्रवेश करते हुए, एआई बैंकिंग क्षेत्र को एक नई दिशा में ले जा रहा है, जहाँ ग्राहक सेवा से लेकर धोखाधड़ी की पहचान, ऋण वितरण, संचालन और नीति-निर्माण तक हर पहलू में क्रांति आ रही है.

बैंकों और वित्तीय संस्थाओं के लिए एआई अब ''भविष्य की तकनीक'' नहीं रही, बल्कि यह आज की अनिवार्यता बन चुकी है. यह लेख इस बात पर केंद्रित है कि एआई कैसे बैंकिंग अनुभव को अत्यधिक व्यक्तिगत, सुरक्षित, सुलभ और उत्तरदायी बना रहा है, और आने वाले समय में इस क्षेत्र में क्या प्रमुख परिवर्तन देखने को मिल सकते हैं.

1. एआई द्वारा संचालित हाइपर-पर्सनलाइजेशन

2025 में, ग्राहक अनुभव को बेहतर बनाना केवल विकल्प नहीं, आवश्यकता बन चुका है.

एआई अब पारंपरिक सेगमेंटेशन से आगे बढ़ चुका है और ग्राहकों के व्यवहार, लेन-देन इतिहास, सोशल मीडिया इंटरैक्शन और यहां तक कि वॉयस टोन तक का विश्लेषण कर सकता है. इससे बैंक न केवल ग्राहकों की जरूरतों का पूर्वानुमान लगा सकते हैं, बल्कि उन्हें उनके लिए उपयुक्त वित्तीय उत्पाद भी समय पर प्रदान किए जा सकते हैं.

उदाहरण:

- अगर किसी ग्राहक का मासिक खर्च बढ़ रहा है, तो एआई आधारित प्रणाली उसे बजट प्रबंधन टूल या ऋण कंसोलिडेशन का सुझाव दे सकती है.
- चैटबॉट्स और वर्चुअल असिस्टेंट्स अब केवल सामान्य सवालों के जवाब नहीं दे रहे, बल्कि जटिल वित्तीय सलाह भी दे पा रहे हैं.

2. धोखाधड़ी रोकथाम और जोखिम प्रबंधन में एआई की भूमिका

बढ़ते साइबर अपराधों के बीच, एआई अब बैंकिंग सेक्टर का सुरक्षा कवच बन गया है.

2025 तक अधिकांश बैंक रियल-टाइम धोखाधड़ी की पहचान के लिए मशीन लर्निंग मॉडल्स का उपयोग कर रहे हैं, जो हर लेन-देन को स्कैन करते हैं और किसी भी असामान्यता को तुरंत पहचान लेते हैं.

मुख्य परिवर्तन:

- बिहेवियरल बायोमेट्रिक्स: ग्राहक का सामान्य व्यवहार (जैसे टाइपिंग स्पीड, मोबाइल पकड़ने की गति) रिकॉर्ड करके सुरक्षा उपाय.
- रियल-टाइम अलर्ट सिस्टम: संदिग्ध गतिविधियों पर तुरन्त अलर्ट भेजना.
- फिशिंग/मैलवेयर की पहचान: ईमेल और लिंक को स्कैन करके ग्राहकों को सचेत करना.

3. डिजिटल ऋण प्रणाली और क्रेडिट निर्णयों में एआई का प्रयोग

परंपरागत ऋण प्रणाली अक्सर केवल क्रेडिट स्कोर पर निर्भर करती थी, जिससे बड़ी आबादी वित्तीय सेवाओं से वंचित रहती थी.

एआई अब वैकल्पिक डेटा (जैसे मोबाइल उपयोग, सोशल व्यवहार, लेन-देन इतिहास) का विश्लेषण करके जोखिम को अधिक सटीकता से आकलित कर सकता है.

लाभ:

- अंडरबैंक्ड और अनबैंक्ड लोगों को ऋण देना संभव.
- ऋण स्वीकृति प्रक्रिया तेज और सटीक होती है.
- डिफॉल्ट दर में कमी आती है.

4. बैक ऑफिस में ऑटोनोमस बैंकिंग और एआई संचालित संचालन

एआई अब केवल फ्रंट-एंड (जैसे कस्टमर सर्विस) तक सीमित नहीं है, बल्कि बैंकिंग के बैक-एंड संचालन में भी क्रांतिकारी बदलाव ला रहा है.

प्रमुख उपयोग:

- **आरपीए (Robotic Process Automation):** दोहराव वाले कार्य जैसे डेटा एंट्री, रिपोर्ट जनरेशन को स्वचालित करना.
- **भविष्यवाणी विश्लेषण:** लिक्विडिटी मैनेजमेंट और तनाव परीक्षण में सहायता.
- **कानूनी अनुपालन:** रिपोर्टिंग और ऑडिट प्रक्रियाओं का ऑटोमेशन.

इससे न केवल लागत में बचत होती है, बल्कि मानवीय त्रुटियों की संभावना भी घटती है.

5. एआई और एम्बेडेड फाइनेंस: टेलीकॉम कंपनियों के लिए नई क्रांति

एआई के साथ एम्बेडेड फाइनेंस का मेल वित्तीय सेवाओं को टेलीकॉम और अन्य गैर-बैंकिंग प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से ग्राहकों तक पहुंचा रहा है.

2025 में टेलीकॉम कंपनियां भी एआई-आधारित विश्लेषण से ग्राहकों को ई-वॉलेट, माइक्रो-लोन, और बिल भुगतान जैसे वित्तीय उत्पाद प्रदान कर रही हैं.

फायदे:

- वित्तीय समावेशन में तेजी.
- ग्राहकों को एक ही प्लेटफॉर्म पर कई सेवाएँ.
- नए राजस्व स्रोत.

6. नियमों का अनुपालन और एआई गवर्नेंस

एआई के व्यापक उपयोग के साथ-साथ यह भी जरूरी है कि इसके प्रयोग में नैतिकता, पारदर्शिता और जवाबदेही बनी रहे.

2025 में बैंकिंग सेक्टर को अपनाने की दिशा में तेजी से बढ़ रहा है.

मुख्य पहलू:

- एआई निर्णय कैसे लिए जा रहे हैं, इसे समझना और समझाना.
- एआई मॉडलों में पूर्वाग्रह को पहचानना और सुधारना.
- डेटा गोपनीयता और सुरक्षा बनाए रखना.
- नियमित एआई लेखापरीक्षा और समीक्षा.

7. सतत बैंकिंग में एआई की भूमिका

बैंक अब केवल मुनाफा नहीं, बल्कि पर्यावरण और सामाजिक जिम्मेदारियों को भी महत्व दे रहे हैं. एआई इसमें भी मदद कर रहा है:

उदाहरण:

- हरित निवेशों का मूल्यांकन.
- कार्बन फुटप्रिंट का विश्लेषण.
- ईएसजी (Environmental, Social, Governance) स्कोरिंग और रिपोर्टिंग.

इससे बैंक पारिस्थितिक और सामाजिक रूप से उत्तरदायी निर्णय ले सकते हैं.

8. भविष्य की दिशा: उत्तरदायी और नैतिक एआई

भविष्य में, जैसे-जैसे एआई का उपयोग बढ़ेगा, नैतिकता और उत्तरदायित्व और भी महत्वपूर्ण हो जाएंगे.

बैंकों के लिए आवश्यक कदम:

- एआई निर्णयों की निगरानी.
- डेटा का सुरक्षित और गोपनीय उपयोग.
- एआई मॉडल्स का इंसानों द्वारा मूल्यांकन.
- ग्राहकों को पारदर्शिता प्रदान करना.

निष्कर्ष: अब समय है एआई को अपनाने का

2025 तक, बैंकिंग और वित्तीय संस्थान जोएआई की पूरी क्षमता को अपनाएंगे, वे न केवल ग्राहकों को बेहतर सेवाएं प्रदान करेंगे, बल्कि प्रतिस्पर्धा में भी अग्रणी रहेंगे. एआई अब केवल विकल्प नहीं, आवश्यकता बन चुका है.

भविष्य की बैंकिंग एआई-आधारित होगी, और जो संस्थाएं समय रहते इसे अपनाएँगी, वही टिकाऊ, सशक्त और नवोन्मेषी बनेंगी.

निशान्त आनन्द
मुख्य प्रबंधक
केंद्रीय कार्यालय, मुंबई

बैंकिंग में धोखाधड़ी और उससे सुरक्षा

प्रस्तावना

बैंक आधुनिक अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं. ये न केवल हमारे धन की सुरक्षा करते हैं, बल्कि समाज और देश की आर्थिक प्रगति में भी अहम भूमिका निभाते हैं.परंतु जैसे-जैसे बैंकिंग क्षेत्र में तकनीकी विकास हुआ है, वैसे-वैसे बैंकिंग धोखाधड़ी (Banking Fraud) की घटनाएँ भी तेजी से बढ़ी हैं. ये धोखाधड़ियाँ न केवल आर्थिक नुकसान का कारण बनती हैं, बल्कि ग्राहकों का विश्वास भी कम करती हैं. ऐसे में इनसे सुरक्षा और जागरूकता अत्यंत आवश्यक हो गई है.

बैंकिंग धोखाधड़ी क्या है?

बैंकिंग धोखाधड़ी वह अपराध है जिसमें कोई व्यक्ति अवैध या धोखेबाज तरीकों से बैंक या उसके ग्राहकों के धन को हड़पने की कोशिश करता है.इसमें तकनीकी चालन, पहचान की चोरी, जाली दस्तावेज़, ऑनलाइन हैकिंग आदि तरीके शामिल होते हैं.

बैंकिंग धोखाधड़ी के प्रमुख प्रकार

1. **फिशिंग (Phishing)**

   यह एक ऐसी तकनीक है जिसमें धोखेबाज नकली ईमेल या वेबसाइट्स के माध्यम से ग्राहक से उसकी बैंकिंग जानकारी (जैसे OTP, पासवर्ड, कार्ड नंबर) प्राप्त करता है.

2. **विषाणु (Malware) और ट्रोजन अटैक**

   कुछ धोखेबाज कंप्यूटर या मोबाइल में वायरस डालकर बैंकिंग एप्लिकेशन से डेटा चुरा लेते हैं.

3. **क्रेडिट/डेबिट कार्ड फ्रॉड**

   कार्ड क्लोनिंग या चोरी कर के धोखेबाज व्यक्ति फर्जी लेन-देन करते हैं.

4. **स्मिशिंग (Smishing)**

   ग्राहकों को एसएमएस के माध्यम से फर्जी लिंक भेजे जाते हैं और जैसे ही ग्राहक उस पर क्लिक करता है, उसकी जानकारी चोरी हो जाती है.

5. **साइबर धोखाधड़ी (Cyber Fraud)**

   इसमें सोशल मीडिया, व्हाट्सएप कॉल्स या एप्स के माध्यम से लोगों को बहला-फुसलाकर धोखा दिया जाता है.

6. **आंतरिक धोखाधड़ी**

   कभी-कभी बैंक कर्मियों की मिलीभगत से भी धोखाधड़ी की जाती है, जैसे जाली दस्तावेजों से ऋण जारी करना.

बढ़ती बैंकिंग धोखाधड़ी के कारण

1. **डिजिटल साक्षरता की कमी**

   ग्रामीण क्षेत्रों या बुजुर्गों में तकनीकी जानकारी की कमी के कारण वे आसानी से धोखेबाजों के जाल में फँस जाते हैं.

2. **अत्यधिक विश्वास**

   बहुत से ग्राहक किसी को भी ओटीपी या बैंकिंग डिटेल्स दे देते हैं, जो धोखाधड़ी का कारण बनता है.

3. **साइबर सुरक्षा में कमियाँ**

   कई बार बैंक या ग्राहक मजबूत सुरक्षा उपायों का पालन नहीं करते.

4. **जागरूकता की कमी**

ग्राहकों को नहीं पता होता कि कौन सी जानकारी साझा करनी है और कौन सी नहीं.

बैंकिंग धोखाधड़ी के दुष्परिणाम

1. **आर्थिक नुकसान**

ग्राहकों और बैंकों दोनों को भारी वित्तीय क्षति होती है.

2. **विश्वास की हानि**

लोग डिजिटल बैंकिंग से डरने लगते हैं और पारंपरिक तरीकों पर लौट जाते हैं.

3. **बैंक की छवि पर असर**

बार-बार धोखाधड़ी की खबरें आने से बैंक की प्रतिष्ठा गिरती है.

4. **लंबी कानूनी प्रक्रिया**

एक बार धन चला गया तो उसे वापस पाने की प्रक्रिया काफी कठिन और समय लेने वाली होती है.

बैंकिंग धोखाधड़ी से बचाव के उपाय

1. **ग्राहकों के लिए सुझाव:**

❖ कभी भी ओटीपी, पासवर्ड या कार्ड जानकारी किसी से साझा न करें.

❖ बैंक कभी भी फोन या ईमेल पर आपकी व्यक्तिगत जानकारी नहीं मांगता.

❖ किसी भी अनजान लिंक या ऐप पर क्लिक न करें.

❖ मोबाइल और कंप्यूटर पर अच्छे एंटीवायरस का उपयोग करें.

❖ बैंकिंग ट्रांजेक्शन के समय दो-स्तरीय सत्यापन (2FA) का प्रयोग करें.

❖ अपने खातों की नियमित निगरानी करें और संदिग्ध गतिविधि पर तुरंत बैंक को सूचित करें.

2. **बैंकों के लिए सुझाव:**

❖ ग्राहकों को समय-समय पर जागरूक करने के लिए अभियान चलाएँ.

❖ साइबर सुरक्षा तंत्र को मजबूत करें.

❖ लेन-देन के समय ओटीपी या बायोमेट्रिक सत्यापन लागू

करें.

❖ धोखाधड़ी की शिकायतों पर तेजी से कार्रवाई करें.

3. **सरकार की भूमिका:**

❖ कड़े साइबर कानूनों का निर्माण और क्रियान्वयन.

❖ डिजिटल साक्षरता बढ़ाने के लिए ग्रामीण स्तर तक प्रशिक्षण कार्यक्रम.

❖ धोखाधड़ी मामलों की शीघ्र न्यायिक प्रक्रिया के लिए विशेष न्यायाधिकरण.

महत्वपूर्ण सरकारी पहलें

❖ डिजिटल साक्षरता अभियान

❖ साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल (https://cybercrime.gov.in/)

❖ भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (I4C)

❖ भारतीय रिज़र्व बैंक की चेतावनी और एसएमएस अलर्ट प्रणाली

निष्कर्ष

बैंकिंग धोखाधड़ी एक गंभीर चुनौती है, लेकिन इससे पूरी तरह बचा जा सकता है यदि ग्राहक, बैंक और सरकार सभी मिलकर कार्य करें. जहां ग्राहकों को सतर्क और जागरूक रहने की आवश्यकता है, वहीं बैंकों को अपने तकनीकी ढाँचे को मजबूत बनाना होगा. सरकार को भी ऐसे मामलों में सख्त कानून और शीघ्र न्याय सुनिश्चित करना होगा.याद रखें - सतर्क नागरिक ही सुरक्षित नागरिक होता है.

अभीप्सा देव चौधरी
सहायक प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय बरपेटा रोड

पदोन्नति

सेन्ट्रलाइट परिवार की ओर से हार्दिक बधाई

श्री ई रतन कुमार,
मुख्य महाप्रबंधक

श्री मुकुल दांडिगे,
मुख्य महाप्रबंधक

सुश्री पॉपी शर्मा,
मुख्य महाप्रबंधक

श्री राजीव रंजन सिन्हा,
महाप्रबंधक

श्री जी. भास्कर,
महाप्रबंधक

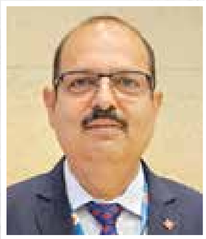

श्री अरविंद कुमार,
महाप्रबंधक

श्री के.के. काला,
महाप्रबंधक

श्री धीरज गोयल,
महाप्रबंधक

श्री दोड्डा रंगप्पा,
उप महाप्रबंधक

श्री राकेश भूतड़ा,
उप महाप्रबंधक

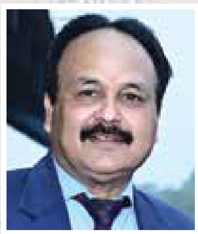

श्री राजेश मिश्रा,
उप महाप्रबधक

श्री नगेन्द्र पाण्डा,
उप महाप्रबंधक

श्री मनोज पांडे,
उप महाप्रबंधक

श्री एन बाला चंद्रन,
उप महाप्रबंधक

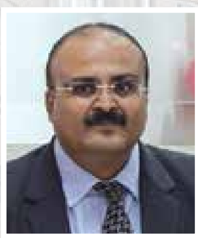

गौरव जैन,
उप महाप्रबंधक

श्री एम वी वी एस वी प्रसाद,
उप महाप्रबंधक

श्री ज्योतिप्रकाश पी,
उप महाप्रबंधक

श्री तारा चंद मीणा,
उप आंचलिक प्रबंधक

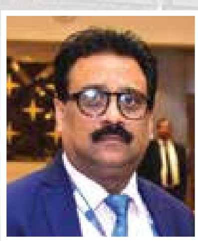

श्री रजत मिश्रा
उप महाप्रबंधक

श्री संजय मलिक,
उप महाप्रबंधक

श्री संजीव कुमार,
उप महाप्रबंधक

श्री सचिन सुधाकर,
उप महाप्रबंधक

श्री सुनील कुमार नायक,
उप महाप्रबंधक

श्री हेमंत शर्मा,
उप महाप्रबंधक

श्री सुजीत कुमार साहू,
उप महाप्रबंधक

श्री अंकेश चौरसिया,
उप महाप्रबंधक

सेवानिवृत्ति

सेवानिवृत्ति उपरांत सुखद एवं दीर्घायु जीवन हेतु मंगलकामनाएं...!!

श्री लक्ष्मण राव,
महाप्रबंधक

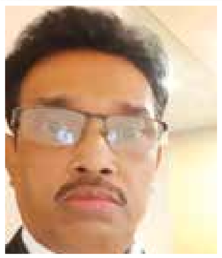

श्री अनादि विश्वास,
उप महाप्रबंधक

श्री के. सुरेश कुमार
उप महाप्रबंधक

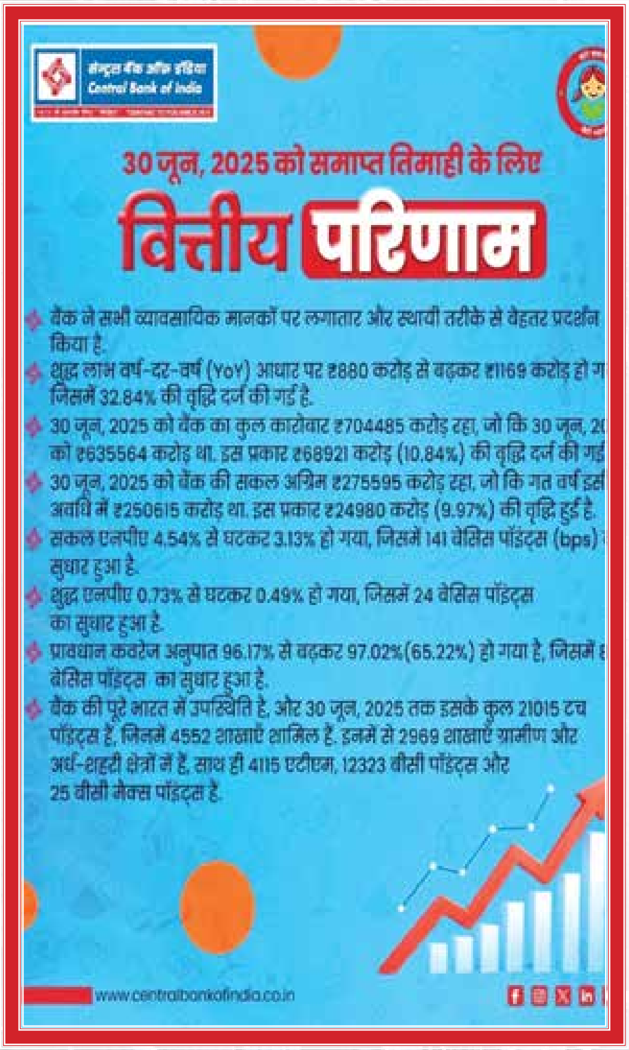

यात्रा-वृत्तांत: नवीनता तथा पुरातनता का संगम - "वाराणसी (काशी/बनारस)"

वाराणसी की गोद में - एक आत्मिक यात्रा

पृथ्वी के वक्ष पर लगभग 15,000 वर्षों से, जीवन के प्रारम्भ से लेकर निर्वाण तक की अंतहीन यात्रा का निरंतर जीवंत साक्षी है- वाराणसी. विश्व के मानचित्र पर इतिहास और वर्तमान का सबसे अधिक जीवंत, लोकप्रिय, पवित्र, धार्मिक, आध्यात्मिक तथा परम्परागत शहर है - वाराणसी. सूक्ष्म से विराट का दर्शन कराने वाला शहर है - वाराणसी. विभिन्न विषमताओं, विचित्रताओं, अंतर्विरोधों में सामंजस्य स्थापित करने वाला शहर है- वाराणसी. भारतीय उपमहाद्वीप की आत्मा को अगर किसी नगर में देखा जा सकता है, तो वह है- वाराणसी.

इसी वर्ष मेरा स्थानान्तरण कानपुर में हुआ, तब से मैं मौका मिलते ही बनारस जाने का सोच रही थी और जल्द ही मुझे मौका मिला, कार्यालय की दो दिन की छुट्टी थी. इन्ही छुट्टियों में मैंने जब वाराणसी की यात्रा करने की ठानी, तो मन में एक विचित्र उत्सुकता और श्रद्धा का भाव था. यह यात्रा न केवल भौगोलिक दूरी तय करने की थी, बल्कि आत्मा के भीतर झाँकने की भी थी.

दिन 1 : पहला दर्शन - बनारस स्टेशन और घाटों की ओर

मैंने अपने छोटे से बैग के साथ सुबह 11:30 बजे जैसे ही ट्रेन से बनारस स्टेशन पर प्रवेश किया, भीड़भाड़, पान की दुकानों की चहल-पहल और बनारसी बोली की मिठास से मेरा स्वागत हुआ. स्टेशन से बाहर निकलते ही मुझे ''हर हर महादेव'' के जयघोष सुनाई दिए. मैं ऑटो से सीधे दशाश्वमेध घाट की ओर चल पड़ी.

घाट की ओर जाने वाले रास्ते संकरे थे, लेकिन हर मोड़ पर कुछ न कुछ रोचक था - कहीं ठेठ बनारसी कचौड़ी-जलेबी की दुकान, कहीं संगीत के सुरों में डूबे बाबा, कही टमाटर चाट की दुकाने और कहीं साधु-संतों की टोली.

पवित्रता का पर्याय बना यह शहर बनारस, गंगा मईया की गोद में पलता है. मां गंगा की अविरल धारा के साथ बनारस की निर्मलता बहती है. गंगा नदी के किनारे बनारस को बसना था या इस नदी को बनारस के किनारे बहना था, मालूम करना आसान नहीं है, क्योंकि बनारस ही पूरी दुनिया में इकलौती ऐसी जगह है, जहां ये नदी अपने बहाव की उल्टी दिशा में यानि **''दक्षिण से उत्तर''** की ओर बहती है.

चौसठ योगिनियों, बारह सूर्य, छप्पन विनायक, आठ भैरव, नौ दुर्गा, बयालीस शिवलिंग, नौ गौरी, महारुद्र और चौदह ज्योतिर्लिंगों वाला ये बनारस, देश की सांस्कृतिक राजधानी है.

बनारसी स्वाद - आत्मा को तृप्त करने वाला

काशी यात्रा में भोजन का भी उतना ही महत्व है जितना घाटों का. यहाँ की कचौड़ी- सब्जी, जलेबी, टमाटर चाट, लस्सी, और सबसे बढ़कर बनारसी पान - सब कुछ अविस्मरणीय है. दोपहर के 2: 30 बज चुके थे और भूख भी लगने लगी थी. घाट के किनारे की दुकानों से मैंने पूरी-सब्जी का स्वाद लिया और जलेबी भी चखी. अभी गंगा आरती में समय था तो मैंने गोदौलिया चौराहे पर एक प्रसिद्ध दुकान से लस्सी पी, जिसके ऊपर मलाई की मोटी परत थी - स्वाद ऐसा जो ज़ुबान पर लंबे समय तक बना रहे.

वह नगरी जो केवल ईंट-पत्थर की नहीं, बल्कि आस्था, इतिहास, अध्यात्म और बेहतरीन स्वाद की जीवंत मिसाल है- वाह बनारस, तेरी क्या बात है.

गंगा आरती - एक दिव्य अनुभूति

शाम के 5 बजे से गंगा आरती की तैयारियां शुरू हो गयी थी. दशाश्वमेध घाट पर होने वाली गंगा आरती का अनुभव शब्दों से परे है. शाम के समय जब सूर्य गंगा के जल में अपनी लालिमा घोलता है, तब घंटियों की गूंज, शंखनाद और दीपों की रौशनी से सारा वातावरण मंत्रमुग्ध हो जाता है. मैंने घाट की सीढ़ियों पर बैठकर आरती का अनुभव किया - युवकों के दल ने समवेत लय में मंत्रोच्चारण के साथ दीप आरती की, और उस समय ऐसा लगा जैसे पृथ्वी और आकाश के बीच एक पुल बन गया हो.

वस्तुत: काशी, मनुष्य के निर्वाणपथ को प्रकाशित करने वाली नगरी है, अर्थात भगवान शिव की परमसत्ता यहां प्रकाशित होती रहती है.

अस्सी घाट और कबीर का बनारस

फिर मैं ऑटो से अस्सी घाट पहुंची. अस्सी घाट वह जगह है जहाँ पर युवा, बुज़ुर्ग, कवि, लेखक, फक्कड़, साधु - सभी एक साथ दिखाई देते हैं. यहाँ की सुबह ''सुबहे बनारस'' के नाम से प्रसिद्ध है - जहाँ योग, संगीत और साहित्य का संगम होता है.

यह घाट कबीर के दर्शन और विचारों की धरती भी है. कबीर की वाणी बनारस के हर कोने में आज भी गूंजती है - ''मोको कहाँ ढूंढे बंदे, मैं तो तेरे पास में...''

फिर गेस्ट हॉउस आकर मैंने खाना खाया और बनारस के अनुभवों को सोचते सोचते पता नहीं कब मेरी आँख लग गयी.

दिन 2 : गलियों की काशी

अगली सुबह 4:30 बजे सुबह मेरे मोबाइल का अलार्म बजा और मैं दूसरे दिन की यात्रा के लिए फिर तैयार थी. मैंने आज काशी की गलियों की ओर रुख किया. वाराणसी की गलियाँ अपने आप में एक जीवित संग्रहालय हैं. कहीं तुलसीदास जी का निवास स्थान, कहीं संत कबीर की विरासत, तो कहीं बनारसी साड़ियों की बुनाई करने वाले कारीगर. इन गलियों में चलते हुए मैंने ठेठ बनारसी पान चखा, और बहुत सारे स्थानीय लोगों से बातचीत की, जिनकी बोलचाल में एक खास अपनापन था.

काल भैरव और काशी विश्वनाथ मंदिर - मोक्ष की प्रतीक्षा

सुबह के 8:00 बजे मैं काल भैरव के दर्शन के बाद काशी विश्वनाथ मंदिर के सामने थी. वाराणसी की यात्रा काशी विश्वनाथ मंदिर के दर्शन के बिना अधूरी है. वाराणसी, काशी शाश्वत सदाशिव की नगरी, अपने आप में विचित्रता और विशिष्टता समेटे हुए है.

भवभूति सदाशिव ने माता गौरी के साथ कैलाश से उतर कर, काशी की धरा को जब अपना स्थायी निवास बनाया, उसी क्षण से काशी त्रैलोक्य में न्यारी हो गई. रही सही कसर, मोक्ष दायिनी मां गंगे ने सदाशिव की नगरी के शीर्ष को अपना स्थायी स्पर्श दे कर, इस नगरी के प्रति आस्था, इसके सौन्दर्य तथा आकर्षण को चार चांद लगा कर पूरी कर दी.

काशी विश्वनाथ मंदिर केवल शिवभक्तों के लिए नहीं, बल्कि हर उस व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण है जो आध्यात्म की तलाश में है. मंदिर परिसर में सुरक्षा बहुत सख्त थी, लेकिन वहां का आध्यात्मिक माहौल सभी परेशानियों को हल्का कर देता है. 'विश्व के नाथ' के दर्शन करते समय मेरा मन एक अजीब सी शांति से भर गया. मुझे समझ में आया कि क्यों कहा जाता है कि काशी में मृत्यु भी मोक्षदायी होती है.

सांस्कृतिक अनुभव - संगीत, कला और बनारसी अंदाज़

वाराणसी केवल धार्मिक नगरी नहीं, बल्कि कला और संस्कृति की राजधानी भी है. मैंने संकट मोचन मंदिर में दर्शन करने के बाद मंदिर के पास आयोजित एक शास्त्रीय संगीत सभा में हिस्सा लिया.

बनारस की हस्तकला, खासकर बनारसी साड़ियों, लकड़ी की नक्काशी और मृदंग-तबले जैसे वाद्य-निर्माण का काम भी बहुत प्रसिद्ध है. मैंने एक बुनकर के घर जाकर देखा कि कैसे महीनों की मेहनत से एक बनारसी साड़ी बनती है - हर धागे में कला, धैर्य और परंपरा की झलक थी. मैंने अपने लिए कुछ साड़ियां खरीदी और शाम 6 बजे के आसपास ऑटो लेकर मणिकर्णिका घाट की ओर निकल पड़ी.

मणिकर्णिका घाट - जीवन और मृत्यु का संगम

काशी का एक अन्य नाम 'महाशमशान' अशुद्धि का द्योतक है. वस्तुत: सही शब्द 'श्मशान' है. 'श्म' का अर्थ है 'शव' तथा 'शान' का अर्थ है, 'लेटना'. काशी का मणिकर्णिका घाट, जिसे मोक्ष भूमि कहा जाता है, एक ऐसी जगह है जहाँ मृत्यु को भी उत्सव की तरह देखा जाता है. यहाँ चिताएँ जलती रहती हैं - दिन-रात.

काशी में शमशान की भूमि को सर्वाधिक पवित्र माना जाता है. स्कंद पुराण के अनुसार यहां मानव पुण्यात्माएं निवास करती हैं, फलत: इसका नाम महाश्मशान पड़ा. पद्म पुराण में भगवान शंकर स्वंय कहते हैं कि 'काशी अविमुक्त प्रेतभूमि है अत: मैं संहारक के रूप में यहां रहकर संसार का कल्याण करता हूं'.

मैंने कुछ देर वहाँ चुपचाप बैठकर उस शाश्वत सत्य को महसूस किया - मृत्यु केवल अंत नहीं, बल्कि नये आरंभ की भूमिका है. बनारस में मृत्यु से डराया नहीं जाता, उसे सहज भाव से स्वीकारा जाता है. रात के 9:30 बज रहे थे और 11:55 की मेरी वापसी की ट्रेन थी. घाट से मैं सीधे स्टेशन की ओर चल दी.

विदा बनारस - एक नया जीवन लेकर

शिव के इस दरबार में दशाश्वमेध घाट, अस्सी घाट, मणिकर्णिका घाट, हरिश्चन्द्र घाट सहित चौरासी से ज्यादा घाट हैं. कुछ नई कहानियां अस्सी घाट से शुरु होती है, तो वहीं कुछ का अन्त मणिकर्णिका घाट पर होता है. बड़े-बड़े सन्त-महात्मा ज्ञान पाने के लिए यहां आते हैं और फिर यहीं के होकर रह जाते हैं.

वाराणसी से विदा लेना आसान नहीं था. यहाँ के अनुभवों ने मेरी आत्मा को एक नई दृष्टि दी. यह नगरी केवल दर्शनीय स्थल नहीं, बल्कि जीवन की पाठशाला है. यहाँ आकर जीवन के असली अर्थ - क्षणभंगुरता, मोह, माया, भक्ति, कला, प्रेम और मृत्यु - सब कुछ सामने आ जाता है.

जब मैं मणिकर्णिका घाट से स्टेशन की ओर लौट रही थी, तो मन भारी था लेकिन आत्मा हल्की - जैसे कुछ पीछे छूट रहा हो, और कुछ नया साथ चल रहा हो.

काशी की यात्रा मेरे लिए एक साधारण भ्रमण नहीं, बल्कि आध्यात्मिक जागरण था. अगर आपने कभी जीवन को गहराई से महसूस करना चाहा है, तो एक बार बनारस जरूर जाइए. यहाँ की हवा में जो सच्चाई है, वह कहीं और नहीं मिलेगी. यह वह नगर है, जहाँ मृत्यु भी मुस्कुराती है और जीवन भक्ति में रम जाता है.

अमरीकी लेखक मार्क ट्वेन, बनारस के बारे में कहते हैं-

''बनारस इतिहास से भी अधिक प्राचीन है. परम्परा की दृष्टि से भी अतिशय प्राचीन. मिथकों से भी कहीं अधिक प्राचीन है और यदि तीनों (इतिहास, परम्परा और मिथक) को एक साथ रखा जाए तो यह उनसे दोगुनी प्राचीन है.''

निधि चौकसे
वरिष्ठ प्रबन्धक - सूचना प्रौद्योगिकी
जेड.सी.सी., आंचलिक कार्यालय, दिल्ली

कासा अभियान : जोड़ो, बढ़ाओ, कमाओ

भारतीय संस्कृति विशेषत: हिंदू धर्म में तो शुभ-लाभ की परिकल्पना अवश्यंभावी है. व्यवसाय चाहें कोई भी हो, प्रत्येक अवसर खाताबंदी, नव-वर्ष, दीपावली पूजन इत्यादि में शुभ के साथ लाभ की कामना की जाती है अर्थात् जो कार्य किया जाए वह हमें शुभ हो, मंगल हो, उसमें हमारा या किसी अन्य यानि ग्राहक, का भी अशुभ व अमंगल न हो, यह पहली शर्त है. उसके पश्चात् उस व्यवसाय में लाभ भी अवश्य हो. वाणिज्यिक संस्थान के लिए तो लाभप्रदत्ता ऑक्सीजन की भांति है. जिस प्रकार ऑक्सीजन के अभाव में प्राणी मृतप्राय: हो जाता है उसी प्रकार लाभप्रदत्ता के बिना किसी भी व्यवसाय या वाणिज्यिक संस्थान के परिचालन की कल्पना ही नहीं की जा सकती. इन सब तथ्यों से जो निकलकर आता है, उसे आप वही घिसा-पिटा वाक्य कह सकते हैं कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है एवं उसे अपने सामाजिक रीति-रिवाज, मान्यताओं, परम्पराओं के निवर्हन व जीविका चलाने के लिए अर्थ की आवश्यकता आदिकाल से रही है. अर्थ के महत्व को किसी भी युग में नकारा नहीं गया.

प्रमुख वाणिज्यिक संस्थान के नाते बैंक को भी लाभ कमाना है किंतु अनेक सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक, निजी बैंक, सहकारी बैंक, ग्रामीण बैंक एवं महानगरों में विदेशी बैंक के चलते जमा अग्रिम व ब्याज दरों में गलाकाट प्रतिस्पर्धा मची हुई है. भारतीय रिजर्व बैंक, जो पहले ब्याज दरें नियंत्रित करता था, अब उदारीकरण के चलते अनेक नीतियों में बैंकों को स्वतंत्र कर चुका है. निजी बैंकों द्वारा बचत खातों पर सरकारी बैंकों से डेढ़ गुणा तक ब्याज ऑफर किया जा रहा है जिसका सीधा कारण है सामान्य से कुछ ज्यादा ब्याज देकर अल्प लागत जमाएं प्राप्त की जाए व इसे ऊंची दरों पर बड़े उद्योगपतियों को देकर अधिकाधिक लाभार्जन किया जाए. प्रश्न यह उठता है कि यही निजी बैंक दीर्घकालीन सावधि जमाओं पर अधिक ब्याज ऑफर क्यों नहीं कर रहे हैं. स्पष्ट है कि ऐसा करने में उनकी लागत अधिक व लाभ कम होगा.

बैंक जनता से कम ब्याज दर पर जमाएं प्राप्त करता है व उन्हें अधिक ब्याज दर पर उधार के रूप में बांट देता है. ब्याज दर के अंतर में से परिचालन व्यय निकालने के पश्चात् लाभ की गणना की जाती है. आईये ! हम इस लागत के गणित को कासा, निम, ब्याज स्प्रेड, इन्ट्रेस्ट मार्जिन जैसे तकनीकी शब्दों व आंकड़ों के भ्रमजाल में उलझने की बजाय आम बोलचाल के सरल शब्दों में समझ लें. चालू व बचत जमाओं पर हमें कम ब्याज देना पड़ता है जबकि सावधि जमाओं पर अधिक ब्याज देने से हमारे द्वारा ऋण पर कमाए गए ब्याज में से लाभ कि मात्रा कम हो जाती है. अत: स्पष्ट है कि यदि सावधि जमाओं की तुलना में बचत व चालू जमाएं अधिक होंगी तो लाभ अधिक होगा इसके विपरीत लाभ कम होता जाएगा. इससे आप भली-भांति समझ गए होंगे कि संस्थान की लाभप्रदता के लिए कम लागत पर जमाएं प्राप्त करना कितना आवश्यक है. यह अल्प लागत की जमाएं हमारे पास बचत खाते व चालू खाते के रूप में रहती हैं. इनमें से बचत खाते पर हमें कम ब्याज दर पर व चालू खाते पर बिना कोई ब्याज चुकाए जमाएं प्राप्त होती है. इन्हीं को बैंकिंग शब्दावली में 'कासा' (करंट एकाउंट व सेविंग एकाउंट CASA) कहा गया है.

अब अगला प्रश्न उठता है कि कम लागत पर जमाएं कहां से व कैसे प्राप्त हो सकती हैं? क्या कोई ऐसा जादुई चिराग है जिसे रगड़ने पर हमें ये जमाएं बिना किसी विशेष प्रयास या रणनीति के मिल जाएंगी? जी नहीं! ऐसा नहीं है कि हमें बैंक के काउंटर या कैबिन में बैठे बिठाए लोग आकर जमाएं दे जाएंगे. इसके लिए हमें कुछ विशेष रणनीति बनानी होगी. विगत वर्षों में आयकर के जंजाल से बचने के लिए बड़े निवेशकर्ताओं ने शेयर मार्केट, कमोडिटी, प्रॉपर्टी मार्केट अथवा गोल्ड खरीद की ओर रुख कर लिया. यद्यपि प्रॉपर्टी मार्केट में इन दिनों मंदी भी छायी हुई है तथापि जो पैसा वहां विनियोजित हो चुका है वह वापस नहीं लाया जा सकता वह अटक गया, गोल्ड खरीद द्वारा भी लोगों ने तरल मुद्रा की जगह सोना जमा कर लिया. वैसे भी बड़े निवेशक कम ब्याज पर राशि बैंक में जमा करने की प्रवृति त्यागकर अधिक जोखिम वहन कर धनोपार्जन के नए-नए तरीके ढूंढते रहते है.

भारतीय रिजर्व बैंक ने भी बैंकों को ब्याज दरें स्वयं निर्धारित करने की छूट दे दी है. भारतीय बैंक संघ की पहल पर बैंकों ने अब बल्क डिपोजिट की ओर भागने की आदत पर लगाम कसना भी शुरू कर दिया है. आज बैंकों के समक्ष दो ही मुख्य चुनौतियां हैं, कासा जमाओं में अपेक्षानुरूप वृद्धि न होना व एनपीए में अप्रत्याशित वृद्धि. इसीलिए अभी हाल ही में कुछ प्रमुख बैंकों ने अधिक जमा प्राप्ति के लिए अपनी ब्याज दरों में बढ़ोतरी की है. बैंकों द्वारा गाहे-बगाहे 'कासा' यानि चालू व बचत खाते खोलकर जमाएं प्राप्ति का अभियान छेड़ा जा चुका है. ऐसे में 'कासार्जन' हेतु एक ही उम्मीद की किरण है, लघु व मध्यम निवेशक . जी हां! भले ही आपको यह पढ़ने में एक बकवास आइडिया लगे किंतु जरा भारतवर्ष के इस विशाल आबादी वर्ग की ओर नजर उठाकर तो देखिए! क्या पूरे विश्व के व्यापार समूहों की नजरें इस वर्ग की ओर नहीं हैं? बात चाहें एक साधारण सी मोबाइल सिम बेचने की हो या नमक की थैली. हर कोई इस विशाल आबादी वर्ग को भुनाने की कोशिश कर रहा है किंतु बैंक अभी इस ओर सुस्त रवैया अपनाए हुए हैं. यह सही है कि वित्तीय समावेशन के कारण इस वर्ग को बैंक से जोड़ने के प्रयास अवश्य हुए हैं किंतु अभी भी शहरी क्षेत्र में आपको ऐसे लोग मिल जाएंगे जिनका बैंक खाता नहीं है वे छोटी बचत करना चाहते हैं किंतु उन्हें एक अनजाने अपमान का भय सताता है कि बैंक की विशाल बिल्डिंग में ए.सी. के

वातावरण में जाकर यदि वे यह कहेंगे कि हमें रु.500/- से खाता खुलवाना है. रु. 300/ जमा करवाने अथवा रू. 200/- निकलवाने हैं तो कहीं हमारा मजाक न बनाया जाए. हम पढ़े-लिखे नहीं है, खाता तो शिक्षित लोग खुलवा सकते हैं. हमारे जैसों का बैंकों में क्या काम !

आवश्यकता है ऐसे वर्ग को उन्हीं के परिवेश में जाकर उनके बच्चों व भविष्य की आवश्यकताओं के बारे में बताकर उनसे छोटी-छोटी नियमित बचतें प्राप्त करना. ऐसा वर्ग चलकर हमारे बैंक में कभी नहीं आने वाला. इसके लिए हमें दूरदराज के ग्रामीण अंचलों में, विभिन्न कामगारों, दस्तकारों के समूह में, शहरी क्षेत्र की ऐसी बस्तियों, कारखानों व लघु उद्यमियों के कार्यस्थल इत्यादि पर जाकर उन्हें बैंक से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित करना होगा. उनके लिए विशेष अभियान, शिविर व मेले आयोजित कर नो फ्रिल, मित्र खाते खोलने होंगे. जो बैंक पहले यह प्रयास प्रारंभ कर देगा वह इसमें दीर्घगामी सफलता प्राप्त कर लेगा. क्योंकि यह वर्ग क्षणिक लाभ के लिए या यों कहिए जरा से ब्याज के अंतर के लिए आसानी से अपनी निष्ठा को नहीं बदलता है. हालांकि हम वित्तीय समावेशन द्वारा समग्र विकास की नीति के चलते बैंक रहित क्षेत्र के लोगों को बैंक से जोड़ रहे हैं किंतु यही कार्य कासा प्राप्ति के पावन उद्देश्य को ध्यान में रखकर आक्रामक रूप से किया जाए तो नतीजे कुछ भिन्न होंगे. साथ ही समाज के ऐसे लोग बैंकिंग से जुड़कर देश की अर्थव्यवस्था को संबल प्रदान करने में व भ्रष्टाचार उन्मूलन में सहायक सिद्ध होंगे. बस आवश्यकता है हम बड़े व संस्थागत निवेशकों की तलाश कर जमा प्राप्ति के लिए उनकी मान-मनौव्वल की बजाय अपना ध्यान इस बैंकरहित जनसमूह की ओर केंद्रित करें.

मैंने कई नियमित रूप से काम करने वाले कुशल कारीगरों, मजदूरों व घरेलू नौकरों से व्यक्तिगत रुप से संपर्क किया तो पाया कि उन्हें प्रतिदिन 350 से लेकर 1000 रूपए तक दिहाड़ी के रूप में मिल जाते हैं. ठेके पर अथवा पूरे परिवार को लगाकर काम करने पर कई बार यह राशि बढ़ भी जाती है. ग्रामीण परिवेश के होने के कारण, थोड़ी-बहुत खेती से प्राप्त उपज, ईंधन, पशुधन इत्यादि से उनका जीविकोपार्जन भी हो जाता है किंतु बचत की राशि से बैंक खाता खोलने के नाम पर वे संकोच करते हैं. वे अपनी बचत अपने आढ़तियों, ठेकेदारों या मालिकों के पास बिना किसी ब्याज आय के वक्त जरुरत पर वापस लेने की शर्त पर यों ही रख छोड़ते हैं. जबकि बैंक द्वारा उन्हें इस बचत पर ब्याज भी दिया जा सकता है एवं एटीएम कार्ड के माध्यम से 24 घंटे तरलता व घर-परिवार में मनी ट्रांसफर की सुविधा भी उपलब्ध हो सकती है. बैंक में नियमित लेनदेन से साख बनने पर ऋण सुविधा प्राप्ति भी हो सकती है.

ऐसे कुछ लोग जो शहरों अथवा विदेश में बसे हैं वे अपने परिवार को नियमित रूप से राशि भिजवाते हैं. उनके परिवारों को अपने खर्चों में कुछ कटौतियां कर लघु बचत के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है. यदि एक-एक शाखा 1 माह में ऐसे 50 लोगों को भी अपने साथ जोड़ लेती है तो इनमें से एक-एक परिवार के खाते में एक वर्ष में न्यूनतम अथवा अधिकतम शेष रू. 10000/- तक हो सकता है व शाखा को मिलेगी 5 से 15 लाख तक की अल्प लागत पर स्थाई जमाएं. विदेशों में बसे लोगों के परिवारों के मामले में यह राशि बहुत ज्यादा भी हो सकती है. यहां यह भी आवश्यकता है कि उन्हें इस प्रकार से समझाया जाए कि यह राशि वे स्थाई रूप से अपने भविष्य की आवश्यकताओं जैसे बेटे-बेटियों की उच्च शिक्षा, शादी अथवा किसी बीमारी के उपचार अथवा मकान खेत खरीद के वक्त ही निकालने की सोचें अन्यथा नहीं, तो निश्चित मानिए यह राशि लंबे समय तक आपके यहां रहेगी.

हमारे स्कूल शिक्षा के दौर में कुछ शाखाओं के प्रबंधक 5-10 रूपए के बचत व आर.डी. खाते खोलने बैंक से आते थे, उस दौर में एक राष्ट्रीयकृत बैंक प्रतिनिधि के अनुरोध पर मैंने भी विद्यालय में खाता खोलकर 5 साल बाद उस राशि से अपने लिए एक टेपरिकॉर्डर खरीदा था. आज स्कूलों के बच्चों के खाते खोलने का वैसा रुझान नजर नहीं आता है. कहने को आज विद्यार्थी खाता योजना है. किंतु सभी बैंकों का इन खातों के प्रति उदासीन रवैया है. विद्यार्थी आज भी बैंक से जुड़ने को लालायित हैं किंतु शाखा में आने पर उनका वैसा स्वागत नहीं हो पाता है. केवाईसी, मनी लॉण्ड्रिंग जैसी औपचारिकताओं के हौवे से बैंक कर्मी भी खाता न खोलने हेतु विवश हो जाते हैं. आवश्यकता है एक सीमित राशि के खाते व उनका लेनदेन नाममात्र की औपचारिकताओं पर अनुमत होना चाहिए.

निर्धारित सीमा के पार होने पर ही खाताधारक से सभी आवश्यक औपचारिकताओं की मांग की जानी चाहिए. यदि इस योजना को धरातलीय स्तर पर लागू किया जाए तो कोई संदेह नहीं कि हम ऐसी जमाएं प्राप्त कर सकते हैं जो अन्यथा जेबों में, बक्सों में, किचन के डिब्बों, मिट्टी की गुल्लकों में व सुरक्षा के नाम पर पड़ौसियों के यहां काम आ रही होती. मिनी डिपॉजिटर्स के माध्यम से छोटे व्यापारियों, रिक्शा, रेहड़ी चालकों, महिला कामगारों से दैनिक बचत संग्रहण की जाती थी, वह व्यवस्था भी मृतप्राय: हो चुकी है. ऐसे लोगों के एक सीमित राशि के बचत खाते खोलकर एक ओर तो उन्हें बैंकिंग व एटीएम जैसी सुविधाएं देकर समाज की मुख्य धारा में होने का अहसास कराया जा सकता है वहीं दूसरी ओर इनसे अल्प लागत जमाएं प्राप्त की जा सकती हैं. जो आज कमजोर है, विपन्न है, भाग्य के दूसरे चक्र में वही सामर्थ्यवान व सम्पन्न बन जाता है तब वह उस बैंक को कभी नहीं भूलता जिसने उसे विपन्नता के दौर में अपने साथ जोड़कर संबल प्रदान किया था, वही ग्राहक आगे चलकर हमारा स्थायी और निष्ठावान ग्राहक बन जाता है फिर तो उसे हमारे अन्य उत्पाद जैसे मेडिक्लेम व लाइफ इंश्योरेंस, गोल्ड कॉईन, क्रेडिट कार्ड इत्यादि से भी आसानी से जोड़ा जा सकता है.

इसी प्रकार हमारे यहां अभी बहुत बड़ा व्यापारी समूह भी ऐसा है जो बैंक में खाता नहीं रखता है, छोटे-छोटे व्यवसाय करने वाले बैंक में जाने,

खाता खुलवाने व औपचारिकताएं पूरी करने में झंझट के नाम से खाता ही नहीं खुलवाते. ऐसे वर्ग को भी लक्षित कर अपने साथ जोड़ा जाए तो उनके चालू खातों के रूप में अल्प लागत जमाएं प्राप्त की जा सकती हैं. भारतीय अर्थव्यवस्था बचत प्रधान है इसी कारण विश्वव्यापी मंदी के दौर में भी भारतीय बाजार डगमगाए नहीं हैं. हमारी घरेलू बचत का प्रतिशत अन्य सम्पन्न राष्ट्रों के मुकाबले कहीं ज्यादा है. हमारे यहां पाश्चात्य खर्चवादी नीति नहीं है, इस गुरुमंत्र को ध्यान में रखकर यदि कार्य किया जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं कि कासा जमाओं के भंडार भरे जा सकते हैं. यह इतना व्यापक कार्यक्षेत्र बन सकता है कि जहां बैंकों की आपस में भी कोई प्रतिद्वंद्विता नहीं होगी जैसी कि बल्क डिपोजिट प्राप्ति में देखने को मिलती है. एक मोबाइल सेवा प्रदाता कंपनी ने सस्ती दरों पर समाज के कमजोर तबकों को सिम वितरित की थी, सस्ते प्लान दिए. तब सम्पन्न वर्ग ने इस योजना का माखौल उड़ाया था. किंतु कंपनी की इसी दूर-देशी नीति का नतीजा है कि आज समाज के वे सभी लोग मोबाइल सिम को न केवल अपने नियमित खर्च का हिस्सा बना चुके हैं वरन् इस हिस्से में नियमित बढ़ोतरी कर कंपनी को लाभान्वित कर रहे हैं. साथ ही ये लोग अपने परिवार / व्यवसाय से नियमित संपर्क में बने रहने का लाभ भी उठा रहे हैं.

बात फिर वहीं पर खत्म होती है जहां से शुरू हुई थी कि यदि हम देश की एक विशाल आबादी समूह के शुभ की चिंता करेंगे, उनके उत्थान का प्रयास करेंगे, फिर हमारा लाभ तो निश्चित है, अवश्यंभावी है. अल्पकाल में यह विचार एक मिथक लग सकता है किंतु दीर्घकाल में इस रणनीति के सफल होने में कोई संदेह ही नहीं है. एक प्रसिद्ध टेलीकॉम कंपनी इसका जीवंत उदाहरण है. तो आईये ! आप और हम सब मिलकर गणेशजी का स्मरण कर शुभ-लाभ की कामना के साथ आज से ही इस दिशा में कार्य प्रारंभ करें क्योंकि :

'हम मिलकर ऐसा कर सकते हैं और करेंगे भी.'
अधिकाधिक कासा जमाओं की प्राप्ति
'एक बैंक ,एक टीम एक स्वप्न'

नीरज ज्योतिर्मय
क्षेत्रीय प्रमुख
पूर्णिया

माननीय कार्यपालक निदेशक, श्री महेन्द्र दोहरे की अध्यक्षता में एवं महाप्रबंधक श्री डी.पी. खुराना जी की उपस्थिति में पटना अंचल में टाउन हॉल बैठक का आयोजन किया गया

बैंकिंग क्षेत्र: अवसर और चुनौतियां

लगभग एक दशक तक खराब ऋण (Bad Loan) की बढ़ती चुनौतियों से जूझने के बाद हाल के समय में भारत की बैंकिंग प्रणाली में उल्लेखनीय पुनरुत्थान नजर आया है. नीति निर्माताओं के ठोस प्रयासों और बैंकों द्वारा उठाए गए सक्रिय कदमों की बदौलत बैंकिंग क्षेत्र वर्तमान में अधिक सुरक्षित स्थिति में है.

हालांकि ऐतिहासिक पैटर्न को ध्यान में रखें तो भारतीय बैंकों के लिए सकारात्मक प्रक्षेपवर्क मौद्रिक नीतियों और भू-राजनीतिक जोखिमों जैसी बाहरी अनिश्चताओं के प्रभाव के प्रति अभी भी संवेदनशील बना हुआ है.

समय के साथ भारतीय बैंकों का विकास किस प्रकार हुआ?

पहली पीढ़ी की बैंकिंग(आरंभ से वर्ष 1947 तक)

- स्वतंत्रता से पहले की अवधि में स्वदेशी आंदोलन के कारण कई छोटे एवं स्थानीय बैंकों की स्थापना हुई, जिनमें से अधिकांश को मुख्य रूप से आंतरिक धोखाधड़ी, परस्पर - संबंध उधारी और व्यापार एवं बैंकिंग गतिविधियों के एकीकरण के कारण असफलता का सामना करना पड़ा.

दूसरी पीढ़ी की बैंकिंग (1947-1967)

- भारतीय बैंकों ने संसाधनों के समेकन को सक्षम किया, जो सीमित संख्या में व्यावसायिक परिवारों या समूहों के लिए खुदरा जमा के माध्यम से जुटाए गए और जिसके परिणाम स्वरुप कृषि क्षेत्र की और ऋण के प्रवाह की अनदेखी हुई.

तीसरी पीढ़ी की बैंकिंग (1967-1991)

- सरकार ने दो चरणों (वर्ष 1969 और वर्ष 1980) में 20 प्रमुख निजी बैंकों के राष्ट्रीयकरण और वर्ष 1972 में प्राथमिकता क्षेत्रक ऋण की शुरुआत कर उद्योग एवं बैंकों के बीच के संबंध को सफलतापूर्वक भंग कर दिया.
- इन उपायों से 'क्लास बैंकिंग' से मास बैंकिंग की ओर संक्रमण की राह खुली और ग्रामीण भारत में शाखा नेटवर्क के व्यापक विस्तार, सार्वजनिक जमा की पर्याप्त गतिशीलता और कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों में ऋण प्रवाह की वृद्धि पर अनुकूल प्रभाव पड़ा.

चौथी पीढ़ी की बैंकिंग वर्ष (1991-2014)

- इस अवधि के दौरान प्रतिस्पर्धा शुरू करने, उत्पादकता में सुधार लाने और दक्षता बढ़ाने के लिए निजी एवं विदेशी बैंकों को नए लाइसेंस जारी करने सहित कई महत्वपूर्ण सुधार लागू किए गए.
- इन परिवर्तनों में प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना, विवेकपूर्ण मानदंडों को लागू करना, कार्यात्मक स्वायत्तता के साथ परिचालनात्मक लचीलेपन की पेशकश करना, सर्वोत्तम कॉर्पोरेट प्रशासन अभ्यासों के कार्यान्वयन को प्राथमिकता देना और बेसल मानदंडों के अनुसार पूंजी आधार को सुदृढ़ करना शामिल रहा.

वर्तमान मॉडल :

- वर्ष 2014 के बाद से बैंकिंग क्षेत्र ने JAM ट्रिनिटी(जन-धन, आधार और मोबाइल) को अपनाया है और वित्तीय समावेशन की खोज में अंतिम- मील कनेक्टिविटी प्राप्त करने के लिए भुगतान बैंकों एवं लघु वित्त बैंकों को लाइसेंस प्रदान किया है.

भारतीय बैंकिंग व्यवस्था की वर्तमान स्थिति क्या है?

पृष्ठभूमि :

- निकट अतीत में भारतीय ऋणदाताओं को खराब ऋण (Bad Loan) की गंभीर स्थिति का सामना करना पड़ा था, जिसके कारण तनावग्रस्त परिसंपत्तियों में वृद्धि हुई थी. इससे सरकारी स्वामित्व वाले बैंक विशेष रूप से प्रभावित हुए, जिनका सकल एनपीए 14.6% तक पहुंच गया था.
- इन चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए सरकार और भारतीय रिजर्व बैंक ने 4R रणनीति लागू की : NPAs को पारदर्शी रूप से चिन्हित करना (Recognize NPAs Transparently), समाधान एवं वसूली (Resolution and Recovery), सार्वजनिक बैंकों का पुन:पूंजीकरण (Recapitalization of PSBs) और वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र में सुधार (Reforms in the financial ecosystem).
- लगभग एक दशक तक सरकार की कमजोर हालत और खराब ऋण के मुद्दों से जूझने के बाद, भारतीय बैंकिंग प्रणाली ने वर्ष 2023 में एक उल्लेखनीय बदलाव का अनुभव किया है.

लाभप्रदता और परिसंपत्ति गुणवत्ता में सुधार :

- वित्त वर्ष 2013 में भारत में बैंकों का सकल एनपीए अनुपात गिरकर 4.41% हो गया जो मार्च 2015 के बाद से निम्नतम स्तर

है. संचयी रूप से पीएसबी (PSBs) ने लाभ में एक लाख करोड़ रुपए का आंकड़ा पार कर लिया.

नीति सुधार और वित्तीय अनुशासन :

- पिछले 8 वर्षों में शुरू किए गए विभिन्न सुधार उपाय ऋण अनुशासन, उत्तरदायी उधारी या ऋण देयता, बेहतर प्रशासन और प्रौद्योगिकी को अपने पर केंद्रित है. सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का आपसी विलय भी NPA को कम करने में सहायक रहा.

मजबूत वित्तीय संकेतक :

- बैंक मजबूत तरलता स्तर प्रदर्शित कर रहे हैं, जिसे ऋण देने के लिए उपलब्ध नीतियों के आधार पर मापा जाता है. भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा हाल में Withdrawal of Accommodation का मौद्रिक रूप अपनाये जाने के बावजूद भारतीय बैंकों ने न्यूनतम आवश्यकता से कम से कम 20% अधिक तरलता कवरेज अनुपात बनाए रखा है.

भारतीय बैंकिंग क्षेत्र के लिए आगे कौन सी बाधाएं मौजूद हैं?

अवसंरचना और पूंजी निवेश जोखिम :

- आगामी और अवसंरचना और पूंजी निवेश के लिए बैंक ऋण, विशेष रूप से राज्य सरकार के निकायों से जुड़े ऋण, राज्य के बीच में खिंचाव के कारण डिफॉल्ट का जोखिम पैदा करते हैं.

- बैंकों को सलाह दी जाती है कि वह अलग-अलग राज्यों के राजकोषी या वित्तीय आकलन के आधार पर आंतरिक एक्स्पोज़र सीमाएं (Internal exposure limits) निर्धारित करें.

शेयर बाजार और खुदरा एक्स्पोज़र जोखिम :

- तेजी से बदलता शेयर बाजार, जो धन सृजन का भ्रम पैदा करता है, खुदरा एक्स्पोज़र (Retail exposures) के लिए जोखिम प्रस्तुत करता है. सभी क्षेत्रों में बढ़े हुए डीमैट खाते और उच्च PE अनुपात इस जोखिम के संकेतक है.

परस्पर-संबद्ध ऋण और शासन संबंधी चुनौतियां :

- परस्पर-संबद्ध ऋण (Interconnected Lending) और ढीले शासन मानदंडों के कारण डिफॉल्ट के संक्रामक हो जाने की संभावना एक प्रमुख चुनौती है.

- केंद्रित जोखिम निगरानी आवश्यक है, इस बात पर बल देते हुए की विनियमन सुशासन का स्थान नहीं ले सकता.

पुन: वैश्वीकृत विश्व में SMEs की चुनौतियां :

- दुनिया का पुन: वैश्वीकरण (re-globalization) और भू-राजनीतिक बदलाव लघु एवं मध्यम उद्योगों (SMEs) को विशेष रूप से मुक्त व्यापार समझौता (FTAs) और क्षेत्रीय महत्वाकांक्षाओं के परिदृश्य में चुनौती दे सकते हैं.

- नगदी प्रवाह में संभावित व्यवधानों को ध्यान में रखते हुए बैंकों को SMEs के लिए संभावित जोखिमों का सावधानीपूर्वक आकलन करने और इस दिशा में तैयारी करने की आवश्यकता है.

देनदारियों का बदलता परिदृश्य :

- डिजिटलीकरण और उभरती उपभोग प्रवृत्तियों के साथ देनदारियों (Liabilities) का चरित्र बदल रहा है, जिसका असर खुदरा जमा पर पड़ रहा है . उच्च क्रेडिट- डिपॉजिट अनुपात रखने वाले बैंकों को तरलता कवरेज में चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है.

- भारतीय बचत में संरचनात्मक बदलाव के लिए बैंकरों की ओर से सतर्कता एवं विवेक की आवश्यकता है, जहां अनुकूल परिस्थितियों के बीच सावधानी पूर्वक निगरानी आवश्यक है.

आगे बढ़ते भारतीय बैंकिंग क्षेत्र को किस प्रकार सुदृढ़ किया जा सकता है?

बड़े बैंकों का निर्माण :

- नरसिंहम समिति रिपोर्ट 1991 ने भारत के लिए विदेशी बैंकों के अलावा घरेलू एवं अंतर्राष्ट्रीय उपस्थित रखने वाले तीन- चार प्रमुख वाणिज्यिक बैंकों के होने के महत्व को रेखांकित किया.

- दूसरे स्तर में अर्थव्यवस्था में व्यापक उपस्थिति वाले विशिष्ट संस्थाओं सहित कई मध्यम आकार के बैंक शामिल हो सकते हैं.

- इन सुझावों के अनुरूप, सरकार ने पहले ही कुछ PSBs को समेकित कर दिया है और विकास वित्त संस्थान (DFI) एवं बेड बैंक (Bad Bank) जैसी संस्थाओं की स्थापना के लिए उपाय किए हैं.

विभेदित बैंकों के लिए आवश्यकतायें :

- जबकि सार्वभौमिक बैंकिंग दृष्टिकोण को आमतौर पर पसंद किया गया है, विविध ग्राहकों और उधारकर्ताओं कि विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अलग-अलग बैंकिंग संस्थाओं की मांग मौजूद है.

- यह विशिष्ट बैंक खुदरा, कृषि और MSMEs जैसे विशिष्ट क्षेत्रों में वित्तीय पहुंच की सुविधा प्रदान करेंगे.

ब्लॉकचेन बैंकिंग :

- इसकी मदद से उन्नत जोखिम प्रबंधन हासिल किया जा सकता है और नियो बैंक (Neo bank) के पास डिजिटल वित्तीय समावेशन को आगे बढ़ाने और महत्वाकांक्षी एवं उभरते भारत की बढ़ती वृद्धि का समर्थन करने के लिए इस तकनीक का उपयोग करने का अवसर है.

नैतिक खतरे को संबोधित करना :

- अभी तक सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के विफल होने की घटनाएं कम होती रही है, मुख्य रूप से इनमें निहित संप्रभु गारंटी के कारण जिससे आम लोगों में वृहद भरोसा पैदा होता है लेकिन पीएसबी के निजीकरण की जारी प्रक्रिया इस आश्वासन को चुनौती देती है.

बैंकिंग संस्थाओं को उन्नत बनाना :

- वैद्यताओं को दूर करने के लिए सरकार को विनियामक उपायों को परिष्कृत करना चाहिए, बैंकों को विविध ऋण पोर्टफोलियो विकसित कर सकने में सक्षम बनाना चाहिए. विशिष्ट क्षेत्र के लिए नियामकों की स्थापना करनी चाहिए और जानबूझकर किए गए डिफॉल्ट से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए अधिक अधिकार प्रदान करना चाहिए.

कॉरपोरेट बॉन्ड बाजार विकास को सुगम बनाना :

- एक गतिशील वास्तविक अर्थव्यवस्था में एक उत्तरदाई बैंकिंग प्रणाली स्थापित करने के लिए कॉरपोरेट बॉन्ड बाजार के विकास को बढ़ावा देने की आवश्यकता है, ताकि बैंक- केंद्रित आर्थिक मॉडल से परे आगे बढ़ा जा सके.

जोखिम प्रबंधन मॉडल को उन्नत बनाना :

- राज्य सरकार के निकायों और अवसंरचना परियोजनाओं को ऋण देने से जुड़े संभावित जोखिमों का आकलन करने के लिए राज्य विशेष के अनुरूप आंतरिक जोखिम मॉडल(बैंक एक्सपोज़र जोखिम सूचकांक) के समान का विकास एवं कार्यान्वयन करें.

निष्कर्ष :

बैंकिंग क्षेत्र की वर्तमान सफलता का भले ही हम जश्न मनाएं, लेकिन जिस समय में हम रह रहे हैं उसकी जटिलताओं एवं और अनिश्चितताओं से निपटने के लिए सक्रिय एवं सतर्क रुख अपनाना भी अत्यंत महत्वपूर्ण है.

विजय कुमार बर्णवाल
ग्राहक सेवा सहयोगी
क्षेत्रीय कार्यालय, दुर्गापुर

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया को नवभारत एजुकेशन एक्सीलेंस अवॉर्ड 2025 में शिक्षा ऋण के लिए सर्वश्रेष्ठ बैंक का पुरस्कार प्राप्त हुआ.

गणतंत्र दिवस : 2050

26 जनवरी, 2050 को उत्तर भारत में सर्दियों की एक धुंध भरी सुबह थी. मास्क पहनकर हम बच्चे अपने 101वें गणतंत्र दिवस का जश्न मनाने के लिए स्कूल के मैदान में एकत्र हुए. मुझे याद है कि हम अपने राष्ट्रीय त्योहारों को बहुत धूमधाम से मनाते थे, क्योंकि वे उन चंद दिनों में से होते थे, जब हम खुले में बाहर निकलते थे. प्रदूषण का स्तर इतना बढ़ चुका है कि आसमान धूसर दिखाई देता और हम घर के अंदर ही रहते थे. दिन की शुरुआत एनसीसी बैंड द्वारा बजाए जा रहे ढोल-नगाड़ों और तुरही से हुई. सीनियर विंग के छात्रों ने मार्च पास्ट किया. प्राचार्य ने अपना शानदार एआई द्वारा लिखा गया भाषण दिया और मस्तूल पर बंधे झंडे को फहराया.

तिरंगे के लिए तुरही की सलामी का प्रबंध किया गया था लेकिन हे भगवान!! यह क्या, हमने देखा कि हमारे प्यारे तिरंगे के रंग गायब थे; ऊपर लगा झंडा, आसमान की धूसर धुंध में लहराता हुआ एक कपड़े का टुकड़ा था. हम सब वहीं खड़े होकर सोच रहे थे कि हमारे प्यारे भारतीय तिरंगे के रंग कहाँ हैं? बच्चों को सभा में शांत करने के लिए हमारे प्रधानाचार्य ने घोषणा की, ''जो कोई भी झंडे के गायब रंगों के रहस्य को सुलझाएगा, उसे पुरस्कार दिया जाएगा.'' हम सभी अपनी सबसे बड़ी पहेली का उत्तर पाने के लिए अलग-अलग दिशाओं में चल निकले. मैं सबसे पहले उत्तर के लिए स्कूल में AI रोबोट के पास गयी लेकिन पहली बार मैंने उसे यह कहते हुए सुना कि वह इस रहस्य को सुलझाने में असमर्थ है. फिर, मुझे अपनी माँ के शब्द याद आए जो कहती थीं कि 'बड़े- बुजुर्ग 'शायद, ऐसे सवालों के जवाब जानते हों, तो, अचानक मुझे याद आया कि हमारे स्कूल में एक बूढ़ा गार्ड हुआ करता था, जो CCTV रूम में रोबोट गार्डों को नियंत्रित करने के लिए बैठता था मैं और मेरा सबसे अच्छा दोस्त मेरा ''रोबो बैग'' उसके पास गए और उसे बताया कि हमारे राष्ट्रीय ध्वज के रंग गायब हो गए हैं. इस रहस्य को सुनकर बूढ़े गार्ड ने एक पल रुककर मुझसे और मेरे दोस्त ''रोबो बैग'' से पूछा, क्या हम उसे बता पाएंगे कि ध्वज के रंगों और प्रतीकों का क्या मतलब है?

मुझे खुशी हुई कि मुझे जवाब पता था और मैंने उनसे कहा कि केसरिया रंग साहस और कर्म का प्रतीक है, सफेद रंग शांति, सत्य और पवित्रता का प्रतीक है और हरा रंग विकास और उर्वरता दर्शाता है. नेवी ब्लू रंग नीले आसमान और समुद्र को दर्शाता है और अशोक चक्र निरंतर प्रगति को दर्शाता है. फिर उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या वाकई हमारे पास ये सभी गुण बचे हुए हैं? आखिरी बार मैंने नीला आसमान और समुद्र कब देखा था? मैंने गेहूं या चावल से लदे हरे-भरे खेत कहां देखे थे? ऐसा कौन सा दिन था जब युद्ध या अपराध की खबरें नहीं आती थीं?

अब हम जानते थे कि गायब रंगों का रहस्य सुलझ गया है लेकिन उन्हें वापस लाने का सवाल अभी भी जस का तस बना हुआ था . हमने फिर से बूढ़े गार्ड से इसका हल पूछा तो उन्होंने कहा, ''ये सभी रंग आपस में जुड़े हुए हैं. आपको केसरिया जैसा साहस करना होगा और खेतों और पेड़ों के रूप में हरियाली को वापस लाने के लिए काम करना होगा और फिर आप देखेंगे कि आसमान फिर से नीला हो रहा है. हर कोई स्वच्छ हवा में सांस लेगा और खाना खाएगा और सफेद रंग की तरह शांति आएगी.''

मूल बातों पर वापस लौटने पर ही हमें अपने ये रंग वापस मिलेंगे. हमें अब अपना सबक मिल चुका था और अब सब कुछ 'रीसेट' करने का समय था, लेकिन अफसोस कि अब बहुत देर हो चुकी थी, हमने अपनी मातृभूमि और पृथ्वी को जो नुकसान पहुँचाया था वह स्थायी था और अब हमें हमेशा के लिए एक काली और सफेद दुनिया में ही रहना था. गायब रंगों के रहस्य को सुलझाने के बाद भी, मैं उदास होकर अपनी कक्षा में वापस जा रही थी कि अचानक एक ज़ोरदार घंटी बजी और मैं अपने डरावने सपने से जाग गयी .

भगवान का शुक्र है! अभी भी 2025 है और मेरे पास अभी भी अपने झंडे के रंगों की रक्षा करने का समय है.

इधिका मिश्रा
सुपुत्री: श्रीमती स्वर्णिमा सिंह
मुख्य प्रबन्धक- विधि
आंचलिक कार्यालय, लखनऊ

कृत्रिम बुद्धिमत्ता क्या है ?

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) एक ऐसा क्षेत्र है जो मशीनों को मानव-जैसे बुद्धि का अनुकरण करने में सक्षम बनाता है. यह कंप्यूटर सिस्टम को ऐसी क्षमताएं प्रदान करता है जो सीखने, तर्क करने, समस्या समाधान और स्वायत्तता से निर्णय लेने की क्षमता रखती हैं. दूसरे शब्दों में, एआई का लक्ष्य ऐसी मशीनें बनाना है जो मनुष्यों की तरह सोच सकें और कार्य कर सकें.

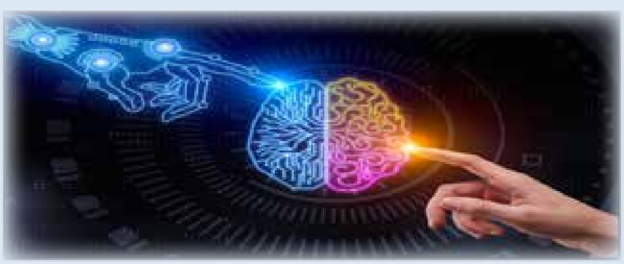

आज के तकनीकी दौर में जहां मशीनें कई व्यवसायों में अपनी सेवाएं दे रहीं हैं वहीं एआई टेक्नोलॉजी भी अब कुछ सीमित इंडस्ट्रीज से निकलकर कई अन्य महत्वपूर्ण इंडस्ट्रीज में प्रयोग की जाने लगी है. कुछ वर्षों पहले तक एआई टेक्नोलॉजी को कंप्यूटर तथा इससे जुड़ी सेवाओं तक ही सीमित माना जाता था, परंतु वर्तमान समय में एआई टेक्नोलॉजी का विस्तार अन्य कई इंडस्ट्रीज में भी देखने को मिल रहा है. आज के समय में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) का प्रयोग शिक्षा, बैंकिंग ग्राहक सेवा, मनोरंजन, ऑटोमोबाइल और इसके साथ ही साथ परिवहन व संचार के क्षेत्रों में भी देखने को मिल रहा है. इस कारण से एआई टेक्नोलॉजी से संबंधित कंपनियों को बड़े पैमाने पर फ़ायदे की उम्मीद भी है. इसका एक उदाहरण न्यूरालिंक द्वारा इंसानी दिमाग में एक चिपसेट को इंप्लांट किया जाना है.

एआई का विकास लगातार हो रहा है, और इसमें कई उप-क्षेत्र और तकनीकें शामिल हैं, जैसे कि मशीन लर्निंग, डीप लर्निंग और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण.

कृत्रिम बुद्धिमत्ता कैसे कार्य करता है ?

एआई बड़ी मात्रा में डेटा को बुद्धिमान एल्गोरिदम के साथ जोड़कर काम करता है ताकि मशीनें मानव बुद्धि की नकल कर सकें. इसमें मशीन लर्निंग, नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग, कंप्यूटर विज़न और डीप लर्निंग जैसी विभिन्न तकनीकें शामिल हैं. ये तकनीकें एआई सिम को प्राप्त डाटा के आधार पर विश्लेषण, व्याख्या और सूचित निर्णय लेने में मदद करती हैं.

कृत्रिम बुद्धिमत्ता कितने प्रकार की होती है ?

एआई के मुख्यत: 3 प्रकार होते हैं जो कि निम्नवत हैं:-

1) **संकीर्ण कृत्रिम बुद्धिमत्ता:-** यह एआई किसी एक कार्य के लिए प्रोग्राम किया जाता है. इसमें एक ही कार्य को करने की क्षमता होती है. यह सामान्यत: काफी हद तक उपलब्ध होती है उदाहरणार्थ: आवाज पहचानना, चेहरा पहचानना इत्यादि .

2) **सामान्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता:-** इस प्रकार की एआई में दुख, खुशी, शोक, क्रोध जैसी मानवीय भावनाओं को समझने की क्षमता होती है.

3) **सुपर कृत्रिम बुद्धिमत्ता:-** कृत्रिम बुद्धिमत्ता का एक प्रकार, जो समस्या-समाधन और अन्य कार्यों में मनुष्य से बेहतर प्रदर्शन करने में सक्षम है.

कृत्रिम बुद्धिमत्ता भारत जैसे देश के लिए किस प्रकार उपयोगी है ?

वैसे तो भारत में तकनीकी विकास के लिए अनेक प्रकार के प्रयास किए जाते रहे हैं. नवीन तकनीक को अपनाने में भी हम भारतीय सदैव आगे रहते हैं. फिर जहाँ तक बात कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी को अपनाने की है, तो इस क्षेत्र में भी निजी और सार्वजनिक दोनों ही स्तर पर अनेक प्रयास किए गए हैं. लेकिन यहाँ पर हम मुख्य रूप से सार्वजनिक क्षेत्र द्वारा किए गए कृत्रिम बुद्धिमत्ता से संबंधित प्रयासों के विषय में चर्चा करेंगे.

- नीति आयोग ने केंद्रीय इलेक्ट्रानिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के साथ मिलकर ''सामाजिक सशक्तिकरण'' के लिये ''जिम्मेदार कृत्रिम बुद्धिमत्ता 2020'' (RAISE 2020) नामक एक मेगा वर्चुअल समिट का आयोजन किया था.

- इसके अलावा, भारत सरकार ने संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ मिलकर एक 'यूएस इंडिया आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पहल' (USIAI) का शुभारंभ किया है. इसका उद्देश्य दोनों देशों के बीच कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में विज्ञान और प्रौद्योगिकी आधारित संबंधों को बढ़ावा देना है.

- वर्ष 2020 में, भारत एक विश्वस्तरीय समूह 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर वैश्विक भागीदारी' (GPAI) में शामिल हुआ था. इसमें शामिल होने के साथ ही भारत इस विश्वस्तरीय भागीदारी समूह का संस्थापक सदस्य भी बन गया था. इस समूह का उद्देश्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी के माध्यम से जिम्मेदार तरीके से मानव-केंद्रित विकास को प्रोत्साहित करना तथा उसके उपयोग को बढ़ावा देना है.

- भारतीय रेलवे की एक शाखा ''इंडियन रेलवे कैटरिंग एंड टूरिज़्म कॉरपोरेशन' (IRCTC) लिमिटेड'' ने एक ''आस्क दिशा'' (ASKDISHA) नामक चैटबॉट का विकास किया है. यह कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी पर आधारित एक चैटबॉट है. इस चैटबॉट के माध्यम से रेलवे से कोई सुविधा प्राप्त करने वाला ग्राहक बोलकर अथवा लिखकर अपने प्रश्न पूछ सकता है. ग्राहक द्वारा पूछे गए प्रश्न का विश्लेषण करके यह चैटबॉट अपने आप ही ग्राहक के प्रश्नों का उत्तर देता है और उनकी समस्या का समाधान करता है.

- भारत सरकार ने लॉन्च किया ''इंडिया एआई मिशन'', कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में होगा बड़ा बदलाव:- इस महत्वाकांक्षी परियोजना का कुल बजट ₹10,370 करोड़ (लगभग $1.25 बिलियन) तय किया गया है. मिशन का मुख्य उद्देश्य भारत को एआई के क्षेत्र में वैश्विक लीडर बनाना और नई तकनीकों को विकसित करना है.

- नीति आयोग ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी के आधार पर भारत की संभावनाओं के विश्लेषण के आधार पर यह स्पष्ट किया कि यदि भारत में कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी का बेहतर तरीके से इस्तेमाल किया जाता है, तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी 2035 ईस्वी तक भारत की अर्थवस्था में लगभग 1 ट्रिलियन डॉलर का मूल्य वर्द्धन करने में सफल सिद्ध होगी.

- इस सर्वे के आधार पर स्पष्ट किया गया कि बेशक भारत में अभी भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी के विकास की अपार संभावनाएँ मौजूद हैं, लेकिन वर्तमान में कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी के विकास के दृष्टिकोण से भारत विश्व के शीर्ष 5 देशों में शामिल है.

- इसके अलावा, एक रिपोर्ट में इस बात का भी उल्लेख किया गया है कि यदि भारत में कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी का अनुकूलतम उपयोग किया जाता है, तो वर्ष 2035 तक ''कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी जनित गतिविधियाँ'' भारत की आर्थिक संवृद्धि में लगभग 3% का योगदान दे सकती हैं.

कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं भारतीय भाषाओं का तालमेल (भावी बैंकिंग परिदृश्य में):-

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भारतीय भाषाओं के संगम से इसका प्रचार-प्रसार और भी व्यापक होगा क्योंकि एआई जब आम जन-मानस की सामान्य

बोलचाल की भाषा में उपयोग हेतु उपलब्ध होगी तो बहुत से सहजता के साथ इसका उपयोग होगा. जब हम किसी कार्य को करना चाहते हैं जैसे कि कुछ लिखना हो या कुछ पढ़ना हो और यदि हमें वो कार्य अपने मातृभाषा में करने की स्वतंत्रता मिले तो काफी सरलता होती है .

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रकाश आज के इस आधुनिक युग में हर संभव दिशाओं में फैल रहा है चाहे वो उद्यम के निर्माण क्षेत्र या सेवा क्षेत्र हो. बैंकिंग क्षेत्र में तो एआई का उपयोग मील का पत्थर साबित हो रहा है जिसके कुछ प्रमुख उपयोग निम्नवत हैं :-

❖ **ग्राहक सेवा में सुधार:-** (एआई) नियमित कार्यों को स्वचालित करके, वैयक्तिकरण को बढ़ाकर और ग्राहक इंटरैक्शन की समग्र दक्षता में सुधार करके ग्राहक सेवा परिदृश्य को बदल रहा है. मशीन लर्निंग, नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (NLP) और प्रेडिक्टिव एनालिटिक्स जैसी तकनीकों के इस्तेमाल से, एआई व्यवसायों को विभिन्न टचपॉइंट्स पर अधिक प्रतिक्रियाशील, सटीक और स्केलेबल ग्राहक सेवा देने में सक्षम बनाता है.

एआई-संचालित समाधानों को न केवल पूछताछ को संभालने के लिए बल्कि डेटा-संचालित अंतर्दृष्टि प्रदान करने के लिए भी अपनाया जा रहा है जो पूरे ग्राहक अनुभव को अनुकूलित करता है. चैटबॉट से लेकर वर्चुअल असिस्टेंट तक, एआई व्यवसायों के अपने ग्राहकों के साथ जुड़ने के तरीके में क्रांतिकारी बदलाव ला रहा है, जिससे तेज़, अधिक कुशल और व्यक्तिगत बातचीत की अनुमति मिलती है.

ग्राहक सेवा संचालन में AI का उपयोग हेतु महत्वपूर्ण उपकरण:-

1) एआई-संचालित चैटबॉट,
2) वर्चुअल एजेंट और सहायक,
3) एआई-संचालित स्व-सेवा समाधान,
4) एआई-संचालित वॉयस बॉट्स,
5) स्वचलित टिकटिंग सिस्टम,
6) सक्रिय ग्राहक सहायता इत्यादि.

वित्तीय सेवाओं में एआई का उपयोग : वित्तीय उद्योग में, एआई सिस्टम का उपयोग नियमित बैंकिंग पूछताछ, जैसे कि खाता शेष, लेन-देन इतिहास और धोखाधड़ी का पता लगाने के लिए किया जाता है. एआई-संचालित वर्चुअल असिस्टेंट ग्राहकों को सुरक्षित और व्यक्तिगत वित्तीय सलाह प्रदान करते हैं, जिससे उन्हें अपने खातों को कुशलतापूर्वक प्रबंधित करने में मदद मिलती है.

❖ **साइबर सुरक्षा और धोखाधड़ी रोकथाम :-** तेजी से जटिल होती डिजिटल दुनिया में, साइबर सुरक्षा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता हमारे सिस्टम और डेटा की सुरक्षा के लिए एक शक्तिशाली संयोजन के रूप में उभर रहे हैं. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) न केवल सुरक्षा खतरों के प्रबंधन में क्रांति ला रहा है, बल्कि यह संगठनों द्वारा उभरती साइबर सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के तरीके को भी बदल रहा है .

साइबर सुरक्षा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के सबसे नवीन पहलुओं में से एक इसकी खतरों का अधिक कुशलता से पता लगाने और उन्हें रोकने की क्षमता है. एआई वास्तविक समय में बड़ी मात्रा में डेटा का विश्लेषण करने में सक्षम बनाता है, संदिग्ध पैटर्न और व्यवहार की पहचान करता है जो किसी खतरे का संकेत दे सकते हैं. एआई-आधारित पहचान प्रणालियाँ असामान्य गतिविधि को पहचानने में सक्षम हैं, जिससे संभावित घटनाओं पर त्वरित और प्रभावी प्रतिक्रिया संभव हो पाती है. इसके अलावा, घुसपैठ रोकथाम प्रणालियों (IPS) में मशीन लर्निंग एल्गोरिदम लगातार नई हमले तकनीकों के अनुकूल होते हैं, जिससे सिस्टम की सुरक्षा में उनकी प्रभावशीलता में सुधार होता है.

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साथ ऋण सेवा और संग्रह में क्रांतिकारी बदलाव:- वित्त की तेज़ रफ़्तार दुनिया में, सफलता के लिए वक्र से आगे रहना महत्वपूर्ण है. पिछले दशक में प्रौद्योगिकी उन्नति ने ऋण सेवा और संग्रह में महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है, लेकिन कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) इस उद्योग में क्रांति लाने के लिए तैयार है.

यहां हम कुछ महत्वपूर्ण तरीकों के बारे में जानेंगे जिनसे AI ऋण और संग्रहण पारिस्थितिकी तंत्र को नया आकार मिल रहा है:-

1) **कुशल जोखिम मूल्यांकन के लिए पूर्वानुमानित विश्लेषण-** एआई एल्गोरिदम पैटर्न और रुझानों की पहचान करने के लिए विशाल मात्रा में डेटा का विश्लेषण करने में उत्कृष्ट हैं. ऋण सेवा और संग्रह में, उधारकर्ता व्यवहार की भविष्यवाणी करने के लिए यह क्षमता अमूल्य है. पूर्वानुमानित विश्लेषण का उपयोग करके, वित्तीय संस्थान व्यक्तिगत उधारकर्ताओं से जुड़े जोखिम का अधिक सटीक रूप से आकलन कर सकते हैं. यह न केवल निर्णय लेने की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करता है बल्कि संभावित चूक की पहचान करने और निवारक उपायों को लागू करने में भी मदद करता है.

2) **परिचालन लागत में उल्लेखनीय कमी लाना -** एआई प्रसंस्करण गति में तेजी लाकर और एजेंटों को उधारकर्ता व्यवहार के बारे में अधिक तेजी से कार्रवाई योग्य जानकारी प्राप्त करने में सक्षम बनाकर, तेजी से परिणाम के लिए सटीकता में सुधार करके और समग्र उत्पादकता को बढ़ाकर लागत बचत क्षमता को महत्वपूर्ण रूप से आगे बढ़ा सकता है.

3) **स्वचालित संचार और व्यक्तिगत बातचीत** - एआई-संचालित चैटबॉट और वर्चुअल असिस्टेंट वित्तीय संस्थानों के उधारकर्ताओं के साथ बातचीत करने के तरीके को बदल रहे हैं. ये स्वचालित सिस्टम नियमित संचार कार्यों जैसे अनुस्मारक भेजना, जानकारी एकत्र करना और सामान्य पूछताछ को संबोधित करना संभाल सकते हैं. एआई व्यक्तिगत उधारकर्ता प्रोफाइल के आधार पर संचार, संदेश और आउटरीच रणनीतियों के निजीकरण को भी सरल बनाता है.

4) **प्रारंभिक डिफ़ॉल्ट प्रतिगमन के लिए व्यवहार विश्लेषण** - एआई एल्गोरिदम वित्तीय संकट के संकेतों को जल्दी से पहचानने के लिए उधारकर्ता के व्यवहार का विश्लेषण करने में माहिर हैं. खर्च करने के पैटर्न, भुगतान इतिहास और अन्य प्रासंगिक डेटा बिंदुओं की निगरानी करके, एआई सिस्टम संभावित खतरों और/या उधारकर्ताओं के अपने दायित्वों को पूरा करने के लिए संघर्ष करने के संकेतों की पहचान कर सकते हैं. प्रारंभिक पहचान से त्वरित हस्तक्षेप को बढ़ावा मिलता है, जहां ऋणदाता स्थिति बढ़ने से पहले सहायता या पुनर्गठन विकल्प प्रदान कर सकते हैं.

5) **मशीन लर्निंग के साथ गतिशील भुगतान योजनाएँ** - पारंपरिक निश्चित पुनर्भुगतान कार्यक्रम हमेशा उधारकर्ता की वित्तीय स्थिति के अनुरूप नहीं हो सकते हैं. मशीन लर्निंग (एमएल) एआई का एक उप-समूह है, जो एल्गोरिदम लागू करता है जो गतिशील भुगतान योजनाओं को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है. एमएल मॉडल व्यक्तिगत और लचीली भुगतान योजनाएँ बनाने के लिए ऐतिहासिक डेटा और उधारकर्ता व्यवहार का विश्लेषण कर सकते हैं. यह अनुकूलनशीलता सुनिश्चित करती है कि उधारकर्ता अपने दायित्वों को पूरा करने की अधिक संभावना रखते हैं, जिससे चूक का जोखिम कम होता है.

❖ **कृत्रिम बुद्धिमत्ता की ग्रामीण और दूरदराज क्षेत्रों तक पहुँच:-** भारत में छह लाख से अधिक गांव हैं, और देश की करीब 69 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में रहती है, जहां बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं, शिक्षा, रोजगार, बिजली, स्वच्छ ईंधन, पेयजल, शौचालय और सड़क जैसी बुनियादी सुविधाओं तक अधिसंख्य आबादी की पहुंच सीमित है. कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और क्लाउड कम्प्यूटिंग जैसी प्रौद्योगिकियां इन मूलभूत जरूरतों को पूरा करने से लेकर गांवों के चौमुखी विकास का प्रभावी उपकरण बन सकते हैं.

हाल ही में, माइक्रोसॉफ्ट ने भी एक एआई-संचालित बहुभाषी चैटबॉट लॉन्च किया है. जुगलबंदी नामक इस चैटबॉट के लिए मैसेजिंग प्लेटफॉर्म वाट्सऐप के साथ गठजोड़ किया गया है. इस एआई चैटबॉट के सहारे से ग्रामीण लोग सरकारी कार्यक्रमों और योजनाओं के बारे में जान सकेंगे. इस चैटबॉट का उपयोग वॉट्सएप पर कर सकेंगे. जुगलबंदी को AI4Bharat ने आईआईटी मद्रास के सहयोग से बनाया है, जो करीब 10 भाषाओं को समझ सकता है, और यूजर्स के सवालों को समझकर सहायता प्रदान कर सकता है. खेती में ड्रोन के उपयोग से लेकर डिजिटल बैंकिंग, रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने, बेहतर स्वास्थ्य, अच्छी शिक्षा, कौशल विकास, और पंचायती राज संस्थाओं की मजबूती में इन प्रौद्योगिकियों की भूमिका बढ़ रही है.

ग्रामीण क्षेत्रों के अंतर्गत वित्तीय सेवाएं:- एआई और मशीन लर्निंग (एमएल) वित्तीय सेवा प्रदाताओं को डेटा एवं एनालिटिक्स से लैस कर रहे हैं, जिससे दूरदराज क्षेत्रों के लोगों के लिए वित्तीय संसाधनों तक पहुंचने का मार्ग प्रशस्त हुआ है. उदाहरण के लिए, ग्राहकों की क्रेडिट हिस्ट्री नहीं होना वित्तीय समावेशन की प्रमुख चुनौती है, खासकर वंचित वर्ग के बीच यह समस्या अधिक होती है. यहां एआई और एमएल एल्गोरिद्म काम आते हैं, जो मोबाइल उपयोग के पैटर्न और लेनदेन के इतिहास जैसे डेटा स्रोतों का विश्लेषण करके ग्राहकों की वित्तीय साख का आकलन कर सकते हैं. एआई-चैटबॉट और वर्चुअल असिस्टेंट वित्तीय क्षेत्र में ग्राहक सेवा का नया चेहरा बनकर उभरे हैं.

ये प्रौद्योगिकियां धोखाधड़ी वाले व्यवहार से जुड़ी विसंगतियों और पैटर्न का पता लगाने के लिए विशाल डेटासेट का तेजी से विश्लेषण कर सकती हैं. क्रेडिट और जोखिम मूल्यांकन को स्वचालित करके सूक्ष्म ऋण वितरण की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करने में इनका बहुत योगदान है. एआई-संचालित मोबाइल बैंकिंग ऐप बुनियादी लेनदेन के लिए उपयोगकर्ता के अनुकूल इंटरफेस की पेशकश करता है. ऐसे हस्तक्षेप बैंकिंग सेवाओं के अंतर को पाट सकते हैं. वहीं, एआई-संचालित रोबो-सलाहकार निवेश के

मामले में बदलाव ला रहे हैं, जो व्यक्तिगत प्राथमिकताओं, ग्राहकों के जोखिम सहन करने की क्षमता, और वित्तीय लक्ष्यों का लेखा-जोखा रख सकते हैं, और निवेश के आकर्षक विकल्प बता सकते हैं.

❖ **एआई और बिग डेटा एनालिटिक्स बैंकिंग को कैसे बदल रहे हैं ?:-** बैंकिंग और वित्तीय सेवा उद्योग एआई और बिग डेटा एनालिटिक्स की शक्ति का लाभ उठाने में सबसे आगे रहा है. एक अध्ययन बैंकिंग में एआई और बिग डेटा एनालिटिक्स के अनुप्रयोग की खोज करता है ताकि ग्राहक अनुभव को बढ़ाया जा सके, निर्णय लेने को अनुकूलित किया जा सके, व्यक्तिगत और एसएमई ऋण जारी करने को स्वचालित किया जा सके, वित्तीय धोखाधड़ी को रोका जा सके और जोखिम प्रबंधन में सुधार किया जा सके. ये उभरती हुई प्रौद्योगिकियाँ बैंकों और वित्तीय संस्थानों के संचालन के तरीके को बदल रही हैं, जिससे वे अधिक कुशल, व्यक्तिगत और ग्राहक-केंद्रित बन रहे हैं.

आजकल, हर व्यवसाय के लिए बढ़ती हुई तकनीकों को अपनाना महत्वपूर्ण हो गया है. बैंकिंग उद्योग एक महत्वपूर्ण परिवर्तन से गुजर रहा है, जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और बड़े डेटा एनालिटिक्स के अभिसरण द्वारा परिचालित है. जैसे-जैसे वित्तीय संस्थान ग्राहक अनुभव को बेहतर बनाने, परिचालन को सुव्यवस्थित करने और प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त हासिल करने का प्रयास करते हैं, इन शक्तिशाली तकनीकों का एकीकरण एक गेम-चेंजर साबित हो रहा है. वैयक्तिकरण सेवाएँ अब ग्राहक जुड़ाव बढ़ाने और नए संभावित ग्राहकों को आकर्षित करने की एक प्रमुख रणनीति है. आइए जानें कि एआई और बिग डेटा बैंकिंग उद्योग को कैसे बदल रहे हैं.

❖ **एआई के आ जाने से कर्मचारियों की भूमिका में बदलाव:-** एआई जहां एक तरफ तो बहुत ही सुविधाजनक है तो वही दूसरी तरफ इसके कुछ नकारात्मक पहलू भी हैं. सबसे बड़ी चिंता नौकरी का नुकसान है. जैसे-जैसे एआई बेहतर होता जाएगा, यह कुछ नौकरियों में मानव श्रमिकों की जगह ले लेगा जिससे असमानताएं बढ़ सकती हैं.

a. नौकरी विस्थापन: एआई उन नौकरियों को संभाल सकता है जो लोग पहले करते थे.

b. आर्थिक असमानता: उचित कौशल के बिना लोगों को नौकरी पाने में कठिनाई हो सकती है.

c. उच्च लागत: एआई सिस्टम स्थापित करना महंगा है और इसके लिए बहुत अधिक प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है. छोटी कंपनियों को एआई की उच्च लागत से जूझना पड़ सकता है, जिससे अधिक चुनौतियां पैदा हो सकती हैं.

एआई को समस्या के रूप में देखने के बजाय, हम इसे अपने काम को बेहतर बनाने के लिए एक उपकरण के रूप में उपयोग कर सकते हैं. काम का भविष्य मनुष्यों और एआई के साथ मिलकर काम करने के बारे में होगा. एआई नियमित कार्यों को संभालेगा, और लोग उन कार्यों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं जिनमें रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच और लोगों के कौशल की आवश्यकता होती है.

a) मानव-एआई सहयोग: एआई दोहराए जाने वाले कार्यों को संभालता है, जबकि मनुष्य रचनात्मकता और समस्या-समाधान कौशल का उपयोग करते हैं.

b) नई नौकरियाँ: जैसे-जैसे एआई विकसित होगा, नई नौकरियाँ सामने आएंगी जो सहानुभूति और नैतिकता जैसे मानवीय कौशल पर ध्यान केंद्रित करेंगी.

c) अनुकूलन: श्रमिकों को नए कौशल सीखने और अपने काम करने के तरीके में बदलाव करने की आवश्यकता होगी.

d) सतत शिक्षा: निरंतर सीखने से लोगों को नई तकनीकों के साथ अद्यतन रहने में मदद मिलेगी.

e) भविष्य के लिए कौशल: डेटा, प्रोग्रामिंग और एआई के बारे में सीखना महत्वपूर्ण होगा.

f) बेहतर नौकरी के अवसर: नए कौशल सीखकर, श्रमिक नौकरी के बाजार में प्रतिस्पर्धी बने रह सकते हैं.

❖ **एआई एवं भविष्य की संभावनाएँ :-**ऑटोमेशन, बिग डाटा और एल्गोरिदम तब तक हमारे जीवन में नए आयाम खोजते रहेंगें, जब तक ये पुरानी चीज़ों को पूर्णत: प्रतिस्थापित नहीं कर देते. जिस प्रकार विद्युत शक्ति की खोज ने वैश्विक स्तर पर आमूल-चूल परिवर्तनों की नींव रखी थी, ए.आई. तकनीक भी भूख, गरीबी और विभिन्न बीमारियों के उन्मूलन की दिशा में सहायक हो सकती है.

यह जलवायु परिवर्तन से जुड़े शमन उपायों, शिक्षा के क्षेत्र में बेहतरी और नई वैज्ञानिक खोजों के लिये भी नई राहों के निर्माण में सक्षम है.

पूर्व में हमने देखा है कि किस तरह ए.आई. तकनीक फसलों की पैदावार बढ़ाने में, व्यावसायिक उत्पादकता बढ़ाने में, ऋण सुधारों में तथा कैंसर जैसे रोगों का तेज़ी व सटीकता के साथ पता लगाने में सहायक रही है.

ऐसा अनुमान है कि वर्ष 2030 तक यह तकनीक वैश्विक अर्थव्यवस्था को लगभग 14% बढ़ाने या लगभग 15 ट्रिलियन डॉलर से अधिक का योगदान देने में सक्षम होगी.

निष्कर्ष :- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस विगत कई दशकों से चर्चा के केंद्र में रहा एक ज्वलंत विषय है. वैज्ञानिक इसके अच्छे और बुरे परिणामों को लेकर समय-समय पर विचार-विमर्श करते रहते हैं. आज दुनिया तकनीक के माध्यम से तेज़ी से बदल रही है. विकास को गति देने और लोगों को बेहतर सुख-सुविधाएँ उपलब्ध कराने के लिये प्रत्येक क्षेत्र में अत्याधुनिक तकनीक का भरपूर उपयोग किया जा रहा है. बढ़ते औद्योगीकरण, शहरीकरण और भूमंडलीकरण ने जहाँ विकास की गति को तेज़ किया है, वहीं इसने कई नई समस्याओं को भी जन्म दिया है, जिनका समाधान करने के लिये नित नए समाधान सामने आते रहते हैं.

जहाँ वैज्ञानिक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के अनेकानेक लाभ गिनाते हैं, वहीं वे यह भी मानते हैं कि इसके आने से सबसे बड़ा नुकसान मनुष्यों को ही होगा, क्योंकि उनका काम मशीनों से लिया जाएगा, जो स्वयं ही निर्णय लेने लगेंगी और उन पर नियंत्रण नहीं किया गया, तो वे मानव सभ्यता के लिये हानिकारक हो सकते हैं. ऐसे में इनके इस्तेमाल से पहले लाभ और हानि दोनों को संतुलित करने के आवश्यकता होगी.

संदर्भ स्रोत:-

1) Article of CSU Global: How Does Artificial Intelligence Work? Dated 09/08/2021 https://csuglobal.edu/blog/how-does-AI-actually-work

2) Article of Patrick J Kiger dated 07/11/2023 https://science.howstuffworks.com/artificial-intelligence.htm

3) Article of Drishti IAS dated 26/05/2023 https://www.drishtiias.com/hindi/to-thepoints/paper3/artificial-intelligence-23

4) Article of Dr, Krishna Kumar Mishra, Prof, BHU, Varanasi, Dated June 2018

5) Essay on Artificial Intelligence Class 9 pdf download https://edurev.in/t/217525/Essay-on-Artificial-Intelligence

6) Article of Byjus https://byjus.com/ias-hindi/artificial-intelligence-in-hindi

7) Article on Artificial Intelligence from NICE https://www.nice.com/glossary/artificial-intelligence-used-in-customer-service

8) Article of Adviters https://adviters.com/ciberseguridad/artificial-intelligence-and-cybersecurity/

9) Article of Conduent https://insights.conduent.com/conduent-blog/revolutionizing-loan-servicing-and-collections-with-artificial-intelligence

10) Post from Amar Ujala dated 27/03/2024 Gaon Junction https://www.gaonjunction.com/gaon-post/drishtikon/rural-technology-why-are-artificial-intelligence-and-cloud-important-for-villages

11) Article of Motivitylabs https://motivitylabs.com/how-AI-and-big-data-analytics-are-transforming-banking/

12) Article of Linkedin https://www-linkedin-com.translate.goog/pulse/artificial-intelligence-its-role-transforming-job-market-uvesh-ahmad-4c1mc?

13) Article from Sanskriti IAS https://www.sanskritiias.com/hindi/current-affAIrs/future-of-artificial-intelligence

14) Article from Drishti the vision https://www.drishtiias.com/hindi/loksabha-rajyasabha-discussions/artificial-intelligence

पंकज रावत
वरिष्ठ प्रबन्धक/ संकाय प्रमुख
ज्ञानार्जन एवं विकास केंद्र, कोलकाता

Path Benders: The Mission, the Leader, and Altruism

"Service to others is the rent you pay for your room here on earth." – Muhammad Ali

In a world racing toward goals, true leaders pause to ask: *"For whom am I building this path?"* Leadership is not merely about targets or promotions; it is about carrying a mission that uplifts others and transforms society. Such leaders become **path benders**—they do not merely follow the road but reshape it to serve a larger purpose.

When leaders align their mission with the needs of their community, their journey becomes an act of service, not just ambition. In this alignment of mission, leadership, and altruism lies the heartbeat of true transformation, where leadership becomes less about personal glory and more about collective elevation.

Seemingly Simple Acts with Immense Societal Impact

"Act as if what you do makes a difference. It does." – William James

True leadership often begins with small, consistent actions that ripple out to transform communities:

- **The Tree Planter:** Jadav Payeng, the "Forest Man of India," turned a barren sandbar in Assam into a lush 1,360-acre forest by quietly planting trees over decades.
- **The Free Tap Repairer:** A retired plumber in Pune repairs leaking taps in homes and schools, refusing payment, conserving thousands of litres of water.
- **The Teacher Under the Bridge:** Rajesh Kumar Sharma in Delhi transformed space under a metro bridge into a classroom, offering free education to underprivileged children.
- **Walking Library:** In rural Kerala, a man cycles to distant villages with books, sparking dreams in children who otherwise have no access to stories.

These small acts, rooted in service, carry immense societal impact, reminding us that purposeful leadership is not about position but about action.

Leadership: Becoming a Path Bender

"The best way to find yourself is to lose yourself in the service of others." – Mahatma Gandhi

Leadership is often mistaken for authority, but true leaders are those who align their mission with the needs of society and act consistently to uplift others. They take what is within their reach and transform it into avenues for others to walk with dignity and hope.

Path benders like Payeng, the Pune plumber, and Sharma did not wait for resources or titles. Their quiet, consistent service—planting tree by tree, repairing tap by tap, educating child by child—became ripples of change.

They prove that a mission is not a statement on a wall; it is a living commitment reflected in daily choices. This commitment bends paths, not through force, but through the quiet power of purposeful action rooted in service.

Altruism: The Heart of Mission-Led Leadership

"Great leaders don't set out to be a leader, they set out to make a difference." – Lisa Haisha

At the heart of mission-led leadership lies altruism—a steady commitment to serve without seeking personal gain. Altruistic leaders see themselves as stewards of time and talent, using every action to heal, build, and inspire.

They understand that leadership is not about shining alone but lighting lamps in others' lives, creating a constellation of hope wherever they go.

These acts need not be grand. The small, sincere actions of altruistic leaders—repairing taps, planting trees, teaching children—become the heartbeat of

leadership, uplifting communities while preserving the planet.

Mission-Led Leadership in Banking

In the banking sector, mission-led leadership can transform entire communities. A Branch Manager in a rural area can go beyond deposits and loans, nurturing financial discipline that strengthens families across generations.

They can:

- Educate people on the power of savings and financial literacy
- Promote community living through symbiotic economies
- Liaise with local bodies to fund irrigation, sanitation, and healthcare initiatives
- Support artisans to revive crafts while creating livelihoods
- Foster community fairs and melas, building local economies

Opportunities to serve are everywhere. It takes only a conversation or a small initiative to start change. Once people feel supported, they rise to these causes with surprising enthusiasm.

For Regional and Zonal Heads, the canvas is even larger. By guiding branches to prioritise customer service and community well-being, they foster trust, leading to natural business growth without aggressive chasing. Great customer service rooted in altruism inevitably brings great business.

Altruistic leadership is not about waiting for the "right time" to serve but making every moment an opportunity to serve, transforming mission into a legacy that nurtures society long after we are gone.

A Call to Young Path Benders

"No act of kindness, no matter how small, is ever wasted."
– Aesop

To young and aspiring Branch Managers:

Your role is not just a position; it is an opportunity to transform lives. Each account opened, each loan sanctioned, and each conversation with customers can plant seeds of dignity and financial security in your community.

Start small if you must, but start today. Speak to customers about savings, encourage financial discipline, and liaise with local leaders to identify community projects. Empower your team to see service not as an extra task but as the heart of your mission.

Remember, true leadership lies not in how much power you wield but in how many lives you uplift through that power. Step forward with courage and compassion. Become a path bender whose mission-led leadership leaves a legacy felt for generations.

Thulsi S. Rao
Chief Manager
Cent Neo, Central Office

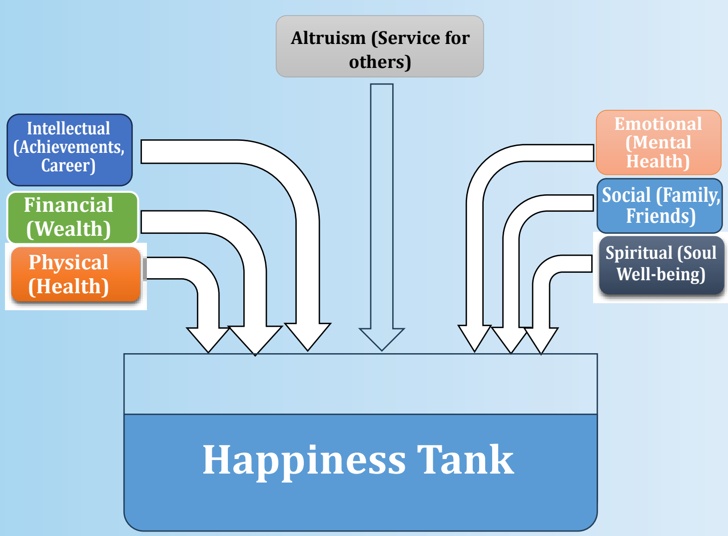

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा हमारे आंचलिक कार्यालय गुवाहाटी एवं क्षेत्रीय कार्यालय बैंगलोर का सफल निरीक्षण किया गया

बैंगलोर

गुवाहाटी

बिहार की लोक-आस्था का महापर्व: छठ पूजा

बिहार की सांस्कृतिक धरोहर और लोक-आस्था का प्रतीक 'छठ पूजा' एक ऐसा पर्व है जिसमें भक्त अपनी गहरी श्रद्धा और समर्पण के साथ सूर्य देव और छठी मैया की आराधना करते हैं. यह पर्व न केवल धार्मिक अनुष्ठानों का संगम है, बल्कि प्रकृति और जीवन के प्रति आदर भाव का भी संदेश देता है. इसे हिंदू धर्म में 'सूर्य उपासना का पर्व' भी माना जाता है. इसका आयोजन मुख्यत: बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश के पूर्वी क्षेत्रों, नेपाल के तराई वाले क्षेत्रों और भारत के अन्य हिस्सों में हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है. अब यह पर्व बिहार की आत्मिक संस्कृति का हिस्सा बन चुकी है. धीरे-धीरे यह पर्व बिहार की सीमा को लांघते हुए अन्य प्रदेशों सहित पूरे भारतवर्ष में अपनी जगह बना ली है. अब तो यह त्योहार प्रवासी भारतीयों द्वारा विभिन्न विदेशी सरजमीं- थाइलैंड, अमेरिका, मॉरीशस, इंग्लैण्ड, फिजी, कनाडा आदि जगहों पर बड़े ही धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है.

मिथिला पेंटिंग द्वारा छठ पर्व का विहंगम अवलोकन

छठ पूजा का महत्व न केवल धार्मिक है, बल्कि यह संस्कृति, आस्था, और परंपराओं से भी गहरे स्तर तक जुड़ा हुआ है. यह वर्ष में दो बार मनाया जाता है - एक चैत्र महीने में और दूसरा कार्तिक महीने में, परंतु कार्तिक माह के छठ का महत्व अधिक है. कार्तिक मास की अमावस्या को दीपावली मनाने के बाद मनाए जाने वाले इस चार दिवसीय व्रत की सबसे कठिन और महत्वपूर्ण रात्रि कार्तिक शुक्ल की षष्ठी की होती है. कार्तिक शुक्ल पक्ष के षष्ठी को यह व्रत मनाए जाने के कारण इसका नामकरण 'छठ व्रत' पड़ा है.

छठ पर्व चार दिवसीय पर्व है. इसकी शुरूआत कार्तिक शुक्ल चतुर्थी को तथा समाप्ति कार्तिक शुक्ल सप्तमी को होती है.

छठ पूजा की परंपरा का इतिहास प्राचीन काल से माना जाता है. यह पर्व वैदिक काल से संबंधित है और इसे सबसे प्राचीन और सबसे पवित्र पर्वों में गिना जाता है. कई विद्वानों के अनुसार इसका उल्लेख रामायण और महाभारत में भी मिलता है. ऐसी मान्यता है कि भगवान श्रीराम ने सीता जी के साथ अपने वनवास और रावण वध के बाद अयोध्या लौटने के उपरांत राज्याभिषेक के लिए सूर्य की उपासना की थी. इसी प्रकार महाभारत में भी इस पूजा का उल्लेख है, जहाँ कुंती पुत्र कर्ण भगवान सूर्य के परम भक्त माने जाते हैं और उन्होंने सूर्य उपासना के साथ यह व्रत किया था.

छठ पूजा का उद्गम इतिहास बहुत ही रोचक और प्राकृतिक तत्वों से जुड़ा हुआ है. प्राचीन काल में इसे शुद्धता, साधना और सूर्योपासना का पर्व माना गया था. यह पर्व सिर्फ प्राकृतिक तत्वों के प्रति आदरभाव नहीं है, बल्कि इसमें जीवित ब्रह्म का ध्यान भी किया जाता है. सूर्य को जीवनदाता और प्रकृति का नियंत्रक माना गया है और इस पूजा के माध्यम से सूर्य से जीवन, स्वास्थ्य, और समृद्धि की कामना की जाती है.

छठ पूजा एक ऐसा लोक पर्व है, जिसमें विशेष अनुष्ठान, साधना और नियमों का कठोरता से पालन किया जाता है. छठ पर्व में समाज के हर वर्ग के लोग एक साथ मिलकर इसका आयोजन करते हैं. इसे मनाने वाले लोग सौहार्द और सद्भावना का संदेश देते हैं. इसमें आस्था का

नहाय खाय का प्रसाद

इतना गहरा प्रभाव होता है कि व्रती 36 घंटे तक निर्जला उपवास रखते हैं. उन्हें विश्वास होता है कि इस कठिन साधना से भगवान सूर्य उनकी मनोकामनाएं पूरी करेंगे. यह एक ऐसा पर्व है जो धर्म और आस्था को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जोड़ता है.

छठ व्रत मुख्यत: चार चरणों में होती है:

1. **नहाय खाय:** छठ पूजा की शुरुआत 'नहाय खाय' से होती है, जिसमें व्रती स्नान कर शुद्ध होकर खाना बनाते हैं. इस दिन व्रती शुद्धता का खास ख्याल रखते हैं. वे भोजन में लौकी की सब्जी, चावल और चने की दाल का प्रसाद तैयार करते हैं, जो विशेष रूप से सूर्य देव को समर्पित होता है.

खरना का प्रसाद

2. **खरना:** छठ व्रत के दूसरे दिन खरना का आयोजन होता है. इस दिन व्रती पूरे दिन उपवास रखकर शाम को मीठी और दाल-चावल वाली नमकीन प्रसाद ग्रहण करते हैं. इस दिन के प्रसाद को बहुत पवित्र माना जाता है और इसे लेने के बाद व्रती 36 घंटे का निर्जला उपवास रखते हैं.

3. **संध्या अर्घ्य:** छठ पूजा के तीसरे दिन संध्या अर्घ्य का आयोजन होता है. इस दिन शाम के समय व्रती घाट पर जाकर सूर्यास्त के समय भगवान सूर्य को अर्घ्य अर्पित करते हैं. व्रती तालाब या नदी के किनारे खड़े होकर सूर्य को दूध और जल अर्पित करते हैं.

संध्या अर्घ्य

इसी के साथ वे सूर्य से संतान, स्वास्थ्य, और समृद्धि की कामना करते हैं. इस अवसर पर व्रती के साथ परिवारजन और आसपास के लोग भी शामिल होते हैं.

4. **उषा अर्घ्य:** चौथे और अंतिम दिन सूर्योदय के समय उषा अर्घ्य दिया जाता है. इस दिन सुबह-सुबह व्रती घाट पर जाकर उगते हुए सूर्य को अर्घ्य अर्पित करते हैं. इसके बाद व्रती अपना उपवास समाप्त करते हैं और परिवार के सभी सदस्यों के साथ प्रसाद ग्रहण करते हैं. इसे पारण कहते हैं. इस दिन लोगों में उत्साह और उल्लास का माहौल होता है. इसके साथ ही इस चार दिवसीय महापर्व का समापन हो जाता है.

उषा अर्घ्य

इसके अलावा छठ पूजा में विशेष प्रकार के प्रसाद भी बनाए जाते हैं जो कि लोक से जुड़ी संस्कृति का परिचायक है. इस पूजा में ठेकुआ, चावल के लड्डू, नारियल, केला, गन्ना, सिंघाड़े, और विभिन्न प्रकार के फल प्रमुख होते हैं. ये सभी प्रसाद प्राकृतिक उत्पाद होते हैं और इनका उपयोग विशुद्धता को दर्शाता है. पूजा के दौरान उपयोग में लाई जाने वाली सभी सामग्रियों को मिट्टी की चूल्हे पर बनाया जाता है और पवित्रता का खास ध्यान रखा जाता है.

घाट की ओर जाती छठवर्ती

छठ पूजा न केवल एक धार्मिक अनुष्ठान है, बल्कि यह लोगों की गहरी आस्था और श्रद्धा का प्रतीक भी है. बिहार के लोगों में छठ के प्रति अपार श्रद्धा और विश्वास है, जिसे वे पीढ़ियों से निभाते आ रहे हैं. यह पूजा संयम, धैर्य, और कठिन तपस्या का प्रतीक मानी जाती है. इस पूजा

को करने वाले लोग इसे अपने पूर्वजों से प्राप्त परंपरा के रूप में मानते हैं और इसमें परिवार और समाज का भी योगदान होता है.

छठ पूजा का महत्व सिर्फ धार्मिक ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक भी है. यह पर्व मनाने का तरीका हमें प्रकृति और पर्यावरण के प्रति अपने दायित्व का भी एहसास कराता है. इस पूजा में सूर्य की उपासना से ऊर्जा और स्वास्थ्य की कामना की जाती है, और यह पर्व हमें धैर्य, तपस्या और संयम की शिक्षा भी देता है.

छठ पूजा के माध्यम से लोग अपने जीवन में स्वच्छता, अनुशासन और परिश्रम का महत्व समझते हैं. इस पर्व में लोग साफ-सुथरे कपड़े पहनते हैं, घरों और पूजा स्थलों की सफाई करते हैं, जो स्वच्छता का संदेश देती है.

छठ पूजा में सूर्य की आराधना के माध्यम से सूर्य के प्रति धन्यवाद व्यक्त किया जाता है, जो जीवन का स्रोत और प्रकृति का मुख्य तत्व है. सूर्य की उपासना से स्वास्थ्य, संतान, और सुख की कामना की जाती है. विज्ञान की दृष्टि से देखें तो सूर्य से मिलने वाली ऊर्जा हमारे शरीर को स्वास्थ्य लाभ देती है.

इस प्रकार छठ पूजा एक ऐसा पर्व है जो न केवल धार्मिक आस्था से जुड़ा हुआ है, बल्कि यह लोगों की जीवनशैली, सामाजिक एकता, और प्राकृतिक तत्वों के प्रति आदरभाव को भी दर्शाता है. यह पर्व सादगी, अनुशासन, और पवित्रता का प्रतीक है. इस पर्व को मनाने वाले लोग विशेष आस्था और श्रद्धापूर्वक इसे मनाते हैं और यह बिहार की सांस्कृतिक धरोहर का एक प्रमुख अंग है.

निष्कर्षत: छठ पूजा का महत्व केवल एक त्योहार के रूप में ही नहीं है, बल्कि यह हमें हमारे जीवन और समाज में पवित्रता, संयम, और आस्था की महत्ता सिखाता है. आज छठ पूजा भारत के साथ-साथ विदेशों में भी लोकप्रिय हो रही है, जो बिहार की संस्कृति और परंपराओं के प्रचार का संकेत है. साथ ही बिहार के वासियों के लिए आत्म गौरव और आत्मसम्मान का प्रतीक भी बन गया है.

एल. बी. झा
उप क्षेत्रीय प्रमुख,
उत्तर मुंबई क्षेत्रीय कार्यालय

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने 24 जून, 2025 को टाटा पैसेंजर इलेक्ट्रिक मोबिलिटी लिमिटेड के साथ अपने डीलर सप्लाई चेन फाइनेंस के वित्तपोषण के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए. यह समझौता ज्ञापन माननीय कार्यपालक निदेशक श्री महेंद्र दोहरे की गरिमामयी उपस्थिति में हस्ताक्षरित हुआ.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया को पीसीआई डीएसएस संस्करण 4.0.1 के लिए प्रमाणित किया गया है. यह उपलब्धि ग्राहक डेटा की सुरक्षा और डिजिटल भुगतानों के उच्चतम सुरक्षा मानकों को बनाए रखने के प्रति हमारी अटूट प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है.

RIGHT TO INFORMATION (RTI) ACT: A PILLAR OF TRANSPARENCY IN THE BANKING INDUSTRY

The Right to Information (RTI) Act, 2005, marks a significant step toward promoting transparency, accountability, and participative governance in India. The banking industry, being the backbone of the economy, plays a crucial role in fostering trust among its stakeholders. The RTI Act ensures that citizens can access pertinent information about public authorities, including public sector banks, thus reinforcing transparency and accountability.

Significance of RTI in the Banking Industry

Banks are not merely financial institutions; they are custodians of public trust and money. Public sector banks, as public authorities under the RTI Act, are mandated to disclose information unless explicitly exempted. The RTI Act empowers stakeholders, including customers, employees, and the general public, to seek information that can:

- Enhance Customer Confidence: By providing access to information on interest rates, loan policies, and service charges, banks can help customers make informed decisions.
- Ensure Accountability: Public scrutiny via RTI ensures that banking practices align with ethical and legal standards.
- Curb Corruption: Transparency in operations, such as loan approvals and non-performing assets (NPAs), deters malpractices and ensures accountability.

Exemptions in Providing Information under RTI

While the RTI Act promotes transparency, it also acknowledges the need to safeguard sensitive information. Certain exemptions, as per Section 8 of the Act, are particularly relevant to the banking sector because they allow them to protect sensitive information like customer details, trade secrets and internal working which are crucial for maintaining trust and ensuring the smooth functioning of the banking sector:

1. National Security and Sovereignty (Section 8(1)(a)): Information that could impact the security or economic interests of the state is exempted from disclosure. For instance, sharing details about foreign exchange reserves could influence economic stability.
2. Commercial Confidence (Section 8(1)(d)): Information related to trade secrets, intellectual property, or commercial confidence is exempted if disclosure could harm the competitive position of a third party. For example, details of strategic business decisions are often protected.
3. Fiduciary Relationship (Section 8(1)(e)): Information held by the bank in a fiduciary capacity, such as customer account details, cannot be disclosed unless overriding public interest demands it. Banks have a duty to act in the best interest of their clients. Disclosing this information could breach that trust and harm the banking relationship.
4. Endanger the life or personal safety (section 8(1)(g)): Information, the disclosure of which would endanger the life or physical safety of any person or identify the source of information or assistance given in confidence for law enforcement or security purposes.
5. Pending Investigations (Section 8(1)(h)): Information that could impede ongoing investigations or prosecutions is exempted. For instance, details of fraud investigations may not be disclosed until the conclusion of the inquiry.
6. Privacy of Individuals (Section 8(1)(j)): Personal information unrelated to public activity or interest is exempted. For instance, the account balance of an individual cannot be disclosed without their consent.

Importance of Transparency in the Banking Industry

Transparency is indispensable in the banking sector for multiple reasons:

1. Building Trust: Transparent banking operations reassure customers that their money is secure and institutions are acting in their best interest.
2. Encouraging Accountability: Public scrutiny of bank practices, such as loan disbursements and recovery efforts, ensures adherence to ethical and legal standards.
3. Reducing NPAs: Access to information about defaulters and recovery efforts discourages wilful defaults and promotes responsible borrowing.
4. Promoting Financial Literacy: Transparency about products and policies empowers customers to make informed financial decisions.
5. Strengthening Governance: Transparency fosters better regulatory compliance and reduces corruption.

Case Studies and Judgements on RTI in Banking

The judiciary has played a pivotal role in shaping the application of the RTI Act in the banking sector. Some landmark judgments highlight its importance:

1. Reserve Bank of India vs. Jayantilal N. Mistry (2015)

The Supreme Court ruled that the Reserve Bank of India (RBI) cannot deny information under the guise of fiduciary relationship. The court emphasized that the RBI's role is to regulate the banking sector in the public's interest, making it accountable for disclosing information such as inspection reports of banks. This judgment reinforced the principle that public interest overrides fiduciary claims when transparency is at stake.

2. Rakesh Kumar Gupta vs. Public Information Officer, SBI (2021)

In this case, the appellant sought information about a loan defaulter. The Central Information Commission (CIC) upheld the bank's refusal to disclose the information under Section 8(1)(d) and 8(1)(j), citing commercial confidence and individual privacy. This case highlighted the balance between transparency and protecting sensitive information.

3. Girish Ramchandra Deshpande vs. Central Information Commission (2012)

This judgment clarified that information concerning personal matters, such as asset declarations, disclosure of salary, performance and service records of bank employees, is exempt unless larger public interest justifies disclosure. This protects employee privacy while ensuring accountability where needed.

4. Bhaskaran vs. PIO, Canara Bank (2020)

In this case, the CIC directed Canara Bank to disclose details of loans sanctioned to a particular entity, emphasizing that the public has a right to know about significant loans and defaults impacting public money. This judgment reaffirmed the importance of transparency in loan-related disclosures.

Balancing Transparency and Confidentiality

The banking sector must strike a delicate balance between transparency and confidentiality. While the RTI Act mandates disclosure of information, banks must ensure that exemptions are judiciously applied to protect sensitive data. Training and awareness among bank employees about RTI provisions can help achieve this balance.

Conclusion

The RTI Act is a powerful tool for promoting transparency and accountability in the banking industry. By empowering citizens to seek information, it reinforces public trust and ensures that banks operate responsibly. However, the exemptions under the Act underscore the need to protect sensitive information critical to national security, commercial interests, and individual privacy.

The judiciary's proactive role in interpreting RTI provisions has further strengthened transparency norms, making the banking industry more accountable. As custodians of public trust, banks must embrace transparency as a core value, ensuring that their practices align with the principles of good governance and public interest.

Prakasha Walia
Manager- Law
Customer Care Dept.

बादल भी

क्या रागदारी जानते हैं ?
टप टप बूंदों के
नाद में कोई गीत सुनाई पड़ते हैं.

कभी नाजुक थाप
और कभी गड़गड़ाहट

कभी हल्की गुनगुनाहट
मुलायम स्पर्श सी.

कभी मदहोश
अपने धुन में मगन होती.

सच !

बादल कितना कुछ जानते हैं
मुझे भी
तुझे भी . . . . . !!

बारिश

बारिशों मे भीगना बहुत सुकून देता है
हल्की बारिश मुझे बेहद पसंद है
धुआंधार बारिश का बरसना
और भीगना
अपने आप में एक जुल्म सा लगता है .

वो बारिशें
जो हल्की हल्की बरसती हैं
पेड़ पौधे सड़कों को माने सहलाती है .

हलके से चूमती हैं
स्नेह बरसाती हैं
दिल मे भीतर तक उतरती हैं
जिंदगी से दोबारा प्यार
हो जाता है . . !!!

बारिश तुम बरसना

खूब बरसना
वहां बरसना जहां तुम्हारी कमी
खलती है,
वहां भी जहां पेड़ पौधे
कम नजर आते हैं .

तुम बरसोगी
तो हरियाली छा जायेगी
अंकुर फूट कर खिलने लगेंगे
बादल और जमीं के बीच
प्रीत का नया अवतरण
हम देख पाएंगे .

तुम बरसोगी
बच्चे और जवान नाच उठेंगे
बूढ़ों के दिलों में यादें
रोशन हो जाएंगी.

तुम्हारे कारण
शीत काल में
बहारें लौट आएंगी
फसल बढ़ेगी
किसान के घर
चार पैसे बचेंगे
बेटियां ब्याही जाएंगी .

शहरों में फंसे
दलदल में धंसे
युवाओं को शायद
घर की याद आए
और वे लौट जाए .

कभी तो
कहीं तो
अच्छे दिन की शुरुआत हो . . . . !!!!!

पिछले हफ्ते

बारिश ने अपना रौद्र रूप दिखाया
आदमी नाम की नस्ल पर
अपना गुस्सा जाहिर किया .

लेकिन जल में
प्रेम छिपा है,
कुछ ही देर
रह पाता है नाराज .

आजकल
बरसता है सौम्यता लिए
नजाकत के साथ .

कभी शाम
फुहारे लेकर बरसता
कभी सुबह के पहली
प्रहर में धरती भिगोता .

सुबह ओस की बूंदे
बताती हैं
बादल और सृष्टि की
प्रणय गाथा.

प्रशांत डोले
मुख्य प्रबंधक
केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई

हमारे विभिन्न अंचलों में आयोजित योग दिवस कार्यक्रम की झलकियां

अहमदाबाद

कोलकाता

गुवाहाटी

चण्डीगढ़

चेन्नै

दिल्ली

पटना

पुणे

मुंबई

रायपुर

लखनऊ

हैदराबाद

भोपाल

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए ''केंद्रित'' "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

Cent e-Trade

दुनिया में कहीं भी धन भेजें
SEND MONEY WORLDWIDE

हमारे साथ अपना जीवन आसान बनाएं
Make your life easier through us

At Central Bank of India, we make Global Money transfer simple.

Whether you're managing business transactions or meeting

personal commitments, our fast and secure Forex remittance

service ensures that Global Money reaches your home quickly.

- स्थानिय सुविधा के साथ वैश्विक अंतरण
- Global transfers with local convenience

- कभी भी कहीं से भी त्वरित व आसान लेनदेन कीजिए
- Experience fast and easy transactions on the go

आपकी सुविधा के लिए ग्राहक पोर्टल का आनंद लें

Enjoy an exclusive customer portal designed to enhance your convenience and delight

Follow us on: www.centralbankofindia.co.in | Toll free no.: 1800 3030